बाबू देवकीनन्दन खत्री उपन्यास माला— 1
काजर की कोठरी

हिन्दी के सुप्रसिद्ध एव बहुचर्चित उपन्यास

बाबू देवकीनन्दन खत्री विरचित

काजर की कोठरी

शारदा प्रकाशन नई दिल्ली-110002

सस्करण 1989

प्रथम	1983
पुनर्मुद्रण	1985
पुनर्मुद्रण	1987
पुनर्मुद्रण	1989

मूल्य
25 00

मुद्रक
नव प्रभात प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली- 110032

प्रकाशक
विजयदेव झारी
शारदा प्रकाशन
16/एफ-3, असारी रोड,
दरियागज, नई दिल्ली- 110002

Kajar kı kotharı (Novel) by
Devkı Nandan Khatrı

सन्ध्या होने में अभी दो घण्टे की देर है मगर सूर्य भगवान के दर्शन नही हो रहे, क्योंकि काली काली घटाओं ने आसमान को चारो तरफ से घेर लिया है। जिधर निगाह दौडाइये मजेदार समा नजर आता है और इसका तो विश्वास भी नही होता कि सन्ध्या होनेमे अभी कुछ कसर है।

ऐसे समय मे हम अपने पाठकों को उस सडक पर ले चलते है जो दरभंगे से सीधी बाजितपुर की तरफ गई है।

दरभंगे से लगभग दो कोस के आगे बढकर एक बैलगाडी पर चार नौजवान और हसीन तथा कमसिन रंडिया धानी, काफूर पेयाजी और फालसई साडिया पहिरे मुख्तसर गहनो से अपने को सजाए आपुस मे ठठोल पन करती बाजितपुर की तरफ जा रही हैं। इस गाडी के साथ ही साथ पीछे-पीछे एक दूसरी गाडी भी जा रही है जो उन रंडियो के सफरदाओ के लिए थी। सफरदा गिनती मे दस थे मगर गाडी में पाच से ज्यादे के बैठने की जगह न थी इसलिए पाच सफरदा गाडी के साथ ही साथ पैदल जा रहे थे। कोइ तम्बाकू पी रहा था, कोई गांजा मल रहा था, कोई इस बात की शेखी बघार रहा था, कि "फलाने मुजरे मे हमने वह बजाया कि बडे बडे सफरदाओं को मिर्गी आ गई!" इत्यादि। कभी-कभी पैदल चलन वाले सफरदा गाडी पर चढ जाते और गाडी वाले नीचे उतर आते, इसी तरह अदल बदल के साथ सफर तै कर रहे थे। मालूम होता है कि थोडी ही दूर पर किसी जिमीदार के यहा महफिल मे इन लोगो का जाना है, क्योकि सन्नाटे मैदान मे सफर करते समय सन्ध्या हो जाने से इन्हे कुछ भी भय नही है और न इस बात का डर है कि रात हो जाने से चोर-चुहाड अथवा डाकुओं से कही मुठभेड न हो जाए।

रेल की किराची गाडी चर्खा तो होती ही है, जब तक पदल चलन

वाला सो कदम जाए तब तक वह बत्तीस कदम से ज्यादे न जाएगी। बर्सात का मौसिम मजेदार बदली छायी हुई, सड़क के दोनों तरफ दूर-दूर तक हरे-हरे धान के खेत दिखाई दे रहे हैं पेड़ों पर से पपीहे की आवाज आ रही है, ऐसे समय में एक नहीं बल्कि चार चार नौजवान, हसीन और मदमाती रण्डियों का शान्त रहना असम्भव है, इसी से इस समय इन सभों का चौ-पा करती हुई जाने वाली गाड़ी पर बैठे रहना बुरा मालूम हुआ और वे सब उतर कर पैदल चलने लगीं और बात-की-बात में गाड़ी से कुछ दूर आगे बढ़ गई। गाड़ी चाहे छूट जाय मगर सफरदा कब उनका पीछा छोडने लगे थे? पैदल वाले सफरदा उनके साथ हुए और हंसते-बोलते जाने लगे।

थोड़ी ही दूर जाने के बाद इन्होंने देखा कि सामने एक सवार सरपट घोड़ा फेंके इसी तरफ आ रहा है। जब वह थोड़ी दूर रह गया तो इन रण्डियों को देख कर उसने अपने घोड़े की चाल कम कर दी और जब उन चारों छबीलियों के पास पहुंचा तो घोड़ा रोक कर खड़ा हो गया। मालूम होता है कि ये चारों रण्डियां उस आदमी को बखूबी जानती और पहिचानती थीं क्योंकि उसे देखते ही वे चारों हंस पड़ीं और छबीली जो सबसे कमसिन और हसीन थी ढिठाई के साथ उसके घोड़े की बाग पकड़ कर खड़ी हो गई और बोली 'वाह वाह! तुम भागे कहां जा रहे हो? बिना तुम्हारे मोती ।"

'मोती' का नाम लिया ही था कि सवार ने हाथ के इशारे से उसे रोका और कहा, 'बादी! तुम्हें हम बेवकूफ कहें या भोली?" इसके बाद उस सवार ने सफरदाओं पर निगाह डाली और हुकूमत के तौर पर कहा, तुम लोग आगे बढ़ो।'

अब तो पाठक लोग समझ ही गए होंगे कि उस छबीली रण्डी का नाम बादी था जिसने ढिठाई के साथ सवार के घोड़े की लगाम थाम ली थी और चारों रंडियों में हसीन और खूबसूरत थी। इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि बाकी तीन रंडियों का नाम भी इसी समय बता दिया जाए, हां उस सवार की सूरत शक्ल का हाल लिख देना बहुत जरूरी है।

सवार की अवस्था लगभग चालीस वर्ष की होगी। रंग काला, हाथ-पैर मजबूत और कसरती जान पड़ते थे। बाल स्याह छोटे छोटे मगर

घूंघरवाले थे, सर बहुत बड़ा और बनिस्बत आगे के पीछे की तरफ से बहुत चौड़ा था। भौंवें घनी और दोनों मिली हुई, आंखें छोटी छोटी और भीतर की तरफ कुछ घुसी हुई थीं। होंठ मोटे और दांतों की पंक्ति बराबर न थी, मूंछ के बाल घने और ऊपर की तरफ चढ़े हुए थे। आंखों में ऐसी बुरी चमक थी जिसे देखने से डर मालूम होता था और बुद्धिमान देखने वाला समझ सकता था कि यह आदमी बड़ा ही बदमाश और खोटा है, मगर साथ ही इसके दिलावर और खूंखार भी है।

जब सफरदा आगे की तरफ बढ़ गये तो सवार ने बांदी से हंस के कहा तुम्हारी होशियारी जैसी इस समय देखी गई अगर ऐसी ही बनी रही तो सब काम चौपट करोगी।"

बांदी (शर्मा कर) नहीं, नहीं मैं कोई ऐसा शब्द मुंह से न निकालती जिससे सफरदा लोग कुछ समझ जाते।

सवार वाह! 'मोती' का शब्द मुंह से निकल ही चुका था!

बांदी ठीक है मगर।

सवार खैर जो हुआ सो हुआ, अब बहुत सम्हाल के काम करना। अब वह जगह बहुत दूर नहीं है जहां तुम्हें जाना है। (सड़क के बाईं तरफ उंगली का इशारा करके) देखो वह बड़ा मकान दिखाई दे रहा है।

बांदी ठीक है मगर यह कहो कि तुम आगे कहां जा रहे हो?

सवार मुझे अभी बहुत काम करना है, मौके पर तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा, हां एक बात कान में सुन लो।

सवार ने झुक कर बांदी के कान में कुछ कहा साथ ही इसके दिल खुश करने वाली एक आवाज भी आई। बांदी ने नम चपत सवार के गाल पर जमाई सवार ने फुर्ती से घोड़े को किनारे कर लिया तथा फिर दौड़ाता हुआ जिधर जा रहा था उधर ही को चला गया।

अब हम अपने पाठकों को एक गांव में ले चलते हैं। यद्यपि यहां की आबादी बहुत घनी और लम्बी चौड़ी नहीं है तथापि जितने आदमी इस मौजे में रहते हैं सब प्रसन्न हैं, विशेष करके आज तो सभी खुश मालूम पड़ते हैं क्योंकि इस मौजे के जिमींदार कल्याणसिंह के लड़के हरनन्दनसिंह की शादी

होने वाली है। जिमींदार के दरवाजे पर बाजे बज रहे हैं और महफिल का सामान हो रहा है। जिमींदार का मकान बहुत बड़ा और पक्का है, जनाना खण्ड अलग और मर्दाना मकान, जिसमें सुन्दर-सुन्दर कई कमरे और कोठडियाँ हैं, अलग है। मर्दाने मकान के आगे मैदान है जिसमें शामियाना खड़ा है और महफिल का सामान दुरुस्त हो रहा है। मकान के दाहिनी तरफ एक लम्बी लाइन खपरैल की है, जिसमें कई दालान और कोठडियाँ हैं। एक दालान और तीन कोठडियों में भण्डार (खाने की चीजों का सामान) है और एक दालान तथा तीन कोठडियों में इन रंडियों का डेरा पडा हुआ है जो इस महफिल में नाचने के लिए आई हैं और नाचने का समय निकट आ जाने के कारण अपने को हर तरह से सजधज के दुरुस्त कर रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये रंडियाँ बहुत ही हसीन और खूबसूरत हैं और जिस समय अपना शृंगार करके धीरे धीरे चलकर महफिल में आ खड़ी होंगी उस समय नखरे के साथ अधखुली आँखों से जिधर देखेंगी उधर ही चौपट करेंगी, पर फिर भी यह सब-कुछ चाहे जो हो मगर इनका जादू उन्हीं लोगों पर चलेगा जो दिल के कच्चे और भोले-भाले हैं। जो लोग दिल के मजबूत और इनकी करतूतों तथा नकली मुहब्बत को जानने वाले और बनावटी नखरों का हाल अच्छी तरह जानते है, उन बुद्धिमानों के दिल पर इनका असर होने वाला नहीं है क्योंकि ऐसे आदमी जितनी ज्यादे खूबसूरत रण्डी को देखेंगे उसे उतनी ही बडी चुडैल समझ के हर तरह से बच रहने का भी उद्योग करेंगे।

रात लगभग पहर भर के जा चुकी है। महफिल बरातियों और तमाशबीनों से खचाखच भरी हुई है। जिमींदार का लड़का हरनन्दनसिंह जिसकी शादी होने वाली है, कारचोबी काम की मखमली गद्दी के ऊपर गावतकिये के सहारे बैठा हुआ है। उसके दोनों बगल जिमींदार लोग जो न्योते में आये हैं कलींदार पगड़ी जमाये बैठे उस रण्डी से आँखें मिलाने का उद्योग कर रहे हैं जो महफिल में नाच रही है और जिसका ध्यान बनिस्बत गाने के भाव बताने पर ज्यादे है।

इस समय महफिल में यद्यपि भीड़ भाड़ बहुत है मगर जिमींदार साहब का पता नहीं है जिनके लड़के की शादी होने वाली है। दो घण्टे तक तो

लोग चुपचाप बैठे गाना सुनते रहे मगर इसके बाद जिमींदार कल्याणसिंह के उपस्थित न होने का कारण जानने के लिए लोगों में कानाफूसी होने लगी और लोग उन्हे बुलाने की नीयत से एका-एकी मकान की तरफ जाने लगे। आधी रात जाते जाते महफिल में खलबली पड गई। कल्याणसिंह के आन का कारण जब लोगो को मालूम हुआ तो सभी घबड़ा गये और एका-एकी करके उस मकान की तरफ जाने लगे जिसमे कल्याणसिंह रहते थे।

अब हम कल्याणसिंह का हाल बयान करते है और यह भी लिखते है कि वह अपने मेहमानो से अलग रहने पर क्या मजबूर हुए।

सन्ध्या के समय जिमींदार कल्याणसिंह भंडार का इन्तजाम देखते हुए उस दालान में पहुंचे जिसमे रंडियो का डेरा था। वे यद्यपि बिगडैल ऐयाश तो न थे मगर जरा मनचले और हसमुख आदमी जरूर थे इसलिए इन रंडियो से भी हसी दिल्लगी की दो बातें करने लगे। इसी बीच मे नाजुक अदा बादी ने उनके पास आकर अपने हाथ का लगाया हुआ दो बीडा पान का खाने के लिए दिया। यह वही बादी रंडी थी जिसका हाल हम पहिले लिख आए हैं। कल्याणसिंह पान का बीडा हाथ में लिए हुए लौटे तो उस जगह पहुंचे जहा महफिल का सामान हो रहा था और उनके नौकर-चाकर दिलाजान से मेहनत कर रहे थे। थोडी देर तक वहा भी खडे रहे। यकायक उनके सर मे दर्द होने लगा। उन्होंने समझा कि मेहनत की हरारत से ऐसा हो रहा है और यह भी सोचा कि महफिल में रातभर जागना पडेगा इसलिए यदि इसी समय दो घण्टे सोकर हरारत मिटा ले तो अच्छा होगा। यह विचार करते ही कल्याणसिंह अपने कमरे मे चल गए जो मर्दाने मकान में दुमंजले पर था। चिराग जल चुका था, कमरे के अन्दर एक शमादान जल रहा था। कल्याणसिंह दर्वाजा बन्द करके एक खिडकी के सामने चारपाई पर जा लेटे जिसमे से ठंडी ठंडी बरसाती हवा आ रही थी और महफिल का शामियाना तथा उसमें काम-काज करते हुए आदमी दिखाई दे रहे थे।

यह कमरा बहुत बडा न था तो भी तीस-चालीस आदमियों के बैठने लायक था। दीवारें रंगीन और उन पर फूल-बूटे का काम होशियार मुसौवर के हाथ का किया हुआ था। कई दीवारगीरें भी लगी हुई थीं।

छत म एक झाड के चारो तरफ बद कदील लटक रही थी जमीन पर साफ सुफेद फश बिछा हुआ था, एक तरफ सगमरमर की चौकी पर लिखन पढने का सामान भी मौजूद था। बाहर वाली तरफ छोटी छोटी तीन खिडकिया थी जिनमे स मकान क सामने वाला रमना अच्छी तरह दिखाई देता था। उन्हीं खिडकियो मे से एक खिडकी के आगे चारपाई बिछी हुई थी जिस पर कल्याणसिंह सो रहे और थोडी ही देर में उन्हें नींद आ गई।

कल्याणसिंह तीन घण्टे तक बराबर सोते रहे इसके बाद खडखडाहट की आवाज आने के कारण उनकी नींद खुल गई। देखा कि कमरे के एक कोने मे छत से कुछ ककडिया गिर रही है। कल्याणसिंह ने सोचा कि शायद चूहा ने छत मे बिल किया होगा और इसी सबब से ककडिया गिर रही है पर तु कोई चिन्ता नही कल परसो म इसकी मरम्मत करा दी जावगी उस समय घण्टे भर और आराम कर लेना चाहिए यह सोच मुह पर चादर का पल्ला रख सो रहे और उन्हे नींद फिर आ गई।

दो घण्टे बाद कमरे क उसी कोने म स जहा स ककडिया गिर रही थी धमाके की आवाज आई जिससे कल्याणसिंह की आख खुल गई। वह घबडा कर उठ बैठे और चारो तरफ देखने लगे पर तु रोशनी गुल हो जाने के सबब इस समय कमरे म अधेरा हो रहा था। उन्हें इस बात का ताज्जुब हुआ कि शमादान किसने गुल कर दिया! वह घबडा कर उठ खडे हुए और किसी तरह दरवाजे तक पहुच कर दरवाजा खोल कमरे के बाहर आये। उस समय एक पहरेदार सिपाही के सिवाय वहा और कोई भी न था, सब महफिल म चले गए थ और नौकर चाकर भी काम-काज म लग हुए थे। कल्याणसिंह ने सिपाही से लालटेन लाने के लिए कहा। सिपाही तुरन्त लालटेन बाल कर ले आया और कल्याणसिंह के साथ कमरे क अन्दर गया। कल्याणसिंह ने अबकी दफे उस कोने म एक बडा सा पिटारा पडा हुआ देखा जहा स पहिली दफे नींद खुलने की अवस्था म ककडिया गिरने की आवाज आई थी। कल्याणसिंह को बडा ही ताज्जुब हुआ और वह डरते डरते उस पिटारे के पास गए। पिटारे के चारो तरफ रस्सी लपेटी हुई थी और एक बहुत लम्बा रस्सा भी उसी जगह पडा हुआ था जिसका एक

सिरा पिटारे के साथ बधा हुआ था। जिमींदार ने छत की तरफ देखा ता टूटी हुई दिखाई दी जिससे यह विश्वास हो गया कि यह पिटारा रस्सी के सहारे इसी राह से लटकाया गया है और ताज्जुब नही कि कोई आदमी भी इसी राह से कमरे मे आया हो क्योकि शमादान का बुझना बेसबब न था। कल्याणसिंह ताज्जुब भरी निगाहो से उस पिटारे को देर तक देखते रहे, इसके बाद सिपाही के हाथ से लालटैन ले ली और उससे पिटारा खोलने के लिए कहा। सिपाही ने जो ताकतवर होने के साथ ही साथ दिलेर भी था झटपट पिटारा खोला और ढक्कना अलग करके देखा तो उसमे बहुत-से कपडे भरे हुए दिखाई पडे। मगर उन कपडो पर हाथ रखने के साथ ही वह चौंक पडा और हट कर अलग खडा हो गया। जब कल्याण सिंह ने पूछा कि 'क्यो क्या हुआ ?' तब उसने दोनो हाथ लालटैन के सामने किये और दिखाया कि उसके दोनो हाथ खून से तर हैं।

कल्याण० हैं ! यह तो खून है ! !

सिपाही जी हा, उस पिटारे में जो कपडे है व खून से तर हैं और कोई काँटेदार चीज भी उसमे मालूम पडती है जो कि मेरे हाथ मे सूई की तरह चुभी थी।

कल्याण० ओफ, नि सन्देह कोई भयानक बात है ! अच्छा तुम इस पिटारे को खैच कर बाहर ले चलो।

सिपाही बहुत खूब।

सिपाही ने जब उस पिटारे को उठाना चाहा तो बहुत हलका पाया और सहज ही में वह उस पिटारे को कमरे के बाहर ले आया। उस समय तक और भी एक सिपाही तथा दो-तीन नौकर वहा आ पहुचे थे।

कल्याणसिंह की आज्ञानुसार रोशनी ज्यादा की गई और तब उस पिटारे की जाच होने लगी। नि सन्देह उस पिटारे के अन्दर कपडे थे और उन पर सलमे सितारे का काम किया हुआ था।

सिपाही (सलमे सितारे के काम की तरफ इशारा करके) यही मेरे हाथ में गडा था और काटे की तरह मालूम हुआ था ! (एक कपडा उठा कर) आफ ! यह तो ओढनी है ! !

दूसरा और बिल्कुल नई !

तीसरा ब्याह की ओढनी है।

सिपाही मगर सरकार, इसे मैं पहिचानता हूँ और जरूर पहिचानता हूँ।

कल्याण० (लम्बी सास लेकर) ठीक है, मैं भी इसे पहिचानता हूँ, अच्छा और निकालो।

सिपाही (और एक कपडा निकाल के) लीजिए यह लहगा भी है। बेशक वही है।।

कल्याण० आफ, यह क्या गजब है! यह कपडे मेरे घर क्या आ गए और ये खून से तर क्या है? निसन्देह ये वही कपडे हैं जो मैंने अपनी पतोहू के वास्ते बनवाये थे और समधियाने भेजे थे। तो क्या खून हुआ? क्या लडकी मारी गई? क्या यह मगल का दिन अमगल के साथ बदल गया?

इतना कहकर कल्याणसिंह जमीन पर बैठ गया। नौकरो ने जल्दी से कुर्सी लाकर रख दी और कल्याणसिंह को उस पर बैठाया। धीरे धीरे बहुत से आदमी वहा आ जुटे और बात की-बात मे यह खबर अन्दर-बाहर सब तरफ अच्छी तरह फैल गई। इस खबर ने महफिल मे भी हलचल फैला दी और महफिल मे बैठे हुए मेहमानो को कल्याणसिंह को देखने की उत्कण्ठा पैदा हुई। आखिर धीरे धीरे बहुत से नौकर सिपाही और मेहमान वहा जुट गए और उस भयानक दृश्य को आश्चर्य के साथ देखने लगे।

यो तो कल्याणसिंह के बहुत-से मेली मुलाकाती थे मगर सूरजसिंह नामी एक जिमीदार उनका सच्चा और दिली दोस्त था जिसकी यहा के राजा धर्मसिंह के वहा भी बडी इज्जत और कदर थी। सूरजसिंह का एक नौजवान लडका भी था जिसका नाम रामसिंह था और जिसे राजा धर्मसिंह ने बारह मौजा का तहसीलदार बना दिया था। उन दिनो तहसीलदारो को बहुत बडा अख्तियार रहता था यहा तक कि सैकडो मुकद्दमे दीवानी और फौजदारी के खुद तहसीलदार ही फैसला करके उसकी रिपोर्ट राजा के पास भेज दिया करते थे। रामसिंह को राजा धर्मसिंह बहुत मानते थे, अस्तु कुछ तो इस सबब से मगर ज्यादे अपनी बुद्धिमानी के सबब उसने अपनी इज्जत और धाक बहुत बढा रक्खी थी। जिस तरह कल्याणसिंह

और सूरजसिंह मे दोस्ती थी उसी तरह रामसिंह और हरनन्दन मे (जिसकी शादी होने वाली थी) सच्ची मित्रता थी और आज की महफिल में वे दोनो ही बाप-बेटा मौजूद भी थे ।

रामसिंह और हरनन्दनसिंह दोनों मित्र बड़े ही होशियार, बुद्धिमान, पडित और वीर पुरुष थे और उन दोनों का स्वभाव भी ऐसा अच्छा था कि जो कोई एक दफे उनसे मिलता और बातें करता वही उनका प्रेमी हो जाता। इसके अतिरिक्त वे दोनो मित्र खूबसूरत भी थे और उनका सुडौल तथा कसरती बदन देखने ही योग्य था ।

जब कल्याणसिंह की घबराहट का हाल लोगो को मालूम हुआ और महफिल मे खलबली पड गई तो सूरजसिंह और हरनन्दन भी कल्याणसिंह के पास जा पहुचे जो दु खित हृदय से उस पिटारे के पास बैठे हुए थे जिसमे खून से भरे हुए शादी वाले जनाना कपडे निकले थे। थोडी ही देर मे वहा बहुत से आदमियो की भीड हो गई जिन्ह सूरजसिंह ने बडी बुद्धिमानी से हटा दिया और एकान्त हो जाने पर कल्याणसिंह से सब हाल पूछा । कल्याणसिंह ने जो देखा था या जो कुछ हो चुका था बयान किया और इसके बाद अपने कमरे मे ले जाकर वह स्थान भी दिखाया जहा पेटारा पाया गया था और साथ ही इसके अपने दिल का शक भी बयान किया ।

हरनन्दन को जब हाल मालूम हो गया तो वह चुपचाप अपने कमरे मे चला गया और आरामकुर्सी पर बैठ कुछ सोचने लगा। उसी समय कल्याणसिंह के समधियाने से अर्थात् लालसिंह के यहा से यह खबर आ पहुची कि 'सरला' (जिसकी हरनन्दन से शादी होने वाली थी) घर मे से यकायक गायब हो गई और उस कोठरी मे जिसमें वह थी सिवाय खून के छीटे और निशानो के और कुछ भी देखने मे नहीं आता।

यह मामला नि सन्देह बडा भयानक और दु खदाई था। बात की बात में यह खबर भी बिजली की तरह चारो तरफ फैल गई। जनानो मे रोना-पीटना पड गया। घण्टे ही भर पहिले जहा लोग हसते-खेलते घूम रहे थे अब उदास और दु खी दिखाई देने लगे। महफिल का शामियाना उतार लेने बाद गिरा दिया गया। रडियों को कुछ दे दिला कर सवेरा होने के

पहिले ही बिदा हो जाने का हुक्म मिला। इसके बाद जब सूरजसिंह और रामसिंह सलाह विचार करके कल्याणसिंह से बिदा हुए और मिलने के लिए हरनन्दन के कमरे मे आए तो हरनन्दन को वहा न पाया, हा खोज-खबर करने पर मालूम हुआ कि बादी रंडी के पास बैठा हुआ दिल बहला रहा है, वही बादी रडी जिसका जिक्र इस किस्से के पहिले बयान मे आ चुका है और जो आज की महफिल मे नाचने के लिये आई थी।

सूरजसिंह और रामसिंह को यह सुनकर बडा ताज्जुब हुआ कि हरनन्दन बादी रंडी के पास बैठा दिल बहला रहा है! क्योकि वे हरनन्दन के स्वभाव से अनजान न थे और इस बात को भी खूब जानते थे कि वह रंडियो के फेर मे पडने या उनकी सोहबत को पसन्द करने वाला लडका नही है और फिर ऐसे समय म जब कि चारो तरफ उदासी फैली हुई हो उसका बादी के पास बैठकर गप्पें उडाना तो हद दर्जे का ताज्जुब पैदा करता था। आखिर सूरजसिंह ने अपने लडके रामसिंह को निश्चय करने के लिए उस तरफ रवाना किया जिधर बादी रंडी का डेरा था और आप लौटकर पुन अपने मित्र कल्याणसिंह के पास पहुचे जो अपने कमरे मे अकेले बैठे कुछ सोच रहे थे।

कल्याण० (ताज्जुब से) आप लौट क्या? क्या कोई दूसरी बात पैदा हुई?

सूरज० हम लोग हरनन्दन से मिलने के लिए उसके कमरे मे गये तो मालूम हुआ कि वह बादी रंडी के डेरे मे बैठा हुआ दिल बहला रहा है।

कल्याण० (चौंककर) बादी रंडी के यहा! नही, कभी नही वह ऐसा लडका नही है, और फिर ऐसे समय म जबकि चारो तरफ उदासी फैली हुई हो और हम लोग एक भयानक घटना के शिकार हो रहे हो! यह बात दिल मे नहीं बैठती।

सूरज० मेरा भी यही ख्याल है और इसी से निश्चय करने के लिए मैं रामसिंह को उस तरफ भेज कर आपके पास आया हू।

कल्याण० अगर यह बात सच निकली तो बडे ही शर्म की बात होगी। हसी-खुशी के दिनो मे ऐसी बातो पर लोगो का ध्यान विशेष नही जाता और न लोग इस बात को इतना बुरा ही समझते हैं, मगर आज ऐसी

आफत के समय म मेरे लडके हरनन्दन का ऐसा करना बडे शर्म की बात होगी, हर एक छोटा-बडा बदनाम करेगा और समधियाने में तो यह बात न मालूम किस रूप से फैल कर कैसा रूप खडा करेगी सो कह नहीं सकते।

सूरज० बात तो ऐसी ही है मगर फिर भी मैं यही कहता हूँ कि हरनन्दन ऐसा लडका नहीं है। उसे अपनी बदनामी का ध्यान उतना ही रहता है जितना जुआरी को अपना दाव पडने का उस समय जब कि कौडी किसी खिलाडी के हाथ से गिरा ही चाहती हो।

इतने ही मे हरनन्दन को साथ लिए हुए रामसिंह भी आ पहुचा जिसे देखते ही कल्याणसिंह न पूछा, "क्योंजी रामसिंह! हरनन्दन से कहां मुलाकात हुई?"

रामसिंह बांदी रडी के डेरे म।

कल्याण० (चौंक कर) हैं! (हरनन्दन से) क्यो जी तुम, कहा थे?

हरनन्दन बांदी रडी के डेरे मे!

इतना सुनते ही कल्याणसिंह की आखें मारे क्रोध से लाल हो गईं और मुह स एक शब्द भी निकलना कठिन हो गया। उधर यही हाल सूरजसिंह का भी था। एक तो दुःख और क्रोध ने उन्हें पहिले ही से दबा रक्खा था मगर इस समय हरनन्दन की ढिठाई ने उन्हें आपे से बाहर कर दिया। वे कुछ कहना ही चाहते थ कि रामसिंह ने कहा---

रामसिंह (कल्याणसिंह से) मगर हमारे मित्र इस योग्य नहीं हैं कि आपको कभी अपने ऊपर क्रोधित होने का समय दें। यद्यपि अभी तक मुझे कुछ मालूम नहीं हुआ है तथापि मैं इतना कह सकता हू कि इनके ऐसा करने का कोई-न-कोई भारी सबब जरूर होगा।

हरनन्दन बेशक ऐसा ही है।

कल्याण० (आश्चर्य से) बेशक ऐसा ही है!

हरनन्दन जी हां!-

इतना कह हरनन्दन ने कागज का एक पुर्जा जो बहुत मुडा और बिगडा हुआ था उनके सामने रख दिया। कल्याणसिंह ने बडी बेचनी से उसे उठा कर पढ़ा और तब यह कह कर अपने मित्र सूरजसिंह के हाथ में दे दिया

कि 'बेशक ऐसा ही है।' सूरजसिंह ने भी उसे बडे गौर से पढा 'और बेशक ऐसा ही है' कहते हुए अपने लडके रामसिंह के हाथ मे दे दिया और उसे पढने के साथ ही रामसिंह के मुह से भी यही निकला कि बेशक ऐसा ही है।।'

जमीदार लालसिंह के घर मे बडा ही कोहराम मचा हुआ था। उसकी प्यारी लडकी सरला घर में से यकायक गायब हो गई थी और वह भी इस ढग से कि याद करके कलेजा फटता और विश्वास होता था कि उस बेचारी के खून से किसी निर्दयी ने अपना हाथ रगा है। बाहर-भीतर हा-हाकार मचा हुआ था और इस खयाल से तो और भी ज्यादे रुलाई आती थी कि आज ही उसे ब्याहने के लिए बाजे-गाजे के साथ बरात आवेगी।

लालसिंह मिजाज का बडा ही कडुआ आदमी था। गुस्सा तो माना ईश्वर के घर ही से उसके हिस्से मे पडा था। रज हो जाना उसके लिए कोई बडी बात न थी, जरा-जरा से कसूर पर बिगड जाता और बरसो की जान-पहिचान तथा मुरौअत का कुछ भी खयाल न करता। यदि विशेष प्राप्ति की आशा न होती तो उसके यहा नौकर मजदूरनी या सिपाही एक भी दिखाई न देता। इसीसे प्रगट है कि वह लोगो को देता भी था मगर उनका दान इज्जत के साथ न होता और लोगो की बेइज्जती का फजीहता करने मे ही वह अपनी शान समझता था। यह सब कुछ था मगर रुपये ने उसके सब ऐबो पर जासीलेट का पर्दा डाल रक्खा था। उसके पास दौलत बेशुमार थी मगर लडका कोई भी न था, सिर्फ एक लडकी वही सरला थी जिसके सबध से आज दो घरो मे रोना पीटना मचा हुआ था। वह अपनी इस लडकी को प्यार भी बहुत करता था और भाई भतीजे मौजूद रहने पर भी अपनी कुल जायदाद जिसे उसने अपने उद्योग से पैदा किया था इसी लडकी के नाम लिख कर तथा वह वसीयतनामा राजा के पास रख कर अपने भाई-भतीजो को जो रुपये-पैसे की तरफ से दुखी रहा करते थे सूखा ही टरका दिया था, हा खाने-पीने की तकलीफ वह किसी को भी नही देता था। उसके चौके मे चाहे कितने ही अदमी बैठ कर खाते इसका वह कुछ खयाल न करता बल्कि खुशी से लोगो को अपने साथ खाने में शरीक

करता था।

अपनी लडकी सरला के नाम जो वसीयतनामा उसने लिखा था वह भी कुछ अजब ढग का था। उसके पढने ही से उसके दिल का हाल जाना जाता था। पाठकों की जानकारी के लिए उस वसीयतनामे की नकल हम यहा पर देते है—

"मैं लालसिंह

"अपनी कुल जायदाद जिसे मैंने अपनी मेहनत से पैदा किया है और जो किसी तरह बीस लाख रुपये से कम नहीं है और जिसकी तफसील नीचे लिखी जाती है अपनी लडकी सरला के नाम से जिसकी उम्र इस वक्त चौदह (१४) वर्ष की है वसीयत करता हू। इस जायदाद पर सिवाय सरला के और किसी का हक न होगा बशर्ते कि नीचे लिखी शर्तों का पूरा बर्ताव किया जाय—

(१) सरला को अपनी कुल जायदाद का मैनेजर अपने पति को बनाना होगा।

(२) सरला अपनी जायदाद (जो मैं उसे देता हू) या उसका कोई हिस्सा अपने पति की इच्छा के विरुद्ध खर्च न कर सकेगी और न किसी को दे सकेगी।

(३) सरला के पति का सरला की कुल जायदाद पर बतौर मनेजरी के हक होगा न कि बतौर मालिकाना।

(४) सरला का पति अपनी मैनेजरी की तनखाह (अगर चाहे तो) पाच सौ रुपये महीने के हिसाब से इस जायदाद की आमदनी मे से ले सकेगा।

(५) सरला की शादी का बन्दोबस्त मैं कल्याणसिंह के लडके हरनन्दनसिंह के साथ कर चुका हू और जहा तक सभव है अपनी जिन्दगी मे उसी के साथ कर जाऊगा। कदाचित् इसके पहिले ही मेरा अन्तकाल हो जाय तो सरला को लाजिम होगा कि उसी हरनन्दनसिंह के साथ शादी करे। अगर इसके विपरीत किसी दूसरे के साथ शादी करेगी तो मेरी कुल जायदाद के (जिसे मैं इस वसीयतनामे मे दर्ज करता हू) आधे हिस्से पर हमारे चारा

सगे भतीजा—राजाजी, पारसनाथ धरनीधर और दौलतसिंह का या उनमे से उस वक्त जो हो, हक हो जाएगा और बाकी के आधे हिस्से पर सरला के उस पति का अधिकार होगा जिसके साथ कि वह मेरी इच्छा के विरुद्ध शादी करेगी। हा, अगर शादी होने के पहिले सरला को हरनन्दन की बदचलनी का कोई सबूत मिल जाय तो उसे अख्तियार होगा कि जिसके साथ जी चाहे शादी करे। उस अवस्था मे सरला को मेरी कुल जायदाद पर उसी तरह अधिकार होगा जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। अगर शादी के बाद हरनन्दनसिंह की बदचलनी का कोई सबूत पाया जाय तो सरला को आवश्यक होगा कि उसे अपनी मैनेजरी से खारिज कर दे और अपनी कुल जायदाद राजा के सपुर्द करके काशी चली जाय और वहा केवल एक हजार रुपै महीना राजा से लेकर तीर्थवास करे और यदि ऐसा न करे तो राजा को (जो उस वक्त मे यहा का मालिक हो) जबरदस्ती ऐसा करने का अधिकार होगा।

(६) सरला के बाद सरला की सम्पत्ति का मालिक धर्मशास्त्रानुसार होगा।

जायदाद की फिहरिस्त और तारीख इत्यादि

इस वसीयतनामे के पढने ही से पाठक समझ गये होगे कि लालसिंह कैसी तबीयत का आदमी और अपनी जिद्द का कैसा पूरा था। इस समय उसने जब यकायक सरला के गायब होने का हाल लौंडी की जुबानी सुना तो उसके कलेजे पर एक चोट-सी लगी और वह घबडाया हुआ मकान के अदर चला गया जहा औरतो में विचित्र ढग की घबडाहट फैली हुई थी। सरला की मा उस कोठडी में बेहोश पड़ी हुई थी जिसमे से सरला यकायक गायब हो गई थी और जहा उसके बदले म चारो तरफ खून के छीटे और निशान दिखाई दे रहे थे। कई औरतें उस बेचारी के पास बैठी हुई रो रही थीं, कई उसे होश में लाने की फिक्र कर रही थीं, और कई इस आशा मे कि कदाचित् सरला कहीं मिल जाय, ऊपर-नीचे और मकान के कोनो मे घूम

घूम कर देख-भाल कर रही थीं।

जिस समय लालसिंह सरला का कोठड़ी में पहुंचा और उसने वहा की अवस्था देखी, घबड़ा गया और खून के छींटों पर निगाह पड़ते ही उसकी आखो से आसू की नदी बह चली। उसे थोड़ी देर तक तो तनोबदन की सुध न रही फिर बडी कोशिश से उसने अपन का सभाला और तहकीकात करने लगा। कई औरतो और लौंडियो के उसने इजहार लिए मगर इससे ज्यादे पता कुछ भी न लगा कि सरला यकायक अपनी कोठडी मे से ही कही गायब हो गई। उसे किसी ने भी कोठडी के बाहर पैर रखते या कही जाते नही देखा। जब लालसिंह ने खून के निशान और छींटा पर ध्यान दिया तो उसे बडा ही आश्चय हुआ क्योकि खून के जो कुछ छींटे या निशान थे सब कोठडी के अन्दर ही थ, चौकठ के बाहर इस किस्म की कोई बात न थी। वह अपनी स्त्री को होश मे लाने और दिलासा देने का बन्दोबस्त करके बाहर अपने कमरे मे चला आया जहा से उसी समय अपने समधी कल्याणसिंह के पास एक आदमी रवाना करके उसकी जुबानी अपन यहा का सब हाल उसने कहला भेजा।

रात-भर रज और गम मे बीत गया। सरला को खोज निकालने के लिये किसी ने कोई बात उठा न रक्खी, नतीजा कुछ भी न निकला। दूसरे दिन दो पहर बीते वह आदमी भी लौट आया जो कल्याणसिंह के पास भेजा गया था और उसने वहा का सब हाल लालसिंह से कहा जिसे सुनते ही लालसिंह पागल की तरह हो गया और उसके दिल मे कोई नई बात पैदा हो गई, मगर जिस समय उस आदमी ने यह कहा कि 'खून-खराबे का सब हाल मालूम हो जाने पर भी हरनन्दनसिंह का किसी तरह का रज न हुआ और वह एक रण्डी के पास जिसका नाम बादी है और जो नाचने के लिए उसके यहा गई हुई थी जा बैठा और हसी-दिल्लगी मे अपना समय बिताने लगा, यहा तक कि उसके बाप ने बुलाने के लिए कई आदमी भेजे मगर वह बादी के पास से न उठा, आखिर जब स्वय रामसिंह गये तो उसे जबरदस्ती उठा लाये और लानत-मलामत करने लगे' तो लालसिंह की हालत बदल गई। उसके लिए यह खबर बडी ही दुखदाई थी। यद्यपि वह सरला के गम मे अधमूआ हो रहा था तथापि इस खबर ने उसके बदन

मे बिजली पैदा कर दी। कहा तो वह दीवार के सहारे सुस्त बैठा हुआ सब बातें सुन रहा और आखो से आसू की बूदें गिरा रहा था, कहा यकायक महलकर बठ गया क्रोध से बदन कापने लगा, आसू की तरी एकदम गायब होकर आखो ने अगारो की सूरत पैदा की और साथ ही इसके वह लम्बी-लम्बी सासें लेने लगा।

उस समय लालसिंह के पास उसके चारा भतीजे--राजाजी, पारसनाथ, धरनीधर और दौलतसिंह तथा और भी कई आदमी जि हे वह अपना हिती समझता था बैठे हुए थे और सभो की सूरत से उदासी और हमदर्दी झलक रही थी। हरनन्दन और बादी वाली खबर सुनकर जिस समय लालसिंह क्रोध मे आकर चुटीले साप की तरह फुफकारने लगा उस समय उन लोगों ने भी नमक मिच लगाना आरम्भ कर दिया।

एक देखने-सुनने और बातचीत से तो हरनन्दन बडा नक और बुद्धिमान मालूम पडता था।

दूसरा मनुष्य का चित्त अन्दर-बाहर से एक नही हा सकता।

तीसरा मुझे तो पहिले ही से उसके चाल चलन पर शक था मगर लोगो मे उसकी तारीफ इतनी ज्यादे फैली हुई थी कि मैं अपने मुह से उसके खिलाफ कुछ कहने का साहस नहीं कर सकता था।

चौथा बुद्धिमान ऐयाशो का यही ढग रहता है।

पाचवा असल तो यो है कि हरनन्दन को अपनी बुद्धिमानी पर घमड भी हद्द से ज्यादे है।

छठा नि सन्देह ऐसा ही है। उसने तो केवल हमारे लालसिंहजी को धोखा देने के लिए यह रूपक बाधा हुआ था नहीं तो वह पक्का बदमाश और

पारस० (लालसिंह का भतीजा) अजी मैं एक दफे (लालसिंह की तरफ इशारा करके) चाचा साहब से कह भी चुका था कि हरनन्दन को जैसा आप समझे हुए हैं वैसा नही है मगर आपने मेरी बातो पर कुछ ध्यान ही नही दिया उल्टे मुझी का उल्लू बनाने लगे।

लाल० वास्तव म मैं उस बहुत नेक आदमी समझता था।

पारस० मैं तो आज भी डके की चोट कह सकता हू कि बेचारी

सरला का खून (अगर वास्तव में वह मारी गई है तो) हरनन्दन ही की बदौलत हुआ है। अगर मेरी मदद की जाय तो मैं इसको साबित करके दिखा भी सकता हूं।

लालसिंह क्या तुम इस बात को साबित कर सकते हो?

पारस० बेशक!

लालसिंह तो क्या सरला के मारे जाने में भी तुम्हें कोई शक है?

पारस० जी हां, पूरा-पूरा शक है! मेरा दिल गवाही देता है कि यदि उद्योग के साथ पता लगाया जायगा तो सरला मिल जायगी।

लालसिंह क्या यह काम तुम्हारे किये हो सकता है?

पारस० बेशक, मगर खर्च बहुत ज्यादे करना होगा!

लाल० यद्यपि मैं तुम पर विश्वास और भरोसा नहीं रखता पर इस बार में अंधा और बेवकूफ बन कर भी तुम्हारी माफत खर्च करने को तैयार हूं। मगर तुम यह बताओ कि हरनन्दन सरला के साथ दुश्मनी करके अपना नुकसान कैसे कर सकता है!

पारस० इसका बहुत बड़ा सबब है जिसके लिए हरनन्दन ने ऐसा किया, वह बड़े आन-बान का आदमी है।

लाल० आखिर वह सबब क्या है सो साफ-साफ क्यों नहीं कहते?

पारस० (इधर-उधर देख कर) मैं किसी समय एकान्त में आपसे कहूंगा।

लाल० अभी इसी जगह एकान्त हो जाता है, जो कुछ कहना है तुरन्त कहो, क्या तुम नहीं जानते कि इस समय मेरे दिल पर क्या बीत रही है?

इतना कह कर लालसिंह ने औरों की तरफ देखा और उसी समय वे लोग उठकर थोड़ी देर के लिए दूसरे कमरे में चले गए। उस समय पुनः पूछे जाने पर पारसनाथ ने कहा, "हरनन्दन अपनी बुद्धि और विद्या के आगे रुपये की कुछ भी कदर नहीं समझता। वह आपके रुपये का लालची नहीं है बल्कि अपनी तबीयत का बादशाह है। उसका बाप बेशक आपकी दौलत अपनी किया चाहता है मगर हरनन्दन को सरला के साथ ब्याह करना मंजूर न था क्योंकि वह अपना दिल किसी और ही को दे चुका है जो एक गरीब की लड़की है और जिसके साथ शादी करना उसका बाप

पसन्द नही करता। इसीलिए उसने इस ढग से सरला को बदनाम करके पीछा छुड़ाना चाहा है। इस सम्बन्ध में और भी बहुत-सी बातें हैं जिन्हें मैं आपके सामने मुह से नही निकाल सकता क्योंकि आप बड़े हैं और बातें छोटी हैं।"

लाल० (ताज्जुब के साथ) क्या तुम ये सब बातें सच कह रहे हो?

पारस० मेरी बातों मे रत्ती बराबर भी झूठ नहीं है। मैं छाती ठोक के दावे के साथ कह सकता हू कि यदि आप खर्च की पूरी-पूरी मदद देंगे तो मैं थोड़े ही दिनों में ये सब बातें सिद्ध करके दिखा दूगा।

लाल० इस बारे में क्या खर्च पड़ेगा?

पारस० दस हजार रुपये। अगर जीती-जागती सरला का भी पता लग गया और उसे मैं छुड़ा कर अपने घर ला सका तो पच्चीस हजार रुपये से कम खर्च नहीं पड़ेगा।

लाल० (अपनी छाती पर हाथ रख कर) मुझे मजूर है।

पारस० तो मैं भी फिर अपनी जान हथेली पर रख कर उद्योग करने के लिए तैयार हू।

लाल० अच्छा अब उन लोगो को बुला लेना चाहिए जो दूसरे कमरे म चले गये हैं।

पारस० जो आज्ञा मगर ये बातें सिवाय मेरे और आपके किसी तीसरे को मालूम न हो।

रात दो घण्टे से ज्यादे नही रह गई है। दरभगा के बाजारो की रौनक अभी मौजूद है मगर घटती जाती है, हा उस बाजार की रौनक कुछ दूसरे ही ढग पर पलटा खा रही है जो रडियो की आबादी से विशेष सम्बन्ध रखती है, अर्थात् उनके निचले खण्ड की रौनक से ऊपर वाले खण्ड की रौनक ज्यादा होती जा रही है। इस उपन्यास के इस बयान मे हमको इसी बाजार से कुछ मतलब है क्योंकि उस बादी रडी का मकान भी इसी बाजार मे है जिसका जिक्र इस किस्से के पहले और दूसरे बयान म आ चुका है। बादी का मकान तीन मरातब का है और उसमे जाने के लिए दो रास्ते हैं, एक तो बाजार की तरफ से और दूसरा पिछवाड़े वाली अन्धेरी गली मे से।

पहली मरातब मे बाजार की तरफ एक बहुत बड़ा कमरा और दोनों तरफ दो कोठडिया तथा उन कोठडियों मे से दूसरी कोठडियों मे आने का रास्ता बना हुआ है और पिछवाडे की तरफ केवल पाच दर का एक दालान है। दूसरी मरातब पर चारो कोनो मे चार कोठडिया और बीच में चारों तरफ छोटे-छोटे चार कमरे हैं। तीसरी मरातब पर केवल एक बगला और बाकी का मैदान अर्थात खुली छत है। इस समय हम बादी को इसी तीसरी मरातब वाले बगले मे बैठे देखते हैं। उसके पास एक आदमी और भी है जिसकी उम्र लगभग पच्चीस वर्ष होगी। कद लम्बा, रग गोरा, चेहरा कुछ खूबसूरत, बड़ी-बड़ी आखें, (मगर पुतलियो का स्थान स्याह होने के बदले कुछ नीलापन लिए हुए था) भवें दोनो नाक के ऊपर से मिली हुई, पेशानी सुकडी, सर के बाल बडे-बडे मगर घुघराले है। बदन के कपडे—पायजामा चपकन, रूमाल इत्यादि यद्यपि मामूली ढग के हैं मगर साफ हैं, हा, सिर पर कलाबत्तू कोर का बनारसी दुपट्टा बाधे हैं जिससे उसकी ओछी तथा फैल सूफ तबीयत का पता लगता है। यह शख्स बादी के पास एक बड़े तकिए के सहारे झुका हुआ मीठी-मीठी बातें कर रहा है।

इस बगले की सजावट भी बिल्कुल मामूली और सादे ढग की है। जमीन पर गुदगुदा फर्श और छोटे-बड़े कई रग के बीस-पच्चीस तकिए पडे हुए हैं दीवार मे केवल एक जोडी दीवारगीर भी लगी है जिसमे रगीन पानी के गिलास की रोशनी हो रही है। बादी इस समय बडे प्रेम से उस नौजवान की तरफ झुकी हुई बातें कर रही है।

नौजवान मैं तुम्हारे सर की कसम खाकर कहता हू, क्योकि इस दुनिया मे मैं तुमसे बढकर किसी को नही मानता।

बादी (एक लम्बी सास लेकर) हम लोगो के यहा जितने आदमी आते हैं सभी लम्बी-लम्बी कसमे खाया करते हैं मगर मुझे उन कसमो की कुछ परवाह नही रहती परन्तु तुम्हारी कसम मेरे कलेजे पर लिखी जाती है क्योकि मैं तुम्हें सच्चे दिल से प्यार करती हू।

नौजवान यही हाल मेरा है। मुझे इस बात का खयाल हरदम बना रहता है कि बाप-मा भाई-बिरादर, देवता धर्म सबस बिगड जाय तो बिगड जाय मगर तुमसे किसी तरह कभी बिगडने या झूठे बनने की नौबत न

आये। सच तो यो है कि मैं तुम्हारे हाथ बिक गया हू बल्कि अपनी खुशी और जिन्दगी को तुम्हारे ऊपर न्योछावर कर चुका हू और केवल तुम्हारा ही भरोसा रखता हू। देखो, अब की दफे मेरी मा सचमुच मेरी दुश्मन हो गई मगर मैंने उसका कुछ भी खयाल न किया, हाथ लगी रकम के लौटाने का इरादा भी मन म न आने दिया और तुम्हारी खातिर यहा तक ला ही छोडा। अभी तो मैं कुछ कह नही सकता, हा, अगर ईश्वर मेरी सुन लेगा और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लग जाएगी तो मैं तुम्ह माला माल कर दूगा।

बादी मैं तुम्हारी ही कसम खाकर कहती हू कि मुझे धन दौलत का कुछ भी खयाल नही। मैं तो केवल तुमको चाहती हू और तुम्हारे लिए जान तक देने को तैयार हू मगर क्या करू मेरी अम्मा बडी चाडालिन है। वह एक दिन भी मुझे रुलाए बिना नही रहती। अभी कल की बात है कि दोपहर के समय मैं इसी बगल म बैठी हुई तुम्ह याद कर रही थी, खाना पीना कुछ भी नहीं किया था, चार-पाच दफे मेरी अम्मा कह चुकी थी मगर मैंने पट-दर्द का बहाना करके टाल दिया था इत्तफाक से न मालूम कहा का मारा-पीटा एक सर्दार आ पहुचा और अम्मा जान को यह जिद्द हुई कि मैं उसके पास अवश्य जाऊ जिसे उन्होने बडी खातिर से नीचे वाले कमरे म बैठा रक्खा था। मगर मुझे उस समय सिवाय तुम्हारे खयाल के और कुछ अच्छा नही लगता था, इसलिए मैं यहा बैठी रह गई, नीचे न उतरी, बस अम्मा एकदम यहा चली आइ और मुझे हजारो गालिया देन लगी और तुम्हारा नाम ले लेकर कहने लगी कि पारसनाथ आयेंगे तो रात रातभर बैठी बातें किया करेगी और जब कोई दूसरा सर्दार आकर बैठेगा तो उसे पूछेगी भी नही! आखिर घर का खर्च कैसे चलेगा? इत्यादि बहुत कुछ बक गई मगर मैंने वह चुप्पी साधी कि सर तक न उठाया आखिर बहुत बक बक कर चली गईं। फिर यह भी न मालूम हुआ कि अम्मा ने उस सर्दार को क्या कह कर विदा किया या क्या हुआ। एक दिन की कौन कहे रोज ही इस तरह की खटपट हुआ करती है।

पारस खैर थोडे दिन और सब्र करो, फिर तो मैं उन्ह ऐसा खुश कर दूगा कि वह भी याद करेंगी। मेरे चाचा की आधी जायदाद भी कम नही है अस्तु जिस समय वह तुम्ह बेगमो की तरह ठाठबाटसे देखेंगी और खजाने

की तालियो का झब्बा अपनी करधनी से लटकता हुआ पावेगी उस समय वह बोलने का कोई मुह न रहेगा, दिन-रात तुम्हारी बलाए लिया करेंगी।

बादी तब भला वह क्या कहने लायक रहेंगी और आज भी वह मेरा क्या कर सकती हैं ? अगर बिगड कर खडी हो जाऊ तो उनके किये कुछ भी न हो, मगर क्या करू लोक-निन्दा से डरती हू।

पारस नहीं-नही, ऐसा कदापि न करना ! मैं नही चाहता कि तुम्हारी किसी तरह की बदनामी हो और मर्दार लोग तुम्हारी ढिठाई की घर घर मे चर्चा करें, अब भी मैं तुम्हे रत्तीभर तकलीफ होने न दूगा और तुम्हारे घर का खर्चा किसी न-किसी तरह जुटाता ही रहूगा।

बादी नहीं जी मैं तुम्हें अपने खर्चे के लिए भी तकलीफ देना नही चाहती, मैं इस लायक हू कि बहुत से मर्दारो को उल्लू बनाकर अपना खर्च निकाल लू। तुमसे एक पैसा लेने की नीयत नही रखती, मगर क्या करू अम्मा से लाचार हू कभी से जो कुछ तुम देते हो उसका पता है। अगर उनके हाथ म मैं यह कहकर कुछ रुपे न दू कि पारस बाबू ने दिया है' तो व बिगडने लगती हैं और कहती हैं कि 'ऐसे मर्दार का आना किस काम का जो बिना कुछ दिए चला जाए !' मैंने तुमसे अभी तक तो साफ-साफ नहीं कहा, आज जिस आन पर कहती हू कि उन्हे खुश करने के लिए मुझे बडी बडी तरकीबे करनी पडती हैं। और मर्दारो से जो कुछ मिलता है उसका पूरा पूरा हाल तो उन्हे मालूम हो ही नही सकता इससे उन रकमो से मैं बहुत कुछ बचा रखती हू। जिस दिन तुम बिना कुछ दिये चले जाते हो उस दिन अपने पास मे उन्हे कुछ देकर तुम्हारा दिया हुआ बता देती हू यही सबब है कि वह ज्यादे ची चपड नही कर सकती।

पारस यह तो मैं अच्छी तरह जानता हू कि तुम मुझे जी जान से चाहती हो और मुझ पर मेहरबानी रखती हो मगर क्या करू लाचार हू ! तो भी इस बात की कोशिश करूगा कि जब तुम्हारे यहा आऊ तुम्हारे वास्ते कुछ-न कुछ जरूर लेता आऊ।

बादी अजी रहो भी तुम तो पागल हुए जाते हो ! इसी से मैं तुम्हे सब हाल नहीं कहती थी, जब मैं उन्हे किसी-न किसी तरह खुश कर ही लेती हू तो फिर तुम्हे तरद्दुद करने की क्या जरूरत है ?

इसी प्रकार की बातें दोनों में हो रही थी कि एक नौजवान लौंडी जो घर भर को बल्कि दुनिया की हर एक चीज को एक ही निगाह (आख) से देखती थी, मटकती हुई आ पहुची और बादी से बोली, "बीबी नीचे छोटे नवाब साहब आये हैं।"

बादी (चौंक कर) अरे आज क्या है! कहा बैठे है?

लौंडी अम्मा ने उन्हें पूरब वाली कोठरी में बैठाया है और आप भी उन्ही के पास बैठी है।

बादी अच्छा तू चल, मैं अभी आती हू! (पारसनाथ की तरफ देख के) बडी मुश्किल हुई अगर मैं उनके पास न जाऊ तो भी आफत, कहे कि लो साहब, रडी का दिमाग नही मिलता!' इतना ही नही बेइज्जती करने के लिए तैयार हो जाय।

पारस नही नही, ऐसा न करना चाहिए, लो मैं जाता हू, अब तुम भी जाओ। (उठते हुए) ओफ, बडी देर हो गई!

बादी पहिले वादा कर लो कि अब कब मिलोगे?

पारस कल तो नही मगर परसो जरूर मैं आऊगा।

बादी मेरे सर पर हाथ रक्खो।

पारस (बादी के सर पर हाथ रख के) तुम्हारे सर की कसम, परसो जरूर आऊगा।

दोनों वहा से उठ खडे हुए और निचले खण्ड में आए। पारसनाथ सदर दर्वाजे से होता हुआ अपने घर रवाना हुआ और बादी उस कोठरी में चली गई जिसमें नवाब साहब के बैठाये जाने का हाल लौंडी ने कहा था। दर्वाजे पर पर्दा पडा हुआ था और कोठरी के अन्दर बादी की मा के सिवाय दूसरा कोई न था। नवाब के आने का तो बहाना ही बहाना था।

बादी को देखकर उसकी मा ने पूछा, "गया?"

बादी हा गया। कमबख्त जब आता है, उठने का नाम ही नही लेता!

बादी की मा क्या करेगी बेटी! हम लोगों का काम ही ऐसा ठहरा। अब जाओ कुछ खा-पी लो, हरनन्दन बाबू आते ही होंगे इसीलिए मैंने नवाब साहब का बहाना करवा भेजा था।

बादी और उसकी मा धीरे धीरे बातें करती खाने के लिए चली गई।

आधे घण्टे के अन्दर ही छुट्टी पाकर दोनों फिर उसी कोठडी में आई और बैठ कर यों बातें करने लगी—

बांदी चाहे जो हो मगर सरला किसी दूसरे के साथ शादी न करेगी।

बांदी की मा (हस कर) दूसरे की बात जाने दो उसे खास हरिहरसिंह के साथ शादी करनी पडेगी जिसकी सूरत शक्ल और चालचलन को वह सपने में भी पसन्द नही करती।

पाठक! हरिहरसिंह उसी गंवार का नाम था जिसका जिक्र इस उपन्यास के पहिले बयान में आ चुका है और जो बांदी रडी से उस समय मिला था जब वह नाचने-गाने के लिए हरनन्दनसिंह के घर जा रही थी।

बांदी अपनी मा की बातें सुनकर कुछ देर तक सोचती रही और इसके बाद बोली, "लेकिन ऐसा न हुआ तब?"

बांदी की मा तब पारसनाथ को कुछ भी फायदा न होगा।

बांदी पारसनाथ को तो सरला की शादी किसी दूसरे के साथ हो जाने ही से फायदा हो जाएगा चाहे वह हरिहरसिंह हो चाहे कोई और हो मगर हो पारसनाथ का कोई दोस्त ही।

बांदी की मा अगर ऐसा न हुआ तो वसीयतनामे में झगडा हो जाएगा।

बांदी अगर सरला का बाप पहिला वसीयतनामा तोड कर दूसरा वसीयतनामा लिखे, तब?

बांदी की मा इसी खयाल से तो मैंने पारसनाथ से कहा था कि सरला की शादी लालसिंह के जीते जी न होनी चाहिये और इस बात को वह अच्छी तरह समझ भी गया है।

बांदी मगर लालसिंह बडा ही काइयां है।

बांदी की मा ठीक है, मगर वह पारसनाथ के फेर में उस वक्त आ जाएगा जब वह उसे यहां लाकर तुम्हारे पास बैठे हुए हरनन्दन का मुकाबला करा देगा।

बांदी लालसिंह जब यहां हरनन्दन बाबू को देखेगा तो वह उन्हें बिना टोके कभी न रहेगा और अगर टोकेगा तो हरनन्दन बाबू को विश्वास हो जाएगा कि बांदी ने मेरे साथ दगा की।

बांदी की मा नही नही, हरनन्दन बाबू को ऐसा समझने का मौका

कभी न देना चाहिए। मगर यही तो हम लोगों की चालाकी है। हमे दोनों तरफ से फायदा उठाना और दोनों को अपना आसामी बनाये रखना ही उचित है।

बांदी तो फिर क्या तरकीब की जाय ?

बांदी की मा हरनन्दन बाबू को सरला का पता बताना और लालसिंह को हरनन्दन की सूरत दिखाना, ये दोनों काम एक ही समय मे होने चाहिए। इसके बाद हम लोग लालसिंह मे बिगड जायेंगे और उसे यहा से फौरन निकल जाने के लिए कहेंगे उस समय हरनन्दन बाबू को हम लोगो पर शक न होगा।

बांदी मगर इसके अतिरिक्त इस बात की उम्मीद कब है कि हरनन्दन बाबू से बहुत दिनो तक फायदा होता रहेगा ?

बांदी की मा (मुस्कराकर) अरे हम लोग बड़े-बड़े जतियो का मुण्डा कर लेती है, हरनन्दन है क्या चीज ? अगर मेरी तालीम का असर तुझ पर पडता रहेगा तो यह कोई बडी बात न होगी।

बांदी कोशिश तो जहा तक हो सकेगा करूगी मगर सुनने मे बराबर यही आता है कि हरनन्दन बाबू को गाने-बजाने का या रंडियो मे मिलने का कुछ भी शौक नही है बल्कि वह रंडियो के नाम से चिढता है।

बांदी की मा ठीक है, इस मिजाज के सैकडो आदमी होते है और है, मगर उनके खयालो की मजबूती तभी तक कायम रहती है जब तक वे किसी न किसी तरह हम लोगो के घर मे पैर नही रखते, और जहा एक दफे हम लोगो के आंचल की हवा उन्हे लगी नहीं उनके खयालो की मजबूती मे फर्क पडा! एक-दो कौन कहे पचासो जती और ब्रह्मचारियों की खबर तो मैं ले चुकी हू। हा अगर तेरे किए कुछ हो न सके तो बात ही दूसरी है।

इसी किस्म की बातें हो रही थी कि लौंडी ने हरनन्दन बाबू के आने की खबर दी। सुनते ही बांदी घबराहट के साथ उठ खडी हुई और बीस-पच्चीस कदम आगे बढकर बडी मुहब्बत और खातिरदारी का बर्ताव दिखाती हुई उसी कोठडी के दरवाजे तक ले आई जिसमे बैठकर अपनी मा से बातें कर रही थी और जहा उसकी मा सलाम करने की नीयत से

खडी थी। अस्तु, बादी की मा न हरनन्दन बाबू को झुककर सलाम करने के बाद बादी से कहा, "बादी ! आपको यहा मत बैठाओ जहा अक्सर लोग आते-जाते रहते हैं बल्कि ऊपर बगले ही मे ले जाओ क्योकि वह आप ही के लायक है और आपको पसन्द भी है।"

इतना कह कर बादी की मा हट गई और बादी हा ऐसा ही करती हू' कह कर हरनन्दन बाबू को लिए ऊपर वाले उसी बगले में चली गई जिसमे थोडी देर पहिले पारसनाथ बैठकर बादी के साथ चारा-बदलौअल' कर चुका था।

हरनन्दन बाबू बडी इज्जत और जाहिरी मुहब्बत के साथ बैठाए गए और इसके बाद उन दोनो मे या बातचीत होने लगी—

बादी कल तो आपने खूब छकाया ! दो बजे रात तक मैं बराबर बैठी इन्तजार करती रही आखिर बडी मुश्किल से नीद आई सो नींद म भी बराबर चौंकती रही।

हरनन्दन हा, एक ऐसा टेढा काम आ पडा था कि मुझे कल बारह बजे रात तक बाबूजी ने अपने पास से उठने न दिया उस समय और भी कई आदमी बठे हुए थे।

बादी तभी ऐसा हुआ ! मैं भी यही सोच रही थी कि आप बिना किसी भारी सबब के वादाखिलाफी करने वाले नही हैं।

हरनन्दन मैं अपने वादे का बहुत बडा खयाल रखता हू और किसी को यह कहने का मौका नही दिया चाहता कि हरनन्दन वादे के सच्चे नही हैं।

बादी इस बारे मे तो तमाम जमाना आपकी तारीफ करता है। मुझे आप ऐसे सच्चे सर्दार की सोहबत का फख्र है। अभी कल मेरे यहा बी इमामीजान आई थी। बात ही बात मे उन्होने मुझे कह ही तो दिया कि हा बादी, अब तुम्हारा दिमाग आसमान के नीचे क्यो उतरने लगा ! हरनन्दन बाबू ऐसे सच्चे सर्दार को पाकर तुम जितना घमण्ड करो थोडा है !' मैं समझ गई कि यह डाह से ऐसा कह रही है।

हरनन्दन (ताज्जुब की सूरत बना कर) इमामीजान को मेरा हाल कैसे मालूम हुआ ? क्या तुमने कह दिया था ?

बांदी (जोर देकर) अजी नहीं, मैं भला क्या कहने लगी थी ? यह काम उसी दुष्ट पारसनाथ का है। उसी ने तुम्हें कई जगह बदनाम किया है। मैं तो जब भी उसकी सूरत देखती हू मारे गुस्से के आखो मे खून उतर आता है, यही जी चाहता है कि उसे कच्चा ही खा जाऊ, मगर क्या करू, लाचार हू, तुम्हारे काम का खयाल करके रुक जाती हू। कल वह फिर मेरे यहा आया था, मैंने अपने क्रोध को बहुत रोका मगर फिर भी जुबान चल ही पडी, बात ही बात मे कई जली कटी कह गई।

हरनन्दन लेकिन अगर उससे ऐसा ही मूखा बर्ताव रखोगी तो मेरा काम कैसे चलेगा ?

बांदी आप ही के काम का ख्याल तो मुझे उससे मिलने पर मजबूर करता है, अगर ऐसा न होता तो मैं उसकी वह दुर्गति करती कि वह भी जन्म भर याद करता। मगर उसे आप पूरा बेहया समझिये, तुरन्त ही मेरी दी हुई गालियो को बिल्कुल भूल जाता है और खुशामदें करने लगता है। कल मैंने उसे विश्वास दिला दिया कि मुझसे और आप (हरनन्दन) मे लडाई हो गई और अब सुलह नहीं हो सकती, अब यकीन है कि दो-तीन दिन मे आपका काम हो जायेगा।

हरनन्दन अरे हा, परसो उसी कम्बख्त की बदौलत एक बडी मजेदार बात हुई।

बांदी (और आगे खसक कर और ताज्जुब के साथ) क्या, क्या ?

हरनन्दन उसी के सिखाने-पढाने से परसा लालसिंह ने एक आदमी मेरे बाप के पास भेजा। उस समय जबकि उस आदमी से और मेरे बाप से बातें हो रही थीं इत्तिफाक से मैं भी वहा जा पहुचा। यद्यपि मेरा इरादा तुरन्त लौट पडने का था मगर मेरे बाप ने मुझे अपने पास बैठा लिया, लाचार उन दोनो की बातें सुनने लगा। उस आदमी ने लालसिंह की तरफ से मेरी बहुत सी शिकायतें कीं और बात-बात में यही कहता रहा कि 'हरनन्दन बाबू तो बांदी रण्डी को रखे हुए है और दिन रात उसी के यहा बैठे रहते हैं, ऐसे आदमी को हमारी लडकी के गायब हो जाने का भला क्या रज होगा ?' मेरे पिता पहिले तो चुपचाप बैठे देर तक ऐसी बातें सुनते रहे, मगर जब उनको हद से ज्याद गुस्सा चढ आया

तब उस आदमी से डपट कर बोले, "तुम जाकर लालसिंह को मेरी तरफ से कह दो कि अगर मेरा लडका हरनन्दन ऐयाश है तो तुम्हारे बाप का क्या लेता है ? तुम्हारी लडकी जाय जहन्नुम मे और अब अगर वह मिल भी जाय तो मै अपने लडके की शादी उससे नही कर सकता। जो नौजवान औरत इस तरह बहुत दिना तक घर से निकल कर गायब रहे वह किसी भले आदमी के घर मे ब्याहुता बनकर रहने लायक नही रहती ! अब सुन लो कि मेरे लडके ने खुल्लम खुल्ला बादी रडी को रख लिया है और उसे बहुत जल्द यहा ले आवेगा ! बस तुम तुरन्त यहा से चले जाओ, मैं तुम्हारा मुह देखना नहीं चाहता ! !"

इतना सुनते ही वह आदमी उठ कर चला गया और तब मेरे बाप ने मुझसे कहा, 'बेटा ! अगर तुम अभी तक बादी से कुछ वास्ता न भी रखते थे तो अब खुल्लमखुल्ला उसके पास आना जाना शुरू कर दो और अगर तुम्हारी ख्वाहिश हो तो तुम उसे नौकर भी रख लो या यहा ले आओ। मैं उसके लिए पाच सौ रुपये महीने का इलाका अलग कर दूगा बल्कि थोडे दिन बाद वह इलाका उसे लिख भी दूगा जिसमे वह हमेशा आराम और चैन से रहे। इसके अलावा और जो कुछ तुम्हारी इच्छा हो उसे दो, मैं तुम्हारा हाथ कभी न रोकूगा—देखें तो सही लालसिंह हमारा क्या कर लेता ह ! !"

बादी (बडे प्यार से हरनन्दन का पजा पकड कर) सच कहना ! क्या हकीकत मे ऐसा हुआ ?

हरनन्दन (बादी के सर पर हाथ रख के) तुम्हारे सर की कसम, भला मैं तुमसे झूठ बोलूगा ! तुमसे क्या मैंने कभी और किसी से भी आज तक कोई बात भला झूठ कही है ?

बादी (खुशी से) नही नही, इस बात को मैं बहुत अच्छी तरह जानती हू कि आप कभी किसी से झूठ नही बोलते !

हरनन्दन और फिर इस बात का विश्वास तो और लोगों को भी थोडी ही देर मे हो जायेगा क्योकि आज मैं किसी से लुक छिप के यहा नहीं आया हू बल्कि खुल्लमखुल्ला आया हू। मेरे साथ एक सिपाही और एक नौकर भी आया है जिन्हें मैं नीचे दर्वाजे पर इसलिए छोड आया

हू कि बिना मेरी मर्जी के किसी को ऊपर न आने दें।

बांदी (ताज्जुब से) हां!!

हरनन्दन (जोर देकर) हां! और आज मैं यहां बहुत रात तक बैठूंगा बल्कि तुम्हारा मुजरा भी सुनूंगा। डेरे पर मैं सभी से कह आया हू कि 'मैं बांदी के यहां जाता हू, अगर कोई जरूरत आ पड़े तो वहीं मुझे खबर देना।' मैं तो बाप का हुक्म पाते ही इस तरफ को रवाना हुआ और यहां पहुच कर बड़ी आजादी के साथ घूम रहा हू। आज से तुम मुझे अपना ही समझो और विश्वास रखो कि तुम बहुत जल्द अपने को किसी और ही रंग-ढंग मे देखोगी।

बांदी (खुशी से हरनन्दन के गले मे हाथ डाल के) यह तो तुमने बड़ी खुशी की बात सुनाई! मगर रुपये-पैसे की मुझे कुछ भी चाह नही है मैं तो सिर्फ तुम्हारे साथ रहने मे खुश हू चाहे तुम जिस तरह रखो।

हरनन्दन मुझे भी तुमसे ऐसी ही उम्मीद है। अब जहां तक जल्द हो सके तुम उस काम को ठीक करके पारसनाथ को जवाब दे दो और इस मकान को छोड़ कर किसी दूसरे आलीशान मकान मे रहने का बन्दोबस्त करो। अब मुझे सरला का पता लगाने की कोई जरूरत तो नही रही मगर फिर भी मैं अपने बाप को सच्चा किए बिना नही रह सकता जिसने मेहरबानी करके मुझे तुम्हारे साथ वास्ता रखने के लिए इतनी आजादी दे रखी है और तुम्हें भी इस बात का खयाल जरूर होना चाहिए। वे चाहते हैं कि सरला लालसिंह के घर पर पहुच जाय और तब लालसिंह देखें कि हरनन्दन सरला के साथ शादी न करके बांदी के साथ कैसे मजे मे जिन्दगी बिता रहा है।

बांदी जरूर ऐसा होना चाहिए! मैं आपसे वादा करती हू कि चार दिन के अन्दर ही सरला का पता लगाके पारसनाथ का मुंह काला करूंगी!

हरनन्दन (बांदी की पीठ पर हाथ फेरके) शाबाश!!

बांदी यद्यपि आपको अब किसी का डर नही रहा और बिल्कुल आजाद हो गए हैं मगर मैं आपको राय देती हू कि दो-तीन दिन अपनी आजादी को छिपाए रखिए जिसमे पारसनाथ से मैं अपना काम बखूबी निकाल लू।

हरनन्दन खैर जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूंगा, मगर इस बात का खूब समझ रखना कि आज से तुम हमारी हो चुकी, तुम्हारा बिल्कुल खर्च मैं अदा करूंगा और तुम्हें किसी के आगे हाथ फैलाने का मौका न दूंगा। आज से मैं तुम्हारा मुशाहरा मुकर्रर कर देता हूं और तुम भी गैरों के लिए अपने घर का दर्वाजा बन्द कर दो।

बांदी जो कुछ आपका हुक्म होगा मैं वही करूंगी और जिस तरह रक्खोगे रहूंगी। मेरा तो कुछ ज्यादे खर्च नहीं है और न मुझे रुपये-पैसे की लालच ही है मगर क्या करूं अम्मा के मिजाज से लाचार हूं और उनका हाथ भी जरा शाह-खर्च है।

हरनन्दन तो हर्ज ही क्या है, जब रुपये-पैसे की कुछ कमी हो तो ऐसी बातों पर ध्यान देना चाहिये। जब तक मैं मौजूद हूं तब तक किसी तरह की फिक्र तुम्हारे दिल में पैदा नहीं हो सकती और न तुम्हारा कोई शौक पूरा हुए बिना रह सकता है, अच्छा जरा अपनी अम्मा को तो बुला लाओ।

बांदी बहुत अच्छा, मैं खुद जाकर उन्हें अपने साथ ले आती हूं।

इतना कह कर बांदी हरनन्दन के मोढ़े पर दबाव डालती हुई उठ खड़ी हुई और कमर को बल देती हुई कोठड़ी के बाहर निकल गई। थोड़ी देर तक हमारे हरनन्दन बाबू को अपने विचार में डूबे रहने का मौका मिला और इसके बाद अपनी अम्माजान को लिए हुए बांदी आ पहुंची। बांदी हरनन्दन से कुछ दूर हट कर बैठ गई और बुढ़िया आफत की पुड़िया ने इस तरह बातें करना शुरू किया—

बुढ़िया खुदा सलामत रक्खे आले-आले मरातिब हों, मैं तो दिन-रात दुआ करती हूं, कहिए क्या हुक्म है ?

हरनन्दन बड़ी बी ! मैं तुमसे एक बात कहा चाहता हूं।

बुढ़िया कहिये, कहिये, क्या बांदी से कुछ बेअदबी हो गई है ?

हरनन्दन नहीं नहीं, बांदी बेचारी ऐसी बेअदब नहीं है कि उससे किसी तरह का रंज पहुंचे। मैं उससे बहुत खुश हूं और इसीलिए मैं उसे हमेशे अपने पास रखना चाहता हूं।

बुढ़िया ठीक है, अगर आप ऐसा अमीर इसे नौकर न रक्खेगा तो रक्खेगा कौन ? और अमीर लोग तो ऐसा करते ही हैं ! मैं तो पहिले ही

सोचे हुए थी कि आप ऐसे अमीर उठाईगीरों की तरह चूल्हा रखना पसन्द न करेंगे।

हरनन्दन मैं नही चाहता कि जिसे मैं अपना बनाऊ उसे दूसरे के आगे हाथ फैलाना पड़े या कोई दूसरा उसे उगली भी लगाव।

बुढ़िया ठीक है, ठीक है, भला ऐसा कब हो सकता है? जब आप की बदौलत मेरा पेट भरेगा तो दूसरे कम्बख्त को आने ही क्या दूगी। आप ही ऐसे सरदार की खिदमत मे रहने के लिए तो हजारों रुपै खच करके मैंने इसे आदमी बनाया है तालीम दिलवाई है, और सच तो यों है कि यह आपके लायक है भी। मैं बडे तरद्दुद मे पडी रहती थी और सोचती थी कि यह ता दिन-रात आपके ध्यान में डूबी रहती है और मैं कर्ज के बोझ से दबी जा रही हू, आखिर काम कैसे चलेगा ? चलो अब मैं हलकी हुई, आप जानें और बादी जाने इसकी इज्जत-हुरमत सब आपके हाथ मे है।

हरनन्दन भला बताओ तो सही कितने रुपै महीने मे तुम्हारा अच्छी तरह गुजर हो सकता है ?

बुढ़िया ऐ हुजूर! भला मैं क्या बताऊ ? आपसे कौन-सी बात छिपी हुई है ? घर मे दस आदमी खाने वाले ठहरे, तिस पर महगी के मारे नाकों में दम हो रहा है। हाथ का फुटकर खच अलग ही दिन-रात परेशान किये रहता है। अभी कल की बात है कि छोटे नवाब साहब इसे दो सौ रुपै महीना देने को राजी थे, मगर नाच-मुजरा सब बन्द करने को कहते थे, मैंने मजूर न किया क्योंकि नाच-मुजरे से सैंकडो रुपये आ जाते है तब कही घर का काम मुश्किल से चलता है, खाली दो सौ रुपये से क्या हो सकता है।

हरनन्दन खैर नाच-मुजरा तो मेरे वक्त मे भी बन्द करना ही पड़ेगा मगर आदत बनी रहने के खयाल से खुद सुना करूगा और उसका इनाम अलग दिया करूगा। अभी तो मैं इसके लिए चार सौ रुपये महीने का इन्तजाम कर देता हू फिर पीछे देखा जायगा। मैंने अपना इरादा और अपने बाप का हाल भी बादी से कह दिया है, तुम सुनोगी तो खुश होवोगी। (बीस अशर्फियां बुढिया के आगे फेंक कर) लो इस महीने की तनखाह पेशगी दे जाता हू। अब तुम्हे कोई दूसरा आलीशान मकान भी किराए ले लेना

चाहिए जिसका किराया मैं अलग से दूंगा ।

बुढिया (अशर्फिया का खुशी-खुशी उठा कर) बस-बस, बस, इतने म मेरे घर का खच बखूबी चल जायगा, नाच-मुजरे की भी जरूरत न रहेगी। बाकी रहा गहना-कपडा, सो आप जानिए और बादी जाने, जिस तरह रखियेगा रहेगी। अब मैं एक ही दो दिन मे अपना और बादी का गहना बेच कर कर्जा भी चुका देती हू, क्योकि ऐसे सरदार की खिदमत मे रहने वाली बादी के घर किसी तगादगीर का आना अच्छा नही है और मैं यह बातें पसन्द नहीं करती।

इतना कह कर बुढिया उठ गई और हरनन्दन बाबू ने उसकी आखिरी बात का कुछ जवाब न दिया।

बुढिया के चले जाने के बाद घण्टे भर तक हरनन्दन बादी के बनावटी प्यार और नखरे का आनन्द लेते रहे और इसके बाद उठ कर अपने डेरे की तरफ रवाना हुए।

दिन आधे घण्टे से ज्यादे बाकी है। आसमान पर कही-कही बादल के गहरे टुकडे दिखाई दे रहे है और साथ ही इसके बरसाती हवा भी इस बात की खबर दे रही है कि यही टुकडे थोडी देर मे इकट्ठे होकर जमीन को तरा जोर कर देंगे। इस समय हम अपने पाठको को जिस बाग मे ले चलते है वह एक तो मालियो की कारीगरी और शौकीन मालिक की निगरानी तथा मुस्तैदी के सबब खुद ही रौनक पर रहा करता है, दूसरे, आजकल क मौसिम बर्सात ने उसके जीवन को और भी उभाड रक्खा है। यह बाग जिसके बीच मे एक सुन्दर कोठी भी बनी हुई है, हमारे हरनन्दन बाबू के सच्चे और दिली दोस्त रामसिंह का है और इस समय वे स्वय हरनन्दन बाबू क हाथ मे हाथ दिए और धीरे-धीरे टहलते हुए इस बाग के सुन्दर गुलबूटे और क्यारियो का आनन्द ले रहे हैं। देखने वाला तो यही कहेगा कि 'ये दोनो मित्र इस दुनिया का सच्चा सुख लूट रहे है' मगर नही, इस समय ये दोनो एक भारी चिन्ता मे डूबे हुए है और किसी कठिन मामले की कारवाई पर विचार कर रहे है जो कि आगे चल कर उनकी बातचीत से आपको मालूम होगा।

हरनन्दन तुम कहते तो हो मगर ज्यादं खुल चलना भी मुझे पसन्द नही है।

रामसिह ज्यादे खुल चलना जमाने की निगाह म नही सिफ बादा और पारसनाथ की निगाह में।

हरनन्दन हा, सो तो होगा ही और होता भी है मगर इस बात का खबर पहिले ही बाबू लालसिह को ऐसी खूबी के साथ हो जानी चाहिए कि उनके दिल मे रज और शक को जगह न मिलन पावे और वे अपनी जान की हिफाजत का पूरा-पूरा बन्दोबस्त भी कर रक्खें बल्कि मुनासिब तो यह है कि वे कुछ दिन के लिए मुर्दों में अपनी गिनती करा लें।

रामसिह (आवाज मे जोर दे कर) बशक एसा ही होना चाहिए। यह बात परसों ही मेरे दिल मे पदा हुई थी और इस मामले पर दो दिन तक मैंने अच्छी तरह गौर करके कई बातें अपन पिता स आज ही सवेरे कही भी है। उन्होंने भी मेरी बात बहुत पसन्द की और वादा किया कि कल लालसिह से मिलने के लिए जायगे और वहा पहुचने के पहिले चाचा जी (कल्याणसिह) से मिल कर अपना विचार भी प्रगट कर देंगे।

हरनन्दन हा तब कोई चिन्ता नहीं है, यद्यपि लालसिह बडा उजड्डी और जिद्दी आदमी है परन्तु आशा है कि चाचाजी (रामसिह के पिता) की बातें उसके दिल मे बठ जायगी।

रामसिह आशा ता ऐसी ही है। हा मै यह कहना ता भल ही गया कि आज मैं महाराज से भी मिल चुका हू। ईश्वर की कृपा से जो कुछ मैं चाहता था महाराज न उसे स्वीकार कर लिया और तुम्हे बुलाया भी है। सच तो यो है कि महाराज मुझ पर बडी ही कृपा रखते है।

हरनन्दन नि सदेह ऐसा ही है और जब महाराज से इतनी बातें हो चुकी हैं तो हम अपना काम बडी खूबी के साथ निकाल लेग। अच्छा मैं एक बात तुमसे और कहूगा।

रामसिह वह क्या?

हरनन्दन एक आदमी एसा होना चाहिए जिस पर अपना विश्वास हो और जो अपन तौर पर जाकर बादी के यहा नौकरी कर ले और उस का एतबारी बन जाए।

रामसिंह ठीक है, मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। मैं अपने असामियो ही मे से बहुत जल्द किसी ऐसे आदमी का बन्दोबस्त करूगा। भरकस किसी औरत ही का बन्दोबस्त किया जाएगा। (कुछ सोच कर) मगर मेरे यार! इस बात का खुटका मुझे हरदम लगा रहता है कि कहीं बादी तुम्हें अपने काबू में न कर ले! देखा चाहिए, इस कालिख से तुम अपने पल्ले को कहा तक बचाए रहते हो!

हरनन्दन मैं दावे के साथ तो नहीं कह सकता मगर नित्य सवेरे उठते ही पहिले ईश्वर से यही प्राथना करता हू कि मुझे इस बुरी हवा से बचाए रहियो।

रामसिंह ईश्वर ऐसा ही करे! (आसमान की तरफ देख कर) बादल तो बेहतर घिरे आ रहे हैं।

हरनन्दन हा चलो, कोठी की छत पर बैठ कर प्रकृति की शोभा देखें।

रामसिंह अच्छी बात है, चलो।

दोनो मित्र धीरे-धीरे बातें करते हुए कोठी की तरफ रवाना हुए।

रात दो घण्टे से कुछ ज्यादे जा चुकी है। लालसिंह अपने कमरे में अकेला बठा कुछ सोच रहा है। सामने एक मोमी शमादान जल रहा है तथा कलम-दवात और कागज भी रक्खा हुआ है। कभी-कभी जब कुछ खयाल आ जाता है, तो उस कागज पर दो-तीन पक्तिया लिख देता है और फिर कलम रख कर कुछ सोचने-विचारने लगता है। कमरे के दर्वाजे बन्द हैं और पखा चल रहा है जिसकी डोरी कमरे से बाहर एक खिदमतगार के हाथ मे है। यकायक पखा रुका और लालसिंह ने सर उठा कर सदर दर्वाजे की तरफ देखा। कमरे का दर्वाजा खुला और उसने अपने पखा खैंचने वाले खिदमतगार को हाथ मे एक पुर्जा लिए हुए कमरे के अन्दर आते देखा।

खिदमतगार ने पुर्जा लालसिंह के आगे रख दिया जिसने बड़े गौर से पुर्जा पढने के बाद पहिले तो नाक-भौं चढाया तथा फिर कुछ सोच-विचार कर खिदमतगार से कहा, "अच्छा, आने दे।" इतना कह उसने वह कागज जिस पर लिख रहा था उठा कर जेब में रख लिया।

खिदमतगार चला गया और उसके बाद ही सूरजसिंह ने कमरे के

अन्दर पैर रखा। उन्हें देखते ही लालसिंह उठ खड़ा हुआ और मजबूरी के साथ जाहिरी खातिरदारी का बर्ताव करके साहब-सलामत के बाद अपने पास बैठा लिया। इस समय सूरजसिंह अपनी मामूली पौशाक तो पहिरे हुए थे मगर ऊपर से एक बड़ी स्याह चादर में अपने को ढाके हुए थे।

लाल० आज तो आपने मुझ बदनसीब पर बड़ी कृपा की!

सूरज० (मुस्कराते हुए) बदनसीब कोई दूसरा ही कम्बख्त होगा मैं तो इस समय एक खुशनसीब और बुद्धिमान आदमी की बगल में बैठा हुआ बातें कर रहा हूं जिससे मिलने के लिए आज चार दिन से सोच विचार में पड़ा हुआ था।

लाल० (कुछ चौंक कर) ताज्जुब है कि आप एक ऐसे आदमी को खुशनसीब कहते हैं जिसकी एकलौती लड़की ठीक ब्याह वाले दिन इस बदर्दी के साथ मारी गई है कि जिसकी कैफियत सुनने से दुश्मन को भी रंज हो, और साथ ही इसके जिसके समधी तथा दामाद की तरफ से ऐसा बर्ताव हुआ हो जिसके बर्दाश्त की ताकत कमीने से कमीना आदमी भी न रख सकता हो!

सूरज० यह सब आपका भ्रम है और जो कुछ आप कह रहे हैं उसमें से एक बात भी सच नहीं है।

लाल० (आश्चर्य से) सो कैसे? क्या सरला मारी नहीं गई? और क्या उस समय आपके हरनन्दन बाबू बांदी रण्डी के मकान में खुशियां मनाते हुए [illegible]।

सूरज० (बात काट के) नहीं नहीं, नहीं! ये बातें बिल्कुल झूठ हैं और आज यही साबित करने के लिए मैं आपके पास आया हूं।

लाल० कहने के लिए तो मुझे भी लोगों ने यही कहा था कि सरला के मरने में शक है, मगर बिना किसी तरह का सबूत पाये ऐसी बातों का विश्वास कब हो सकता है!

सूरज० ठीक है, मगर मैं बिना किसी तरह का सबूत पाये ऐसी बात पर जोर देने वाला आदमी भी तो नहीं हूं।

लाल० तो क्या किसी तरह का सबूत इस समय आपके पास मौजूद

भी है जिससे मुझे विश्वास हो जाए कि सरला मारी नहीं गई और हरनन्दन ने जो कुछ किया वह उचित था ?

सूरज० जी हा।

इतना कहकर सूरजसिंह ने एक पुर्जा निकाल कर लालसिंह के आगे रख दिया। लालसिंह ने उस पुर्जे को बडे गौर से पढा और ताज्जुब मे आकर सूरजसिंह का मुह देखने लगा।

सूरज० कहिए, इन हरूफो को आप पहचानते है ?

लाल० बेशक ! बहुत अच्छी तरह पहचानता हू !

सूरज० और इसे आप मेरी बातो का सबूत मान सकते ह या नही ?

लाल० मानना ही पडेगा, मगर सिर्फ एक बात का सबूत।

सूरज० दूसरी बात का सबूत भी आप इसी को मानेंगे मगर उसके बारे म मुझे कुछ जुबानी भी कहना होगा।

लाल० कहिए, कहिए, मैं आपकी बातो पर विश्वास करूगा, क्योकि आप प्रतिष्ठित पुरुष है और नि सन्देह आपको मेरी भलाई का खयाल है। इस समय यह पुर्जा दिखा कर आपने मेरे साथ वैसा ही सलूक किया जैसा समय की वर्षा का सूखी हुई खेती के साथ होता है।

सूरज० यह सुनकर आपको ताज्जुब होगा कि बादी के पास हरनदन के बैठने का कारण यह पुर्जा है। इस तत्व को बिना जाने ही लोगो ने उसे बदनाम कर दिया। यो तो आपको भी उसके मिजाज का हाल मालूम ही है, मगर ताज्जुब ह कि आप भी बिना सोचे-विचारे दुश्मनो की बातो पर विश्वास कर बैठे !

लाल० बेशक ऐसा ही हुआ और लोगो न मुझे धोखे म डाल दिया। तो क्या यह पुर्जा हरनन्दन के हाथ लगा था ?

सूरज० जी हा जिस समय महफिल में नाचने के लिए बादी तैयार हो रही थी, उसी समय उसके कपडे मे से गिरे हुए इस पुर्जे को हरनन्दन के नौकर ने उठा लिया था। वह नौकर हिन्दी अच्छी तरह पढ सकता ह अस्तु उसने जब यह पुर्जा पढा तो ताज्जुब मे आ गया। यह पुर्जा तो उसने फौरन लाकर अपने मालिक को दे दिया और उसी समय महफिल का रग बदरग हो गया जैसा कि आप सुन चुके हैं। अब आप ही बताइए कि इस

पुर्जे को पढ के हरनन्दन को सब के पहिले क्या करना उचित था ?

लाल० (कुछ सोचकर) ठीक है, उस समय बादी के पास जाना ही हरनन्दन का उचित था क्योंकि वह नीति-कुशल लडका है, इस बात को मैं खूब जानता हू।

सूरज० केवल उसी दिन नही बल्कि जब तक हमारा मतलब न निकल तब तक हरनन्दन का बादी स मेल रखना ही चाहिए।

लाल० ठीक है मगर यह काम तो हरनन्दन के अतिरिक्त कोई और आदमी भी कर सकता है।

सूरज० बेशक कर सकता है मगर वही जिस उतनी ही फिक्र हो जितनी हरनन्दन को। इसके अतिरिक्त बादी को जो आशा हरनन्दन से हो सकती है वह किसी दूसरे से कैसे हो सकती है ?

इस बात का जवाब तो लालसिंह न कुछ न दिया मगर सूरजसिंह का पजा, उम्मीद भरी खुशी और मुहब्बत से पकड के बोला "मेरे मेहरबान सूरजसिंह जी ! आज आपका आना मेरे लिए बडा ही मुबारक हुआ। यदि आप आकर इन सब भेदो को न खोलते तो न मालूम मेरी क्या अवस्था होती और मेरे नालायक भतीजे किस तरह मेरी हड्डिया चबाते। उडती हुई खबरो और भतीजो की रगीन बातो न तो मुझे एकदम से उल्लू बना दिया और बेचारे हरनन्दन की तरफ से बडे-बडे शक मेरे दिल म बठा दिए मगर आज आपकी मेहरबानी ने उन स्याह धब्बो को मिटाकर मेरा दिल हरनन्दन की तरफ से साफ कर दिया। आज हरनन्दन और बादी को हाथ म हाथ दिए मेरे बाजार टहलता हुआ भी अगर कोई मुझे दिखा द तो भी मेरे दिल मे उसकी तरफ से कोई शक न बैठेगा, हा बेचारी सरला का पता लगना-न लगना यह आपकी मेहरबानी और मेरे भाग्य के आधीन है।"

सूरज बेचारी सरला का पता लगेगा और जरूर लगेगा। हरनन्दन ने खुद मुझे अपने बाप के सामने कहा है कि बादी ने सरला को दिखा देने का वादा किया है और इस बात का भी निश्चय दिला दिया है कि सरला पारसनाथ के कब्जे मे है।

लाल० (चौंककर) पारसनाथ के कब्जे म !!

सूरज० जी हा। इस बात का निश्चय कर लेने के बाद हरनन्दन

नहीं चाहता था कि वादी के घर मे कभी पैर रखे, मगर उसके बाप कल्याणसिंह ने उसे बहुत समझाया और बादी के साथ चालबाजी करने का रास्ता बताया तथा इस काम मे मैंने भी उसे ताकीद की, तब लाचार होकर उसने बादी के यहा आना-जाना शुरू किया और ऐसा करने के बाद उसे बहुत सी बातो का पता लगा।

लाल० (कुछ सोच कर) बेशक ऐसा ही होगा, क्योंकि इस काम म पारसनाथ ही मुझसे ज्यादे बातें किया भी करता है।

सूरज० अगर आप मुनासिब समझें तो वे बातें भी कह सुनाव जो पारसनाथ ने इस विषय मे आपसे कही हैं क्योंकि मैं उन बातो स हरनन्दन को होशियार करूगा और तब वह अपना काम और भी जल्दी तथा खबसूरती के साथ निकाल सकेगा।

लाल० बेशक मैं उसकी बातें आपको सुनाऊगा और आपसे राय करूगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए।

इतना कहकर लालसिंह ने पारसनाथ की बिल्कुल बातें जो ऊपर के बयानो में लिखी जा चुकी ह सूरजसिंह से बयान की और इसके बाद पूछा कि 'अब मुझे क्या करना चाहिए?'

सूरज० इस बात को तो आप भी समझते होगे कि रंडिया कसी चालबाज और शैतान होती हैं तथा बडे-बडे घरों को थोडे ही दिनो म बर्बाद कर देने की शक्ति उनम कितनी ज्यादे होती है, क्योंकि आप अपनी नौजवानी का कुछ हिस्सा इन लोगो की सोहबत मे गवा कर हर तरह से होशियार हो चुके हैं।

लाल० जी हा, मैं इन कम्बख्तो की करतूतो से खूब वाकिफ हू। ऐसे ही कोई सरस्वती के कृपा पात्र होते हैं जो इनके फन्दे मे अपने को बचा ले पाते हैं नही तो केवल लक्ष्मी के कृपापात्रो को तो वे लोग लक्ष्मी का वाहन ही बना कर दम लेती हैं। तिसम भी उन रण्डियो मे तो ईश्वर ही बचावे तो कोई बच सकता है जिनके यहा नायिकाओं[1] की प्रधानता बनी हुई हो।

1 रंडियों की बुढ़िया मा-नानी इत्यादि नायिका कहलाती है।

सूरज० बस तो इसी से आप समझ लीजिए कि बांदी के यहां जब पारसनाथ और हरनंदन दोनों जाते हैं तो बांदी इस बात को जरूर चाहेगी कि जहां तक हो सके दोनों ही से रुपये वसूल करे मगर उसे ज्यादे पक्ष उसी का रहेगा जिससे ज्यादे आमदनी की सूरत देखेगी।

लाल० बेशक!

सूरज० अस्तु जब तक वह पारसनाथ से रुपये वसूल करने का मौका देखेगी तब तक उसको अपना दुश्मन बनाने में भी जहां तक होगा टालमटोल करती ही रहेगी, इसलिए सब के पहिले काम वही करना उचित है जिसमें पारसनाथ रुपये के बारे में बार-बार बांदी से झूठा बनता रहे

लाल० (बात काट कर) ठीक है ठीक है मैं आपका मतलब समझ गया वास्तव में ऐसा होना ही चाहिए। हां, मुझे एक और भी बहुत ही जरूरी बात पर आपसे सलाह करनी है।

सूरज० मुझे भी अभी आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं।

इसके बाद सरजसिंह और लालसिंह में घण्टे भर तक बातचीत होती रही जिसके अन्त में दोनों आदमी एक साथ उठ खड़े हुए। लालसिंह ने अपने दबागी कपड़े खूंटी पर से उतार कर पहिरे और हाथ में एक मोटा सा डण्डा लिया जिसके अन्दर गुप्ती बंधी हुई थी, इसके बाद दोनों आदमी कमरे के बाहर निकल कर किसी तरफ को रवाना हो गए।

पारसनाथ अपने चाचा का हाल चाल की खबर बराबर लिया करता था। उसने अपने ढंग पर कई ऐसे आदमी मुकर्रर कर रखे थे जो कि लालसिंह का रत्ती-रत्ती हाल उसके कानों तक पहुंचाया करते और जैसा कि प्रायः कुपात्रों के संगी साथी किया करते हैं उसी तरह उन खबरों में बनिस्बत सच के झूठ का हिस्सा बहुत ज्यादे रहा करता था।

रात को लालसिंह के पास सूरजसिंह के जाने की इत्तिला भी पारसनाथ को हो गई, मगर उसमें दो बातों का फर्क पड़ गया। एक तो उसको जासूस इस बात का पता न बता सका कि आने वाला कौन था क्योंकि सूरजसिंह अपने को छिपाए हुए लालसिंह तक पहुंचे थे और इस बात को

गुमान भी किसी को नहीं हो सकता था कि सूरजसिंह लालसिंह के पास आवेंगे, दूसरे जब सूरजसिंह के साथ लालसिंह बाहर चले गए तब पारस-नाथ को इस बात की खबर लगी।

शैतानी का जाल फैलाने वाला हरदम चौकन्ना ही रहा करता है, अस्तु पारसनाथ का भी वही हाल था। खबर पाते ही वह लालसिंह की तरफ गया मगर कमरे के दर्वाजे पर पहुंचते ही उसने सुना कि 'लालसिंह किसी के साथ कहीं बाहर गए हैं।' थोड़ी देर तक उनके आने का इंतजार किया, जब वे न आए तो लौट कर अपने स्थान पर चला गया मगर उस रात का प्रबन्ध करता गया कि जब लालसिंह लौट कर आवें तो उसे खबर मिल जाय।

तरह-तरह के सोच और विचारों ने उसकी आंखों में नींद को आने न दिया और वह तीन पहर रात जाने तक भी अपनी चारपाई पर करवटें बदलता रहा। इस बीच में लालसिंह के लौट आने की भी उसे इत्तिला न मिली, जिससे उसके दिल का खुटका भी और बढ़ता ही गया। आखिर तरद्दुदों और फिक्रों से हाथापाई करती हुई निद्रा ने उसकी आंखों में अपना दखल जमा लिया और वह तीन चार घण्टे भर के लिए बेखबर सो गया। जब उसकी आंख खुली तो दिन कुछ ज्यादे चढ़ चुका था।

आंख खुलने के साथ ही वह घबड़ा कर उठ बैठा और धीरे-धीरे यह बुदबुदाता हुआ अपनी कोठरी के बाहर निकला, 'आफ बड़ी देर हो गयी। चाचा साहब कभी के आ गए होंगे!' उसी समय उसके नौकर ने सामने पड़कर उसे इत्तिला दी, 'सर्कार (लालसिंह) बरामदे में बैठे तम्बाकू पी रहे हैं।'

जल्दी जल्दी हाथ-मुंह धोकर वह लालसिंह की तरफ रवाना हुआ और जब उनके बरामदे में पहुंचा तो उन्हें कुर्सी पर बैठे तम्बाकू पीते देखा। अदब के साथ झुक कर सलाम करने के बाद एक किनारे खड़ा हो गया।

लालसिंह की कुर्सी के पास ही एक छोटी सी चौकी बिछी हुई थी जिस पर इशारा पाकर पारसनाथ बैठ गया और यह बातचीत होने लगी—

लाल०—रात को तुम कहां चले गए थे? जब हमने तुमको बुलाया

तब तुम घर में न थे'।

पारस० (ताज्जुब से) मैं तो रात को घर में ही था[1] किस समय आपने याद किया था ?

लाल० उस समय मैं अपने तरद्दुदों में डूबा हुआ था इसलिए ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि कितनी रात गई होगी ।

पारस० ठीक है, तो बहुत रात न गई होगी, क्योंकि जब मैं लौट कर घर आया था तब पहर भर से ज्यादे रात न गई थी ।

लाल० शायद ऐसा ही हो ।

पारस० मैं रात को आपके पास आया भी था मगर सुना कि आप किसी अनजान आदमी के साथ बाहर गए हैं ।

लाल० उस समय तुम क्यों आए थे ?

पारस० दो-एक नई खबरें जो कल मुझे मिली थीं वही आपको सुनाने के लिए आया था । मैंने सोचा था कि अगर जागते हों तो इसी समय दिल का बोझ हलका कर लूं ।

लाल० वह कौन सी खबर थी ?

पारस० उस खबर का असल मतलब यही था कि आज रात हरनंदन को रंडी के यहां बैठे आपको दिखा सकूंगा ।

लाल० (कुछ सोच कर) बात तो ठीक है, मगर मैं सोचता हूं कि हरनंदन को रण्डी के यहां देखने से मेरा मतलब ही क्या निकलेगा ?

पारस० (कुछ उदास होकर) भला मेरे कहने का आपको विश्वास न हो जायगा ! और मैंने जो आपकी आज्ञा से बहुत कोशिश करके और कई आदमियों को बहुत कुछ देने का वादा करके इस काम का बन्दोबस्त किया है वह ।

लाल० (लापरवाही के ढंग पर) खैर देने-लेने की कोई बात नहीं है उन लोगों को जिनसे तुमने वादा किया है, जो कुछ कहोगे यदि उचित होगा तो दे दिया जायगा और जब हम लोग उनसे काम ही न लेंगे या हरनंदन को रण्डी के घर देखने ही न जायंगे तो उन्हें कुछ देने की भी

[1] यह बात लालसिंह ने बिलकुल झूठ कही ।

जरूरत ही क्या है?

पारस० आपको अख्तियार है उसे देखने जाय या न जाय, मगर वे लोग तो अपना काम कर ही चुके हैं, और जब उन्हें कुछ देना पड़ेगा ही तो जरा सी तक्लीफ करने मे हर्ज ही क्या है? और कुछ नही तो मुझे आपके आगे सच्चे बनने का ।

लाल० (बात काट कर) केवल हरनन्दन को रण्डी के यहा दिखाकर तुम सच्चे नहीं बन सकते। तुमने हमें सरला के जीते रहने का विश्वास दिलाया है।

पारस० ठीक है मगर मैंने साथ ही इसके यह भी तो कहा था कि सरला अगर मारी गई तो, या जीती है तो, मगर उसके साथ बुराई करने वाला हरनन्दन ही है। मैं सरला को भी खोज निकालने का बन्दोबस्त कर रहा हू मगर उसके पहिले हरनन्दन की बदचलनी दिखा कर कुछ तो अपने बोझ से हलका हो जाऊंगा।

लाल० हा सो हो सकता है, मगर मेरा कहना यह है कि जब तक सरला का ठीक पता न लग जाय तब तक मैं हरनन्दन का बदचलनी देख कर भी क्या जुर्म लगा सूगा? बिना सबूत के किसी तरह का शक भी तो उस पर नही कर सकता! क्योंकि उसका एक दोस्त ऐसा आदमी है जिसकी महाराज के यहा बड़ी इज्जत है, उसका खयाल भी तो करना चाहिए। हा, अगर सरला का पता लगता हो तो जो कुछ कहो देने या खर्च करने के लिए मैं तैयार हूं।

पारस० सरला का पता भी शीघ्र ही लगा चाहता है। अभी कल ही उन लोगो ने मुझे सरला के जीते रहने का विश्वास दिलाया है जिन लोगो ने आज हरनन्दन को रण्डी के यहा दिखा देने का प्रबन्ध किया है। यदि उनका पहिला उद्योग व्यर्थ कर दिया जायगा तो आगे किसी काम मे उनका जी न लगेगा और न फिर वे मेरे काम का कोई उद्योग ही करेंगे, बल्कि ताज्जुब नही कि मेरी बेइज्जती करने पर उतारू हो जायं।

लाल० ठीक है, रुपया ऐसी ही चीज है। रुपये के वास्ते लोग सभी कुछ कर गुजरते हैं, भले-बुरे पर ध्यान नहीं देते। लेकिन जिस तरह वे लोग रुपये के लिये तुम्हारी बेइज्जती कर सकते है उसी तरह तुम भी तो अपना

रुपया बचाने के लिए बइज्जती सह सकता हूं। मगर इस कहने का मतलब यह नही है कि मैं रुपये खर्च करने से भागता हू या रुपये को सरला से बढ के प्यार करता हू, मगर हां, व्यर्थ रुपये खर्च करना भी बुरा समझता हू। यो तो तुम जो कुछ कहोगे उन लोगो के लिए दूगा, मगर घडी घडी मेरे दिल म यही बात पैदा होती ह कि रडी के यहा हरनन्दन को देख लेने से ही मेरा क्या मतलब निकलेगा ? मान लिया जाय कि उसकी बदचलनी का सबूत मिल जायगा, तो मैं बिना कष्ट उठाए और बिना रुपये बर्बाद किए ही अगर यह मान लू कि हरनन्दन बदचलन है तो इसमे नुकसान ही क्या है ? बल्कि फायदा ही है। इसके अतिरिक्त मैं एक बात और भी सोचता हू, वह यह कि यदि मैंने रडी क मकान पर जाकर हरनन्दन को देख लिया और उसने मुझे अपने सामने देख कर किसी तरह की परवाह न की या दो एक शब्द बेअदबी के बोल उठा तो मुझे कितना रञ्ज होगा ?

अपने चाचा लालसिंह की दोरंगी और चलती-फिरती बातें सुनकर पारसनाथ कुछ नाउम्मीद और उदास हो गया। उसके दिल मे तरह-तरह के खुटके पैदा होने लगे। लालसिंह की बातो से उसके दिली भेद का कुछ पता नही चलता था और न रुपये मिलने की ही पूरी-पूरी उम्मीद हो सकती थी, अस्तु आज बादी को क्या देंगे, इस विचार न उसे और भी दुखी किया तथापि बलवती आशा ने उसका पीछा न छोडा और वह जल्दी के साथ कुछ विचार कर बोला "आप तो हरनन्दन को बडा नेक और सुजन समझते है, तो क्या उससे ऐसी बेअदबी होने की भी आशा करते ह ?'

लाल० जब तुम हमारे विचार को रद करके कहते हो कि वह नालायक और ऐयाश है तथा इस बात का सबूत देने के लिए भी तैयार हो तो अगर मैं तुम्हे सच्चा मानूगा तो जरूर दिल मे यह बात पदा होगी ही कि अगर वह मेरे साथ बेअदबी का बर्ताव करे तो ताज्जुब नही।

पारस० (कुछ लाजवाब होकर) खैर आप बडे हैं आपसे बहस करना उचित नही समझता, जो कुछ आप आज्ञा देंगे मैं वही करूगा।

लाल० अच्छा इस समय तुम जाओ, मैं स्नान-पूजा तथा भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर इस विषय पर विचार करूगा, फिर जो कुछ निश्चय होगा तुम्हें बुलवा कर कहूगा।

उदास मुख पारसनाथ अपने चाचा के पास से उठ कर चला गया और उसके रौब तथा बातो की उलझन म प॰ कर यह भी पूछ न सका कि आप रात को किसके साथ कहा गए थे।

अब हम अपने पाठको को एक ऐसी कोठडी मे ले चलते है जिसे इस समय कैदखाने के नाम से पुकारना बहुत उचित होगा, मगर यह नही कह सकते कि यह कोठडी कहा पर और किसके आधीन है तथा इसके दर्वाजे पर पहरा देने वाले कौन व्यक्ति हैं।

यह कोठडी लम्बाई मे पन्द्रह हाथ और चौडाई मे दस हाथ से ज्यादा न होगी। बेचारी सरला को हम इस समय इसी कोठडी मे हथकडी-बेडी म मजबूर देखते हैं। एक तरफ कोने मे जलते हुए चिराग की रोशनी दिखा रही है कि अभी तक उस बेचारी के बदन पर वे ही साधारण कपडे मौजूद हैं जो ब्याह वाले दिन उसके बदन पर थे या जिन कपडो के सहित वह अपने प्यारे रिश्तेदारो से जुदा की गई थी। हा उसके बदन मे जो कुछ जेवर उस समय मौजूद थे उनमे से आज एक भी दिखाई नही देत। यद्यपि इस वार्दात को गुजरे अभी बहुत दिन नही हुए मगर देखने वाला की आखो म इस समय वह वर्षों की बीमार होती है। शरीर सूख गया है और अन्धेरी कोठडी मे बन्द रहने के कारण रग पीला पड गया है। उसके तमाम बदन का खून पानी होकर बडी-बडी आखो की राह बाहर निकल गया और निकल रहा है। उसके खूबसूरत चेहरे पर इस समय डर के साथ ही साथ उदासी और नाउम्मीदी भी छाई हुई है और वह न मालूम किस खयाल या किस दर्द की तकलीफ से अधमुई होकर जमीन पर लेटी है। यद्यपि वह वास्तव मे खूबसूरत, नाजुक और भोली भाली लडकी है मगर इस समय या इस दुर्दशा की अवस्था मे उसकी खूबसूरती का बयान करना बिल्कुल अनुचित-सा जान पडता है, इसलिए इस विषय को छोड कर हम असल मतलब की बातें बयान करते हैं।

सरला के हाथो मे हथकडी और पैरो मे बेडी पडी हुई है और वह केवल एक मामूली चटाई के ऊपर लेटी हुई आंचल से मुह छिपाये सिसक-सिसक कर रो रही है। हम नही कह सकते कि उसके दिल मे कैसे-कैसे

मयालात पर हात और मिटत ह आर वह किन विचारो मे डूबी हुई है। यकायक वह कुछ सोच कर उठ बैठी और इधर-उधर टहलती हुई धीर स बोली, "तो क्या जान न न मे लिए भी कोई तरकीब नही निकल सकती ?"

इसी समय उस कोठडी का दर्वाजा खुला और कई नकाबपोश एक नए कैदी को उस कोठडी के अन्दर डाल कर बाहर हो गय। कोठडी का दर्वाजा पुन उसी तरह स बन्द हो गया।

जब वह कैदी सरला क पास पहुचा तो सरला उसे देखकर चौकी और इस तरह उसकी तरफ झपटी जिससे मालूम होता था कि यदि सरला हथकडी से जकडी हुई न होती तो उस कैदी से लिपट कर खूब रोती, मगर मजबूरी थी इसलिए "हाय भैया !" कह कर उसके पैरो पर गिर पडन क सिवाय और कुछ न कर सकी। यह कैदी सरला का चचेरा भाई पारसनाथ था। उसने सरला क पास बैठ कर आसू बहाना शुरू किया और सरला ता एसा रोई कि उसकी हिचकी बध गई। आखिर पारस न उसे समझा-बुझा कर शान्त किया और तब उन दोनो मे यो बातचीत होने लगी—

सरला भैया ! क्या तुम लोगो को मुझ पर कुछ भी दया न आई ? और मेरे पिता भी मुझ एकदम भूल गय जो आज तक इस बात की खोज तक न की कि सरला कहा और किस अवस्था म पडी हुई ह ?

पारस० मेरी प्यारी बहिन सरला ! क्या कभी ऐसा हो सकता था कि हम लोगो को तेरा पता लगे और हम लोग चुपचाप बैठे रहे ? मगर क्या किया जाय, लाचारी से हम लोग कुछ कर न सके ! जब स तू गायब हुई है तभी से मैं तेरी खोज मे लगा था, मगर जब मुझे तेरा पता लगा तब मैं भी तेरी तरह उन्ही दुष्टो का कैदी बन गया जिन्होने रुपये की लालच म पड कर तुझे इस दशा को पहुचाया।

सरला० मैं तो अभी तक यही समझे हुई थी कि तुम्ही न मुझे इस दशा को पहुचाया, क्योकि न तुम मुझे बुला कर चोर-दर्वाजे के पास ले जात और न मैं इन दुष्टो के पजे म फसती।

पारस० राम राम राम, यह बिल्कुल तेरा भ्रम है ! मगर इसमे तेरा कुछ कसूर नही। जब आदमी पर मुसीबत आती है तब वह घबडा जाता है,

यहा तक कि उस अपन-पराय की मुहब्बत का भी कुछ खयाल नही रहता और वह दुनिया-भर को अपना दुश्मन समझने लगता ह। अगर तूने मेरे बारे मे कुछ शक किया तो यह कोई ताज्जुब की बात नही है।

सरला मगर नही, अब मुझे तुम पर किसी तरह का शक न रहा लकिन तुम यह बताओ कि आखिर हुआ क्या ?

पारस० वास्तव मे मैं चाचाजी की आज्ञानुसार तुम्हे बाहर की तरफ ले चला था, मगर मुझे इस बात की क्या खबर थी कि दवजिे ही पर दम-बारह दुष्ट मिल जायगे।

सरला - तब क्या मेरे पिता ही न ऐसा किया और उन्हाने ही इन दुष्टो को दर्वाजे पर मुस्तैद करके मुझे उस रास्त से बुलवाया था ?

पारस० हरे हरे हरे ! वे बेचारे तो तेरे बिना मुर्दे से भी बदतर हो रहे ह। जब से तू गायब हुई है तब से उनका ऐसा बुरा हाल हो गया है कि मैं कुछ बयान नही कर सकता।

सरला तब यह सब बखेडा हुआ ही कैसे ?

पारस० जब वे लोग तुझे जबदस्ती उठा कर घर से बाहर निकले तो मैंने उनका पीछा किया मगर दर्वाजे के बाहर निकलते ही उनमे से एक आदमी ने घूमकर मुझे ऐसा लट्ठ मारा कि चक्कर खाकर जमीन पर गिर पडा और दो घण्टे तक मुझे तनोबदन की सुध न रही। आखिर जब मैं होश म आया तो धीरे-धीरे चलकर चाचाजी के पास पहुचा और उनसे सब हाल कहा। बस उसी समय चारो तरफ रोना-पीटना मच गया, पचासो आदमी इधर-उधर तुम्हे खोजने के लिए दौड गए, तरह-तरह की कारवाइया होने लगीं। मगर सब व्यर्थ हुआ, न तो तुम्हारा ही पता लगा और न उन दुष्टों ही की कुछ टोह लगी। यह खबर तुम्हारे ससुराल वालो को भी पहुची और वहाँ भी खूब रोना-पीटना मच गया। मगर हरनन्दन पर इस घटना का कुछ भी असर न पडा और वह महफिल मे से उठकर बादी रण्डी के डेरे पर चला गया जो उसके यहा नाचने के लिए गई थी। सब लोगो ने उसे इस नादानी पर शर्मिन्दा करना चाहा तो उसने लोगो को ऐसा उत्तर दिया कि सब कोई अपने कान पर हाथ रखने लगे और उसका बाप भी उससे बहुत रज हो गया।

सरला (हरनन्दन की खबर सुन दुख और लज्जा से सिर नीचे करके) खैर यह बताओ कि आखिर मेरा पता तुम्हें कैसे लगा ?

पारस० मैं सब-कुछ कहता हू तुम सुनो तो सही। हा तो जब हरनदन की बात तुम्हारे पिता को मालूम हुई तो उन्हें बडा ही क्रोध चढ आया। उन्होने मुझे बुलाकर सब हाल कहा और यह भी कहा कि 'मुझे यह सब कारवाई उसी हरनन्दन की मालूम पडती है, अस्तु तुम पता लगाओ कि इसका असल भेद क्या है ? इस मामले मे जो कुछ सच होगा मैं तुम्हे दूगा।' बस उसी समय से मैंने अपनी जान हथेली पर रख ली और तुम्हें खोजने के लिए घर से बाहर निकल पडा। इस कारवाई मे क्या क्या तकलीफें उठानी पडी और मैंने कैसे-कैसे काम किए इसका कहना व्यर्थ है। असल यह कि मुझे शीघ्र इस बात का पता लग गया कि यह सब जाल हरिहरसिंह के फैलाये हुए हैं, जिसके साथ तुम्हारी वह मौसेरी बहिन 'कल्याणी' व्याही गई थी जो आज इस दुनिया मे तुम्हारा दुख देखने के लिए न रहकर बैकुण्ठधाम चली गई।

सरला मैंने हरिहरसिंह का क्या बिगाडा था, जो उसने मेरे साथ ऐसा सलूक किया ? मेरे पिता ने भी तो उसके साथ किसी तरह की बुराई नही की थी ?

पारस० ठीक है, मगर मैं इसका सबब भी तुमसे बयान करता हू, तुम सुनती चलो। तुम्हारे पिता ने जो वसीयतनामा लिखा है उसका हाल तो तुम्हें मालूम ही होगा ?

सरला हा मैं अपनी मा की जबानी उसका हाल सुन चुकी हू।

पारस० बस वही वसीयतनामा तुम्हारी जान का काल हो गया, और उसी रुपये की लालच मे पडकर हरिहर ने ऐसा किया।

सरला बहुत ही नेक, बुद्धिमान तथा पढी-लिखी लडकी थी। यद्यपि उसकी अवस्था कम थी मगर उसकी पतिव्रता और बुद्धिमान माता ने उसके दिल में नेकी और बुद्धिमानी की जड कायम कर दी थी और वह इसीलिए ऊची-नीची बातो को बहुत नहीं तो थोडा-बहुत अवश्य समझ सकती थी, मगर इतना होने पर भी वह न मालूम क्या सोचकर पूछ बैठी—"क्या ऐसा करने से हरिहर को मेरे बाप की दौलत मिल जाएगी?"

इसके जवाब में पारसनाथ ने कहा—

पारस हां मिल जायगी, अगर उसकी शादी तुम्हारे साथ हो जायगी तो !

सरला मगर उस हालत में तो उसमें से आधी दौलत तुम लोगों को भी मिलने की आशा हो सकती है।

पारस० (कुछ झेंपकर) हां, तुम्हारे पिता की लिखावट का मतलब तो यही है मगर हम लोग ऐसी दौलत पर लानत भेजते हैं जिसमें तुम्हारा और चाचाजी का दिल दुखे, हां, इतना जरूर कहेंगे कि जान से ज्यादे दौलत की कदर न करनी चाहिए और इस समय तुम्हारे हाथ में कम-से-कम चार आदमियों की जान तो जरूर है, अगर अपनी जान नहीं तो अपने प्यारे रिश्तदारों की जान का जरूर ही खयाल करना चाहिए।

सरला (कुछ चौंककर) मेरी समझ में न आया कि तुम्हारे इस कहने का मतलब क्या है ?

पारस० बस यही कि अगर तुम हरिहरसिंह के साथ ब्याह करना स्वीकार कर लोगी तो इस समय तुम्हारी, तुम्हारे पिता की, तुम्हारी माता की, और साथ ही इसके मेरी भी जान बच जाएगी और रुपया-पैसा तो हाथ-पैर का मैल है तथा यह बात भी मशहूर है कि लक्ष्मी किसी के पास स्थिर भाव से नहीं रहती, इधर-उधर डोला ही करती है।

सरला क्या हम लोगों में किसी और का दूसरा ब्याह भी होता है ! मैं तो दिल से समझे हुए हूं कि मेरी शादी हो चुकी ! हां, इसमें कोई सन्देह नहीं कि मैं अपनी जान समर्पण करके तुम लोगों की जान बचा सकती हूं, मगर उस ढंग से नहीं जिस ढंग से तुम कहते हो, क्योंकि मेरे पिता के जीते-जी न तो वह वसीयतनामा ही कोई चीज है और न किसी को उनकी दौलत ही मिल सकती है। नतीजा यही होगा कि जिस लालची को मैं धर्म त्याग करके स्वीकार कर लूंगी, वह मेरे बाप की दौलत शीघ्र पाने की आशा से मेरे पिता को अवश्य मार डालेगा और ताज्जुब नहीं कि अब भी उनके मारने का उद्योग कर रहा हो। हां एक दूसरी तरकीब से उन लोगों की जान अवश्य बच जाएगी जो मैं अच्छी तरह सोच चुकी हूं।

पारस० (बात काटकर) न मालूम तुम कैसी-कैसी अनहोनी बातें

सोच रही हो जिनका न सिर है न पैर !

सरला जो कुछ मैंने सोचा है वह बहुत ठीक है। मेरे साथ चाहे कितनी ही बुराई की जाय या मेरी बोटी-बोटी भी काट डाली जाय मगर मैं अपनी दूसरी शादी तो कदापि न करूंगी ! तुम मुझे यह नहीं समझा सकते कि यह दूसरी शादी नहीं है और न तुम्हारा समझाना मैं मान सकती हूं मगर हां मैं किसी के साथ शादी न करके भी अपने पिता की जान दो तरह से बचा सकती हूं और इसमें किसी तरह की कठिनाई भी नहीं है।

पारस० खैर और बातों पर तो पीछे बहस करूंगा पहिले यह पूछता हूं कि वे दोनों ढंग कौन से हैं जिनसे तुम हम लोगों की जान बचा सकती हो ?

सरला उनमें से एक ढंग तो मैं बता नहीं सकती मगर दूसरा ढंग साफ-साफ है कि मेरी जान निकल जाने ही से सब बखेड़ा तै हो जायेगा।

पारस० यह सब सोचना तुम्हारी नादानी है ! अगर तुम अपने हिन्दू धर्म को जानती होतीं या कोई शास्त्र पढ़ी होतीं तो मेरी बातों पर विश्वास करतीं, यह न सोचतीं कि मेरी शादी हो चुकी, अब जो शादी होगी वह दूसरी शादी कहलावेगी, और जान देने में किसी तरह का ।

सरला (बात काट कर) अगर मैं कोई शास्त्र नहीं भी पढ़ी तो भी शास्त्र के असल मर्म को अपनी माता की कृपा से अच्छी तरह समझती हूं। उसने मुझे एक ऐसा लटका बता दिया है जिससे पूरे धर्मशास्त्र का भेद मुझे मालूम हो गया है। उसने मुझसे कहा था कि बेटी जो बात चित्त को बुरी मालूम हो या जिस बात के ध्यान से दिल में जरा भी खुटका पैदा हो, अथवा जिस बात से लज्जा को कुछ भी सम्बन्ध हो अर्थात जिसके कहने से लज्जित होना पड़े उसके विषय में समझ रक्खो कि शास्त्र में कहीं-न-कहीं उसकी मनाही जरूर लिखी होगी। अस्तु मेरे स्वार्थी भाई, इस विषय में तुम मुझे कुछ भी नहीं समझा सकते क्योंकि मैं माता की इस बात को आज्ञा बल्कि उसकी सब बातों को 'वेद-वाक्य' के बराबर समझती हूं।

पारस० (कुछ लज्जित होकर) अब तुम्हारी इन लड़कपन की सी बातों का मैं कहां तक जवाब दूं ? और जब तुम मुझी को स्वार्थी

कहकर पुकारती हो तो अब तुम्हें किसी तरह का उपदेश करना भी व्यर्थ ही है।

सरला नि सन्देह ऐसा ही है, अब इस विषय मे तुम मुझे कुछ भी समझाने-बुझाने का उद्योग न करो। जो कुछ समझना था मैं समझ चुकी और जो कुछ निश्चय करना था उसे मैं निश्चय कर चुकी।

पारस० (लज्जा और निराशा के साथ) खैर अब मुझे तुम्हारे हृदय की कठोरता का हाल मालूम हो गया और निश्चय हो गया कि तुम्हे किसी के साथ मुहब्बत नही है और न किसी की जान जाने की ही परवाह है।

सरला ठीक है, अगर तुम उस ढग और कहन पर नही समझे तो इस दूसरे ढग से जरूर समझ जाओगे कि जब मुझे अपनी ही जान प्यारी नही है तो दूसरे की जान का खयाल कब हो सकता है ?

पारस० अच्छा तब मैं अपनी जान से भी हाथ धो लेता हू और कह देता हू कि इस विषय मे अब एक शब्द भी मुह से न निकालूगा।

सरला केवल इसी विषय मे नहीं बल्कि मेरे किसी विषय म भी अब तुम्ह बोलना न चाहिए क्योकि मैं तुम्हारी बातें सुनना नहीं चाहती।

इतना कह कर सरला पारसनाथ से कुछ दूर जा बैठी और चुप हो गई। पारसनाथ की आखो मे क्रोध की लाली दिखाई देन लगी मगर सरला को कुछ कहने या समझाने की उसकी हिम्मत न पडी। थोडी देर के बाद पुन उस कोठडी का दर्वाजा खुला और एक नकाबपोश ने कोठडी के अन्दर आकर इन दोना कैदियो से पूछा, "क्या तुम लोगो को किसी चीज की जरूरत है ?"

इसके जवाब मे सरला ने तो कहा, "हा, मुझे मौत की जरूरत है।" और पारसनाथ ने कहा "मैं पायखाने जाया चाहता हू।"

वह आदमी पारसनाथ को लेकर काठडी के बाहर निकल गया और कोठडी का दर्वाजा पुन पहिले की तरह बन्द हो गया।

इस समय हम बादी को उसके मकान मे छत के ऊपर वाली उसी कोठडी में अकेली बैठी हुई देखते हैं जिसमें दो दफे पहिले भी उसे पारसनाथ और

हरनन्दन के साथ देख चुके हैं। हम यह नही कह सकते कि उसके बाद पारसनाथ और हरनन्दन बाबू का आना इस मकान मे दो दफे हुआ या चार दफे हा इसमे कोई शक नहीं कि उसके बाद भी उन लोगो का आना यहा जरूर हुआ, मगर हम उसी जिक्र को लिखेंगे जिसमे कोई खास बात होगी।

बादी अपने सामने पानदान रक्खे हुए धीरे धीरे पान लगा रही है और कुछ सोचती भी जाती है। दो ही चार बीडे पान के उसने खाए होंगे कि लौंडी ने खबर दी कि पारसनाथ आए हैं, बडी बीबी उन्हे बरामदे मे रोक कर बातें कर रही हैं।' इतना सुनते ही बादी न लौंडी को तो चले जाने का इशारा किया और खुद पानदान को किनारे कर एक बारीक चादर से मुह लपेट सो रही।

जब पारसनाथ उस कोठडी म आया तो उसने बादी को ऊपर लिखी हालत मे पाया। वह चुपचाप उसके पास बैठ गया और धीरे धीरे उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा।

बादी (लेटे ही लेटे) कौन है?

पारस० तुम्हारा एक तावदार!

बादी (उठ कर) वाह वाह मैं तो तुम्हारा ही इतजार कर रही थी।

पारस० पहिल यह तो बताओ कि आज तुम्हारा चेहरा इतना सुस्त और उदास क्यो है?

बादी कुछ नही, यो ही वेवक्त सो रहने से ऐसा हुआ होगा।

पारस० नही नही, तुम मुझे धोखा देती हो सच बताओ क्या बात है?

बादी वह तो चुकी और क्या बताऊ? तुम तो खाहमखाह की हुज्जत निकालते हो और यो ही शक करते हो।

पारस० बस बस, रहने भी दो मुझसे बहाना न करो जहा कुछ है वह मैं तुम्हारी अम्मा से सुन चुका हू।

बादी (कुछ भौवें सिकोड कर) जब सुन ही चुके हो तो फिर मुझसे क्या पूछते हो?

पारस० उन्होने इतना खुलासा नहीं कहा जितना मैं तुम्हारी जुबान

से सुना चाहता हू ।

बादी (ठट्ठा उडान के तौर पर हस कर) जी हा ! क्या बात है आपकी चालाकी की, अब दुनिया में एक आप ही तो समझदार और सच्चे रह गये हैं !!

पारस० (चौक कर) यह 'सच्चे' के क्या मानी ? आज 'सच्चे व उल्टे' खिताब पर तुमने ताना क्यो मारा ? क्या मैं झूठा हू या क्या मैं तुमसे झूठ बोल कर तुम्हे धोखे मे डाला करता हू ?

बादी तो तुम इतना चमके क्यो ? तुम्हे सच्चा कहा तो क्या बुरा किया ? अगर मुझे ऐसा ही मालूम होता तो दावे के साथ तुम्हे 'झूठा' कहती।

पारस० फिर वही बात ! वही ढग !!

बादी खैर इन सब बातो को जाने दो, इन पर पीछे बहस करना पहिले यह बताओ कि कल तुम आये क्यो नही ? तुम तो यहा हरनन्दन बाबू को दिखा देने के लिए अपने चाचा को साथ लेकर आने का वादा न कर गए थे ! तुम्हारी जबान पर भरोसा करके न मालूम किन किन तर्कीबो स मैंने आधी रात तक हरनन्दन बाबू को रोक रक्खा था। आखिर वही "टाय टाय फिस !" मैं पहिले ही कह चुकी थी कि अब हरनन्दन बाबू को तुम्हारे चाचा का कुछ भी डर नही रहा और इस बारे म तुम्हारे चाचा का मुह-तोड जवाब मिल चुका है। अब वह बडे भारी बेवकूफ होग जो हरनन्दन बाबू को देखने के लिए यहा आवेंगे।

पारस (तरद्दुद की सूरत बना कर) बात तो कुछ ऐसी ही मालूम पडती है मगर इतना मैं फिर भी कहूगा कि कल के पहिले इस किस्म की कोई बात न थी, पर कल मुझे भी रग बुरे ही नजर आये जिसका सबब अभी तक मालूम नही हुआ, मगर मैं बिना पता लगाए छोडने वाला भी नही।

बादी (मुस्करा कर) अजी जाओ भी, तुम्हे रगत की कुछ खबर ता हुई नही, कहते हैं कि 'कल से कुछ बुरे रग नजर आते हैं।' हा यह कहते तो कुछ अच्छा भी मालूम पडता कि 'मेरे होशियार कर देने पर कल कुछ पता लगा है।'

पारस० नही नही, ऐसा नही। मैं तुम्हारे सर की कसम खाकर कहता हू कि कल जो कुछ मैंने देखा वह नि सदेह एक अनूठी और ताज्जुब की बात थी। सुनोगी तो तुम भी ताज्जुब करोगी। मगर मैं यह नही कहता कि जो कुछ तुमने कहा था उसकी कुछ भी असलियत नही है शायद वैसा भी हुआ हो।

बादी बस, लाजवाब हुए तो मेरे सर की कसम खाने लगे! इनके हिसाब मेरा सर मुफ्त का आया है! खैर पहिले मैं सुन तो लू कि कल तुमने क्या देखा?

पारस० (चेहरा उदास बना के) तुम्हें मेरी बातो का विश्वास ही नही होता। क्या तुम समझती हो कि मैं यो ही तुम्हारे सर की कसम खाया करता हू और तुम्हारे सर को कद्दू समझता हू?

बादी (मुस्कुरा कर) खैर तुम पहले कल वाली बात तो कहो।

पारस० क्या कहू, तुम तो दिल दुखा देती हो।

बादी अच्छा अच्छा, मैं समझ गई कि तुम्हारे दिल मे गहरी चोट लगी और बेशक लगी होगी चाहे मेरी बातो से या और किसी की बातो से!

पारस० फिर उसी ढग पर तुम चली! और जब ऐसा ही है तो फिर मेरी बातो का तुम्हे विश्वास ही क्या होने लगा? (लम्बी साँस लेकर) हाय, क्या जमाना आ गया है! जिनके लिए हम मरें वही इस तरह चुटकिया लें!!

बादी जी हा मरते तो सैकडो को देखती हू मगर मुर्दा निकलते किसी का भी दिखाई नही देता!

इतना कहकर बादी बात उडाने के लिए खिलखिला कर हस पडी और पारसनाथ के गाल पर हलकी चपत लगा के मुस्कराती हुई पुन बोली जरा सी दिल्लगी मे रो देने का ढग अच्छा सीख लिया है इतना भी नही समझते कि मैं कौन-सी बात ठीक कहती हू और कौन-सी दिल्लगी के तौर पर! अच्छा बताओ कल क्या हुआ और तुम आये क्यो नही? मुझे तुम्हारे न आने का बडा रज रहा।'

पारस० (खुश होकर और बादी के गले मे हाथ डाल कर) बेशक

रज हुआ होगा और मुझे भी इस बात का बहुत खयाल था, मगर लाचारी है कि यहां एक आदमी न पहुंच कर चाचा साहब के मिजाज का रंग ही बदल दिया और अब वह दूसरे ढंग से बातें करने लगे।

बान्दी (गले में से हाथ हटा कर) तो कुछ कहो भी तो सही!

पारस० परसों रात को एक आदमी चाचा साहब के पास आया और उन्हें अपने साथ कहीं ले भी गया तथा जब से वे लौट कर घर आए हैं तभी से उनके मिजाज का रंग कुछ बदला हुआ दिखाई देता है।

बादी वह आदमी कौन था?

पारस० अफसोस! अगर उस आदमी का पता ही लग जाता तो इतनी कबाहत क्या होती! मैं उसका ठीक इलाज कर लेता।

बादी तो क्या किसी ने उसे देखा न था?

पारस देखा तो सही मगर वह ऐसे ढंग पर स्याह कपड़ा ओढ़ कर आया था कि कोई उसे पहिचान न सका। सुबह को जब मैं चाचा साहब के पास गया तो उनसे कहा कि आज हरनन्दन को बांदी के यहां दिखा देने का पूरा पूरा बन्दोबस्त हो गया है मगर उन्होंने इस बात पर विशेष ध्यान न दिया और बोले कि हरनन्दन को रंडी के यहां देखने से फायदा ही क्या होगा जब तक कि इस बात का पूरा पूरा सबूत न मिल जाय कि सरला को तकलीफ पहुंचाने का सबब वही हरनन्दन है।' इसके बाद मुझसे और उनसे देर तक बातें होती रहीं मैंने बहुत तरह से समझाया मगर उनके दिल में एक न बैठी!

बादी ठीक है मगर फिर भी मैं वही बात कहूंगी कि तुम्हारे चाचा का खयाल कल से नहीं बदला बल्कि कई दिन पहिले ही से बदल गया है। जब कि हरनन्दन के बाप ने टका-सा सूखा जवाब दे दिया और हरनन्दन खुल्लम-खुल्ला रंडियों के यहां आने-जाने लगा तब वे हरनन्दन का कसूर ही क्या समझते हैं और ताज्जुब नहीं कि उन्हें हरनन्दन की इस नई चालचलन का पता लग भी गया हो! ऐसी हालत में तुम्हारा समझ चाचा रुपया क्यों खर्च करने लगा? अब तो जहां तक जल्द हो सके सरला की शादी किसी के साथ हो जानी चाहिये। हां मैंने तो आज यह भी सुना है कि तुम्हारा चाचा दूसरा वसीयतनामा तैयार कर रहा है।

पारस० (चौक कर) यह तुमसे किसने कहा ?

बादी आज राजा साहब का एक मुसाहब अपने लडके की शादी म नाचने के लिए 'बीडा' दने के वास्ते मेरे यहा आया था। वही इस बात का जिक्र करता था। उसका नाम तो मैं इस वक्त भूल गई, अम्मा को याद होगा।

पारस० अगर ऐसा हुआ ता बडी मुश्किल होगी !

बादी बशक !

पारस० भला यह भी कुछ मालूम हुआ कि दूसरे वसीयतनामे म उसने क्या लिखा है ?

बादी तुम भी अजब 'ऊद हो ! भला इस बात का जवाब मैं क्या दे सकती हू और मैं उस कहने वाले स पूछ भी क्योंकर सकती थी ?

पारस० ठीक है (कुछ साच कर) अगर यह बात ठीक है ता मैं समझता हू कि अपने चाचा को जहन्नुम म पहुचा देने के सिवाय मेरे लिए और कोई उचित काय नही है।

बादी अब इन सब बाता को तुम ही समझो मगर मैं यह पूछती हू कि अब तक तुमने सरला की शादी का इन्तजाम क्या नही किया ? अगर वह हो जाती तो सब बखेडा ही तै था !

पारस ठीक है मगर जब तक सरला शादी करने पर दिल स राजी न हो जाय तब तक हमारा मतलब नही निकलता। मान लिया जाय कि अगर हमने उसकी शादी जबदस्ती किसी के साथ कर दी और प्रगट होने पर उसने इस बात का हल्ला मचा दिया कि मेरे साथ जबदस्ती की गई तब मेरे लिए बहुत बुराई पदा हो जायगी और शादी हो जाने के बाद भी उसे छिपाये रहना उचित नही होगा। ताज्जुब नही कि बहुत दिनो तक सरला का पता न लगने के कारण मेरे चचा उसकी तरफ स नाउम्मीद होकर अपनी कुल जायदाद खैरात कर दे या कोई दूसरा वसीयतनामा ही लिख दे। हमारा काम तो तब बने कि सरला शादी होने के बाद एक दफे किसी बडे के सामने कह दे कि हा यह शादी मेरी इच्छानुसार हुई है।' इसके अतिरिक्त हमारी गुप्त कमेटी ने भी यही निश्चय किया है कि चचा साहब को किसी तरह खतम कर देना चाहिए जिसमे उन्हे दूसरा

वसीयतनामा लिखने का मौका न मिले।' उन लोगों ने जो कुछ चाल सोची थी वह तो अब पूरी होती नजर नहीं आती।

बांदी वह कौन-सी चाल?

पारस० यही कि मेरा चचा खुद हरनंदन से राजी होकर यह हुक्म दे देता कि सरला को खोजकर उसकी दूसरी शादी कर दी जाय। बस उस समय मुझे खैरखाह बनने का मौका मिल जाता। मैं झट सरला को प्रगट करके कह देता कि इसे हरनंदन के दोस्त डाकुओं के कब्जे में से निकाल लाया हूं और जब उसकी शादी किसी दूसरे के साथ हो जाती तब इसके पहिले कि मेरा चचा दूसरा वसीयतनामा लिखे मैं उसे मारकर बखेड़ा मिटा देता। ऐसी अवस्था में मुझे उनके लिखे वसीयतनामे के अनुसार आधी दौलत अवश्य मिल जाती। इसके अतिरिक्त और भी बहुत-सी बातें हैं जिन्हें तुम नहीं समझ सकती। (कुछ गौर करके) मगर अब जो हम लोग गौर करते हैं तो हम लोगों की पिछली कारवाही बिल्कुल जहन्नुम में मिल गई-सी जान पड़ती है क्योंकि मेरे चचा हरनंदन के खिलाफ कोई कार्रवाई करते दिखाई नहीं देते। आज हरिहरसिंह ने भी यही बात कही थी, खाली तुम्हारे चचा के मारे जाने से कोई फायदा नहीं हो सकता। फायदा तभी होगा जब चाचा भी मारा जाय और सरला भी अपनी खुशी से शादी कर ले।' मगर बड़े अफसोस की बात है कि मैं सरला को भी किसी तरह समझा न सका। मैं स्वयं कैदी बनकर उसके पास गया और बहुत तरह से समझाया-बुझाया मगर उसने एक न मानी, उल्टे मुझी को बेवकूफ बना के छोड़ दिया।

बांदी (ताज्जुब से) हां! तुम सरला के पास गये थे! अच्छा तो वहां क्या हुआ, मुझसे खुलासा कहो?

पारस ने अपना सरला के पास जाना और वहां से छुट्टी पा कर बैरंग लौट आने का हाल बांदी से बयान किया और तब बांदी ने मुस्कराकर कहा "अगर मैं सरला को दूसरे के साथ शादी करने पर राजी कर दूं और वह इस बात को खुशी से मंजूर कर ले तो मुझे क्या इनाम मिलेगा?

इतना सुनकर पारस ने उसके गले में हाथ डाल दिया और प्यार

की निगाहों से देखता हुआ खुशामद के ढग पर बोला, 'तुम मुझसे पूछती हो कि मुझे क्या इनाम मिलेगा ? तुम्हे शर्म नही आती ! हालाकि तुम इस बात को बखूबी जानती हो कि यह सब कारवाही तुम्हारे ही लिए की जा रही है और इस काम मे जो कुछ मिलेगा उसका मालिक सिवा तुम्हारे दूसरा कोई नही हो सकता तुम जो कुछ हाथ उठा कर मुझे दे दोगी वही मेरा होगा ।

बादी यह सब ठीक है, मुझे तुमसे रुपये-पैसे का लालच कुछ भी नही है, मै तो सिर्फ तुम्हारी मोहब्बत चाहती हू, मगर क्या करू, अम्मा के मिजाज से लाचार हू। आज बात ही बात मे तुम्हारा जिक्र आ गया था तब अम्मा बोली 'मै तो दो ही तीन दिन की मेहनत मे सरला को राजी कर दू ! मैं ही नही बल्कि मेरी तर्कीब से तू भी वह काम कर सकती है मगर मुझे फायदा ही क्या जो इतना सिर-खप्पन करू !' मैंने बहुत कुछ कहा कि अम्मा वह तर्कीब मुझे बता दो, मैं उनका काम कर दू तो मुझे भी फायदा होगा, मगर उन्होंने एक न मानी, बोली कि 'फलाने फलाने ढङ्ग से मेरी खिदमत कर दी जाय तो मैं सब कुछ कर सकती हू। जो किसी के किये न हो सके वह हम लोग कर सकती है।' उन्हीं की बात मुझे इस समय याद आ गई, तब मैं तुमसे कह बैठी कि अगर मैं ऐसा करू तो मुझे क्या इनाम मिलेगा नही तो मैं भला तुमसे क्या मागूगी ! खैर इन बातो को जाने दो अम्मा तो पागल हो गई है तुम जो कुछ कर रहे हो करो उनकी बातो पर ध्यान न दो।

पारस नही नही तुम्हे ऐसा न कहना चाहिए, आखिर जो कुछ तुम्हारी अम्मा के पास है या रहेगा वह सब तुम्हारा ही तो है, और अगर मैं इस समय उनकी इच्छानुसार कुछ करूगा तो उसमे तुम्हारा ही तो फायदा है। मेरे दिल का हाल तो तुम जानती ही हो कि मैं तुम्हारे मुकाबले मे किसी चीज की भी हकीकत नही समझता ! खैर पहिले यह बताओ कि वे चाहती क्या थी ?

बादी अजी जाने भी दो उनकी बातो मे कहा तक पडोगे ? वह तो कहेगी कि अपना घर उठा कर दे दो तो कोई क्या अपना घर उठा कर दे देगा !

पारस० और कोई चाहे न दे मगर मैं तो अपना घर तुम्हारे ऊपर न्योछावर किये बैठा हू, अस्तु मैं सब कुछ कर सकता हू। तुम कहो भी तो नही, मतलब तो अपना काम होने से है।

बांदी (सिर झुकाती हुई नखरे के साथ) मैं क्या कहू, मुझसे तो कहा नही जाता !

पारस० फिर वही नादानी की बात ! तुम तो अजब बेवकूफ औरत हो ! कहो कहो, तुम्हे मेरे सर की कसम, कहो तो सही वे क्या मागती थीं ?

बांदी कहती थी कि 'इस समय तो सरला के कुल गहने मुझे दे दो जो ब्याह वाले दिन उस वक्त उसके बदन पर थे जब तुम लोगो ने उसे घर से बाहर निकाला था और जब तुम्हारा काम हो जाय अर्थात सरला प्रसन्नता से दूसरे के साथ शादी कर ले बल्कि सभी से खुल्लमखुल्ला कह दे कि हा यह शादी मैंने अपनी खुशी से की है, तब दस हजार रुपया नकद मुझे मिले।' मगर वे चाहती हैं कि रुपये की बाबत आप एक पुर्जा पहिले ही लिख कर उन्हे दे दें। बस यहा तो बात है जो अम्मा कहती थी।

पारस० तो इसमे हर्ज ही क्या है ? आखिर वह रुपया तो मुझे मिलेगा तुम्हारा ही तो है। फिर आज अगर दस हजार देने का पुर्जा मैं लिख ही दूगा तो क्या हर्ज है ? मगर हा एक बात जरा मुश्किल है !

बांदी वह क्या ?

पारस० गहने जो सरला के बदन पर थे उनमे से आधे के लगभग तो हम लोगो ने बेच डाले है।

बांदी तो हर्ज ही क्या है, जो कुछ हो उन्हे दे दो, मैं उन्हे कह-सुनकर ठीक कर लूगी, आखिर कुछ भी मेरी बात मानेंगी या नहीं ? ऐसी ही जिद्द करने पर उतारू होगी तो मैं उनका साथ ही छोड दूगी। वाह, जिसे मैं प्यार करती हू उसी को वह मनमाना सतावेंगी ! यह मुझसे बर्दाश्त न हो सकेगा ! अच्छा तो बुलाऊ निगोडी अम्मा को ?

पारस० हा हां बुलाओ, पुर्जा तो मैं इसी समय लिख देता हू और बचे हुए गहने कल इसी समय लेकर हाजिर हो जाऊगा। मगर तुम उन्हे निगोडी क्यो कहती हो ? वह बडी हैं, उन्हे ऐसा न कहना चाहिये !

बादी (तनक कर) उफ ! जब कि वह मेरी तबीयत के खिलाफ करके मेरा दिल जलाती है तो मैं उसे कहने से कब बाज आती हू !

इतना कहकर बादी चली गई और थोडी ही देर मे अपनी अम्मा का साथ लेकर चली आई। उस समय उसकी निगोडी अम्मा के हाथ में कलम-दवात और कागज भी मौजूद था। 'बडे-बडे मरातबे हो, अल्लाह सलामत रक्खे !' इत्यादि कहती हुई वह पारसनाथ के पास बैठ कर धीरे धीरे बातें करने लगी और थोडी ही देर म उल्लू बनाकर उसने पारसनाथ से अपनी इच्छानुसार पुर्जा लिखवा लिया। मामूली सिरनामे के बाद उस पुर्जे का मजमून यह था—

"बादी की अम्माजान 'रसूलबादी' स मैं एकरार करता हू कि उसकी कोशिश से अगर 'सरला' (जो इस समय हमारे कब्जे मे है) मेरी इच्छा-नुसार हरनन्दन के अतिरिक्त किसी दूसरे के साथ प्रसन्नतापूवक विवाह कर लेगी तो मैं 'रसूलबादी' को दस हजार रुपये नगद दूगा।"

पुर्जा लिखवा कर बुढिया विदा हुई और बादी पारसनाथ को अपन नखरे का आनन्द दिखाने लगी। मगर पारसनाथ के लिए यह खुशकिस्मती का समय घण्टे भर से ज्यादे देर तक के लिए न था क्योकि इसी बीच में लौंडी ने हरनन्दन बाबू के आने की इत्तला दी जिसे सुन कर पासरनाथ ने बादी से कहा, "लो, तुम्हारे हरनन्दन बाबू आ गए, अब मुझे विदा करो।"

बादी मेरे काहे को होगे, जिसके होगे उसके होगे। मैं तो तुम्हारे काम का खयाल करके उन्हे अपने यहा आने देती हू, नही तो मुझे गरज ही क्या पडी है ?

पारस० उनकी गरज तो कुछ नही मगर रुपये की गरज तो है ?

बादी जी नही मुझे रुपये की भी लालच नही, मैं तो मुहब्बत की भूखी हू, सो तुम्हारे सिवाय और किसी मे देखती नही।

पारस० तो अब हरनन्दन से मेरा क्या काम निकलेगा ?

बादी वाह वाह ! क्या खूब ? इसी अक्ल पर सरला की शादी दूसर के साथ करा रहे हो ?

पारस० सो क्या ?

बादी आखिर दूसरी शादी करने के लिए सरला को क्याकर राजी

किया जायेगा ? और तर्कीबों के साथ एक तर्कीब यह भी होगी कि हरनन्दन के हाथ की लिखी हुई चिट्ठी सरला को दिखाई जाएगी जिसमें सरला से घृणा और उसकी निन्दा होगी।

पारस० (बात काट कर) ठीक है, ठीक है अब मैं समझ गया ! शाबाश !, बहुत अच्छा सोचा ! सरला हरनन्दन के अक्षर पहिचानती भी है। (उठता हुआ) अच्छा तो मेरे जाने का रास्ता ठीक कराओ, वह कम्बख्त मुझे देखने न पावे।

बादी बस तुम सीढ़ी के बगलवाले पायखाने मे घुसकर खड़े हो जाओ जब वे ऊपर आ जाय तब तुम नीचे उतर जाना और गली के रास्ते बाहर हो जाना क्योंकि सदर दर्वाजे पर उनके आदमी होंगे।

पारस० (मुस्कराते हुए) बहुत खूब ! रंडियों के यहा आने का एक नतीजा यह भी है कि कभी-कभी पायखाने का आनन्द भी लेना पड़ता है !

इसके बाद जवाब मे बादी ने मुस्कराकर एक चपत (थप्पड़) से पारसनाथ की खातिर की और मटकती हुई नीचे चली गई। जब तक हरनन्दन बाबू को लेकर वह ऊपर न आई तब तक पायखाने का विमल अथवा मल आनन्द पारसनाथ को भोगना पड़ा।

बादी की अम्मा पारसनाथ से मनमाना पुर्जा लिखवा कर नीचे उतर गई और अपने कमरे म न जाकर एक दूसरी कोठरी मे चली गई जिसमे सुलतानी नाम की एक लौंडी का डेरा था।

यह सुलतानी लौंडी पुरानी नही है बल्कि बादी के लिए बिलकुल ही नई है। आज चार ही पाच दिन से इसने बादी के यहा अपना डेरा जमाया है। इसकी उम्र चालीस वर्ष से कम न होगी। बातचीत मे तेज, चालाक और बड़ी ही धूर्त है। दूसरे को अपने ऊपर मेहरबान बना लेना तो इसके बाए हाथ का करतब है। यद्यपि उम्र के लेहाज से लोग इसे बुढ़िया कह सकते हैं, मगर यह अपने को बुढ़िया नहीं समझती। इसका चेहरा सुडौल और रग अच्छा होने के सबब से बुढ़ापे का दखल जैसा होना चाहिए था न हुआ था और अब भी यह खूबसूरतों के बीच मे बैठकर अपनी लच्छेदार बातों से सभो का दिल खुश कर लेने का दावा रखती है। इसने बादी के घर पहुच

कर उसकी अम्मा का खुश कर लिया और उसकी लौंडी या मुसाहब बन कर रहने लगी। इसके बदन पर कुछ जेवर और एक हजार नगद रुपया भी था जो उसने बादी के पास यह कह कर अमानत में रख दिया था कि "एक नजूमी (ज्योतिषी) के कहे मुताबिक मैं समझती हूं कि मेरी उम्र बहुत कम है अब मैं और चार-पांच साल से ज्यादे इस दुनिया में नहीं रह सकती, साथ ही इसके मेरा न तो कोई मालिक है न वारिस, एक लड़की थी वह जाती रही, अस्तु इस एक हजार रुपये को जो मेरे पास है, अपनी आक बत सुधरने का जरिया समझ कर तुम्हारे पास अमानत रख देती हूं और उम्मीद करती हूं कि इससे मेरे मरने के बाद मेरी आकबत ठीक कर के कब्र वगैरह बनवा दोगी।'

रुपये वाले की कदर सब जगह होती है, अस्तु बादी की मां ने भी खुशी-खुशी उसे रुपये सहित अपने घर में रख लिया और लौंडी के बदले में उसे अपना मुसाहब समझा। बस इस समय बादी की मां ने जो कुछ पारसनाथ से लिखवाया वह इसी की सलाह का नतीजा था।

बादी की अम्मा को देख कर सुलतानी उठ खड़ी हुई और बोली, "कहिये क्या रंग है।"

बादी की अम्मा सब ठीक है, जो कुछ मैंने कहा उसने बखूबी लिख दिया, देखो यह उसके हाथ का पुर्जा है।

सुलतानी (पुरजा पढ़ कर) बस इतने ही से मतलब था, आइये बैठ जाइये। गहने के बारे में उसने क्या कहा?

बादी की अम्मा (बैठ कर) गहना आधा तो उसने वर्क लाया बाकी आधा कल ले आवेगा। जो कुछ करना है तुम्ही को करना है क्योंकि तुम्हारे ही कहे मुताबिक और तुम्हारे ही भरोसे पर कार्यवाई की गई है।

सुलतानी आप किसी तरह का तरद्दुद न करें, सरला का राजा कर लेना मेरे लिए कोई बात नहीं है, इस काम के लिए केवल हरनंदन बाबू के हाथ की एक चिट्ठी उसी मजमून की चाहिए जैसाकि मैं कह चुकी हूं, बस और कुछ नहीं।

बादी की अम्मा यकीन तो है कि हरनंदन बाबू भी सरला के बारे में चिट्ठी लिख देंगे। जब उन्हें सरला से कुछ मतलब ही नहीं रहा तो चिट्ठी

लिख देने में उनको हर्ज क्या है ?

सुलतानी अगर वे लिखने में कुछ हील करें तो मुझे उनके सामने ले चलियेगा, फिर देखियेगा कि मैं किस तरह समझा लेती हूं।

इसी तरह की बातें इन दोनों में देर तक होती रहीं जिसे विस्तार के साथ लिखने की कोई जरूरत नहीं, हां बांदी और हरनन्दन बाबू का तमाशा देखना जरूरी है।

हरनन्दन बाबू की खातिरदारी का कहना ही क्या ? बांदी ने इन्हें साने की चिड़िया समझ रखा था और समय तथा आवश्यकता ने इन्हें भी दाता और भोला भाला ऐयाश बनने पर मजबूर किया था। दिल में जो कुछ धुन समाई थी उसे पूरा करने के लिए हर तरह की कारवाई करने का हौसला बांध लिया था मगर बांदी इन्हें आधा बेवकूफ समझती थी। बांदी को विश्वास था कि हरनन्दन का दिल हाथ में लेना उतना आसान नहीं है जितना पारसनाथ का—और इन्हीं सबबों से इनकी खातिरदारी ज्यादा होती थी।

हरनन्दन बाबू बड़ी खातिर और इज्जत के साथ उसी ऊपर वाले बंगले में बैठाये गए। बरसने वाले बादलों के घिर आने से पैदा हुई उमस ने जो गर्मी बढ़ा रक्खी थी उसे दूर करने के लिए नाजुक पंखी ने बांदी के कोमल हाथों का सहारा लिया और इस बहाने से समय के खुशनसीब हरनन्दन बाबू का पसीना दूर किया जाने लगा। "आह, मेरा दिल इतना बर्दाश्त नहीं कर सकता!" यह कहकर हरनन्दन बाबू ने बांदी के हाथ से पंखी लेनी चाही मगर उसने नहीं दी और मुहब्बत के साथ झलती रही। दो ही चार दफे की 'हां-नहीं' के बाद इस झगड़े का अन्त हुआ और इसके बाद मीठी-मीठी बातें होने लगीं।

हरनन्दन मालूम होता है कि पारसनाथ आया था ?

बांदी (मुस्कराती हुई) जी हां।

हरनन्दन है या गया ?

बांदी (मुस्कराती हुई) गया ही होगा।

हरनन्दन इसके क्या मानी ! क्या तुम नहीं जानती कि वह है या गया ?

बांदी जी हां, मैं नहीं जानती, क्योंकि जब आपके आने की खबर हुई तब मैंने उसे पायखाने में छिपे रहने की सलाह दी क्योंकि उसे आपका सामना करना मंजूर न था और मुझे भी उसके छिपने के लिए इससे अच्छी जगह दूसरी कोई न सूझी।

हरनन्दन ठीक है, रंडियों के घर आकर पायखाने में छिपना, उगालदान का उठाना, तलवे में गुदगुदाना अथवा नाक पर हंसी का बुलाना बहुत जरूरी समझा जाता है, बल्कि सच तो यों है कि ऐयाशी के सुनसान मैदान में ये ही दो-चार खुशनुमा दरख्त हरारत को दूर करने वाले हैं।

बांदी (दिल में शरमाती मगर जाहिर में हंसती हुई) आप भी अजब आदमी हैं। मालूम होता है आपने खानगियों के बहुत-से किस्से सुने हैं मगर किसी खानदानी रण्डी की शराफत का अभी अन्दाजा नहीं किया है!

हरनन्दन (हंसकर) ठीक है, या अगर अन्दाजा किया है तो पारसनाथ ने!

बांदी (कुछ झेंप कर) यह दूसरी बात है! 'जैसा मुंह वैसी थपेड़।' न मैं उस के लिए रण्डी हूं और न वह मेरे लिए लायक सर्दार। वह दिवालिया और कंगला सर्दार और मैं अम्मा के दबाव से जेरबार! हां अगर कोई आप ऐसा सर्दार मुझे मिला होता, तो मैं दिखाती कि खानदानी रण्डी की वफादारी किसे कहते हैं! (अपना कान छू कर) शारदा की कसम हम लोग उन खानगियों में नहीं हैं जिन्होंने हमारी कौम को बदनामी कर रखी है।

हरनन्दन (प्यार से बांदी को अपनी तरफ खैंच कर) बेशक, बेशक! मुझे भी तुमसे ऐसी ही उम्मीद है और इसी खयाल से मैंने अपने को तुम्हारे हाथ बेच भी डाला है।

बांदी (हरनन्दन के गले में हाथ डाल कर) मैं तो तुम्हारे कहने से और तुम्हारे काम का खयाल करके उस मूंडी-काटे से दो-दो बातें भी कर लेती हूं, नहीं तो मैं उसके नाम पर थूकना भी नहीं चाहती।

हरनन्दन (इस बहस को बढ़ाना उचित न जान कर और बांदी को बगल में दबा कर) मारो कम्बख्त को, जान भी दो, कहां का पचड़ा ले बैठी हो! अच्छा यह बताओ, वह कब से बैठा हुआ था?

बांदी कम्बख्त दो घण्टे से मगज चाट रहा था।

हरनन्दन मेरा जिक्र तो आया ही होगा ?

बांदी भला इसका भी कुछ पूछना है !

हरनन्दन क्या-क्या कहता था ?

बांदी बस वही सरला वाली बातें, मैंने तो उस कम्बख्त से कई दफे कहा कि अब हरनन्दन बाबू सरला से शादी न करेंगे, मगर उसको विश्वास ही नहीं होता और विश्वास न होने का एक सबब भी है।

हरनन्दन वह क्या ?

बांदी तुमने चाहे अपने दिल से सरला को भुला दिया है, मगर सरला ने तुम्हें अभी तक नहीं भुलाया।

हरनन्दन इसका क्या सबूत ?

बांदी इसका सबूत यही है कि वह (पारसनाथ) कैदी बन कर उस कैदखाने मे गया था जिसमे सरला कैद है और सरला को कई तरह से समझा-बुझा कर दूसरे के साथ ब्याह करने के लिए राजी करना चाहा था, मगर उसने एक न मानी।

हरनन्दन (ताज्जुब के ढग से) हा ! उसने तुमसे खुलासा कहा कि किस तरह से सरला के पास गया और क्या-क्या बातें हुईं ?

बांदी जी हा, उसने जो कुछ कहा है मैं आपको बताती हू ।

इतना कहकर बांदी ने वह हाल जिस तरह पारसनाथ से सुना था उसी तरह बयान किया जिसे सुन कर हरनन्दन ने कहा, "अगर ऐसा है तो मुझे भी कोई तरकीब करनी चाहिये जिससे सरला के दिल से मेरा खयाल जाता रहे।"

बांदी इसस बढ कर और कोई तर्कीब नहीहो सकती कि तुम उसे कैद से छुडा कर उसके साथ ब्याह कर लो। मैं इस काम मे हर तरह से तुम्हारी मदद करने के लिए तैयार हू बल्कि उसका पता भी करीब-करीब लगा चुकी हू । दो ही एक दिन मे बता दूगी कि वह कहा और किस हालत मे है, साथ ही इसके मैं यह भी खुदा की कसम खाकर कहती हू कि मुझे इस बात का जरा भी रञ्ज न होगा, बल्कि मुझे एक तरह पर खुशी होगी, क्योकि मेरा दिल घडी-घडी यह कहता है कि सरला जब इस बात को जानेगी कि

मेरा फंद से छूटना और अपने चहेते के साथ ब्याह होना बांदी की बदौलत है, तो वह मुझे भी प्यार की निगाह से देखेगी और ऐसी हालत में हम दोनों की जिन्दगी बड़ी हंसी-खुशी के साथ बीतेगी।

हरनन्दन (बांदी की पीठ पर हाथ ठोक के) शाबाश! क्या न हो! तुम्हारा यह सोचना तुम्हारी शराफत का नमूना है। मगर बांदी! मैं क्या करूं, लाचार हूं कि मेरे दिल से उसका खयाल बिल्कुल जाता रहा और अब मैं उसके साथ शादी करना बिल्कुल पसन्द नहीं करता। मैं नहीं चाहता कि मेरी उस मुहब्बत में कोई भी दूसरा शरीक हो जो मैंने खास तुम्हारे लिये उठा रखी है।

बांदी मेरे ख्याल से तो कोई हर्ज नहीं है।

हरनन्दन नहीं नहीं, ऐसी बातें मत करो और अब कोई ऐसी तर्कीब करो जिससे उसके दिल से मेरा खयाल जाता रहे।

बांदी (दिल में खुश होकर) खैर तुम्हारी खुशी, मगर यह बात तो तभी हो सकती है जब वह तुम्हारी तरफ से बिल्कुल नाउम्मीद हो जाय और उसकी शादी किसी दूसरे के साथ हो जाय।

हरनन्दन हां तो मैं भी तो यही चाहता हूं, मगर साथ ही इसके इतना जरूर चाहता हूं कि वह किसी नीच के पाले पड़े!

बांदी - अगर मेहनत की जाय तो ऐसा भी हो सकता है, मगर यह काम किसी बड़े चालाक के किए ही हो सकता है जैसी कि इमामीजान।

हरनन्दन कौन इमामीजान?

बांदी इमामीजान एक खबीस बुढ़िया है जो बड़ी चालाक और धूर्त है। कभी-कभी अम्मा के पास आया करती है। मैं तो उसे देख के ही जल जाती हूं।

हरनन्दन खैर मेरे लिए तुम इतनी तकलीफ और करके इमामीजान को इस काम के लिए मुस्तैद करो मगर यह बताओ कि इमामीजान का सरला के पास पहुंचने का मौका कैसे मिलेगा?

बांदी इसका इंतजाम मैं कर लूंगी, किसी-न-किसी तरह आपका काम करना जरूरी है। मैं पारसनाथ को कई तरह से समझा कर कहूंगी कि अगर सरला तुम्हारी बात नहीं मानती तो मैं एक औरत का पता

बताती हू , तुम उसे सरला के पास ले जाओ, बेशक वह सरला को समझा कर दूसरे के साथ ब्याह करने पर राजी कर देगी। उम्मीद है कि पारसनाथ इस बात को मजूर करके इमामी को सरला के पास ले जायगा बस ।

हरनन्दन बस बस बस, मैं समझ गया। यह तर्कीब बहुत ही अच्छी है और पारसनाथ इस बात को जरूर मान लेगा।

बादी मगर फिर यह भी तो उसे बताना चाहिए कि वह किसके साथ ब्याह करने पर सरला को राजी करे।

हरनन्दन मैं सोच कर इसका जवाब दूगा, क्योकि इसका फैसला करना होगा कि वह आदमी भी सरला के साथ ब्याह करने से इन्कार न करे जिसके साथ उसका सम्बन्ध होना मैं पसन्द करू।

बादी हा यह तो जरूर होना चाहिए, साथ ही इसके इसका बन्दोबस्त भी बहुत जरूरी है कि सरला के दिल से तुम्हारा ध्यान जाता रहे और उसे तुम्हारी तरफ से किसी तरह की उम्मीद बाकी न रहे।

हरनन्दन यह तो कोई मुश्किल नही है, मैं एक चिट्ठी ऐसी लिख दूगा जिसे देखते ही सरला का दिल मेरी तरफ से खट्टा हो जायगा ! और उसमे

बादी बस-बस, मैं आपका मतलब समझ गई बेशक ऐसा करने से मामला ठीक हो जायगा ! (कुछ सोच कर) मगर कम्बख्त इमामी का लालच हद से ज्यादा है।

हरनन्दन कोई चिन्ता नही, जो कुछ कहोगी उसे दे दूगा। और फिर उसे चाहे जो कुछ दिया जाय मगर इसमे कोई शक नही कि अगर यह काम मेरी इच्छानुसार हो जायगा तो मैं तुम्हे दस हजार रुपये नकद दूगा और अपने को तुम्हारे हाथ बिका हुआ समझूगा।

बादी (मुहब्बत से हरनन्दन का हाथ पकड के) जहा तक होगा मैं तुम्हारे काम मे कोशिश करूगी। मुझे इस बात की लालच नहीं है कि तुम मुझे दस हजार रुपये दोगे। तुम मुझे चाहते हो, मेरे लिए यही बहुत है। जब कि मैं अपने को तुम्हारी मुहब्बत पर न्योछावर कर चुकी हू, तब भला मुझे इस बात की ख्वाहिश कब हो सकती है कि तुमसे रुपये वसूल

करू ? (लम्बी सासें लेकर) अफसोस कि तुम मुझे आज भी वैसा ही समझते हो जैसा पहिले दिन समझे थे ! !

इतना कह कर बादी नखरे मे दो-चार बूद आसू को बहाकर आचल स आख पोछने लगी। हरनदन ने भी उसके गले मे हाथ डाल कर कसूर की माफी मागी और एक अनूठे ढग से उसे प्रसन्न करने का विचार किया। इसके बाद क्या हुआ सो कहने की कोई जरूरत नही। बस इतना ही कहना काफी है कि हरनदन दो घण्टे तक और बैठे तथा इसके बाद उन्होंने अपने घर का रास्ता लिया।

अब हम थोडा-सा हाल लालसिंह के घर का बयान करते है।

लालसिंह को घर से गायब हुए आज तीन या चार दिन हो चुके है। न तो वे किसी से कुछ कह गये हैं और न कुछ बता ही गये हैं कि किसके साथ कहा जाते हैं और कब लौट कर आवेंगे। अपने साथ कुछ सफर का सामान भी नही ले गये जिससे किसी तरह की दिलजमयी होती और यह समझा जाता कि कही सफर मे गये हैं, काम हो जाने पर लौट आवेंगे। वह तो रात के समय यकायक अपने पलग से गायब हो गये और किसी तरह का शक भी न होने पाया। न तो पहरे वाला ही कुछ बताता है और न खिदमतगार ही किसी तरह का शक जाहिर करता है। सब के सब तरद्दुद और परेशानी मे पड़े हैं तथा ताज्जुब के साथ एक दूसरे का मुह देखते हैं। इसी तरह पारसनाथ भी परेशान चारो तरफ घूमता है और अपने चाचा का पता लगाने की फिक्र कर रहा है। उसने भी लालसिंह की तलाश मे कई आदमी भेजे है, मगर उसका यह उद्योग चचा की मुहब्बत के खयाल से नही है बल्कि इस खयाल से है कि कही यह कार्यवाही भी किसी चालाकी के खयाल से न की गई हो। वह कई दफे अपनी चाची के पास गया और हमदर्दी दिखा कर तरह-तरह के सवाल किए मगर उसकी जुबानी भी किसी तरह का पता न लगा बल्कि उसकी चाची ने उसे कई दफे कहा कि 'बेटा ! तुम्हारे ऐसा लायक भतीजा भी अगर अपने चचा का पता न लगावेगा तो और किससे ऐसे कठिन काम की उम्मीद हो सकती है?'

इस तरद्दुद और दौड-धूप मे चार दिन गुजर गये, मगर लालसिंह

के बारे मे किसी तरह का कुछ भी हाल न मालूम हुआ।

सन्ध्या का समय है और लालसिंह के कमरे के आगे वाले दालान मे पारसनाथ एक कुर्सी पर बैठा हुआ कुछ सोच रहा है। उसके दिल मे तरह-तरह की बातें पैदा होती और मिटती हैं और एक तौर पर वह गम्भीर चिन्ता मे डूबा हुआ मालूम पडता है। इसी समय अकस्मात एक परदेसी आदमी ने उसके सामने पहुच कर सलाम किया और हाथ मे एक चिट्ठी देकर किनारे खडा हो गया। हाथ-पैर और सूरत-शक्ल देखने से मालूम होता था कि वह आदमी कही बहुत दूर से सफर करता हुआ आ रहा है।

पारसनाथ ने लिफाफे पर निगाह दौडाई जो उसी के नाम का लिखा हुआ था। अपने चचा के हाथ के अक्षर पहिचान कर वह चौंक पडा और व्याकुलता के साथ चिट्ठी खोलकर पढने लगा। उसमे यह लिखा हुआ था—

"चिरञ्जीव पारसनाथ योग्य लिखी लालसिह की आसीस।

'अपनी राजी-खुशी का हाल लिखना तो अब व्यर्थ ही है, हा ईश्वर से तुम्हारा कुशल-क्षेम मनाते हैं। बेशक तुम लोग ताज्जुब और तरददुद मे पडे होवोगे और मेरे यकायक गायब हो जाने से तुम लोगो को रञ्ज हुआ होगा मगर मैं क्या करू! अपनी दिली उलझनो से लाचार होकर मुझे ऐसा करना पडा। सरला के गायब होने और हरनन्दन की ऐयाशी ने मेरे दिल पर गहरी चोट पहुचाई। अब मैं गृहस्थ आश्रम मे रहना और किसी को अपना मुह दिखाना पसन्द नही करता, इसलिए बिना किसीसे कुछ कहे-सुने चुपचाप यहा चला आया और आज इस आदमी के सामने ही सिर मुडाकर सन्यास ले लिया है। अब मुझे न तो गृहस्थी से कुछ सरोकार रहा और न अपनी मिलकियत से कुछ वास्ता। जो कुछ वसीयतनामा मैं लिख चुका हू, आशा है कि तुम ईमानदारी के साथ उसी के मुताबिक कारवाई करोगे तथा मेरे रिश्तेदारो को धीरज व दिलासा देकर रोने-कलपने से बाज रक्खोगे। आज मैं इस स्थान को छोड अपने गुरुजी के साथ बदरिकाश्रम की तरफ जाता हू और उधर ही किसी जगल मे तपस्या करके शरीर त्याग दूगा। अब हमारे लौटने की रत्ती भर भी आशा न रखना और जिस तरह मुनासिब समझना घर का इन्तजाम करना। लालसिंह।"

चिट्ठी पढ कर पारसनाथ तबीयत मे तो बहुत खुश हुआ मगर जाहिर

मे रोनी सूरत बना कर अफसोस करने लगा और दस-बीस बूंद आंसू की गिरा कर उस चिट्ठी लाने वाले से यों बोला—

पारस० तुम्हारा नाम क्या है ?

आदमी लोकनाथ !

पारस० मकान कहां है ?

लोकनाथ काशीजी।

पारस० हमारे चाचा साहब ने तुम्हारे सामने ही संन्यास लिया था ?

लोक० जी हां, उस समय जो कुछ उनके पास था, दो सौ रुपये मुझे देकर बाकी सब दान कर दिया और यह चिट्ठी जो पहिले लिख रक्खी थी देकर कहा कि 'यह चिट्ठी मेरे भतीजे पारसनाथ के पास पहुंचा देना और जो दो सौ रुपये हमने तुम्हें दिये हैं उसे इसी की मजूरी समझना।' दूसरे दिन जब वे दण्ड कमण्डल लिए हरिद्वार की तरफ गये तब मैं भी किराये के इक्के पर सवार होकर इस तरफ रवाना हुआ।

पारस० अफसोस ! न मालूम चाचा साहब को यह क्या सूझी ! उनका अगर पता मालूम हो तो मैं उनके पास जरूर जाऊं और जिस तरह हो घर लिवा लाऊं। अगर सन्यास ले लिया है तो क्या हुआ, अलग बैठ रहेंगे हम लोगों को आज्ञा दिया करेंगे। उनके सामने रहने ही से हम लोगों का आसरा बना रहेगा।

लोक० एक तो अब उनका पता लगाना ही कठिन है दूसरे वह ऐसे कच्चे सन्यासी नहीं हुए हैं जो किसी के समझाने-बुझाने से घर लौट आवेंगे। अब आप लोग उनका ध्यान छोड़ दें और घर-गृहस्थी के धन्धे में लगें।

पारस० तो क्या अब हम लोग उनकी तरफ से बिलकुल निराश हो जाएं ?

लोक० निस्सन्देह ! अच्छा अब मुझे विदा कीजिए तो मैं अपने घर जाऊं।

पारस० नहीं नहीं अभी तुम बिदा न किये जाओगे। अभी मैं हवेली में जाकर औरतों को यह सम्वाद सुनाऊंगा, कदाचित चाची साहिबा को तुमसे कुछ पूछने की जरूरत पड़े। इसके बाद उनकी आज्ञानुसार कुछ देकर

तुम्हारी बिदाई की जाएगी तब तुम अपने घर जाना।

लोक० ठीक है, आप इसी समय महल जाकर अपनी चाची साहिबा से जो कुछ कहना-सुनना हो कह सुन लें, यदि उन्हें कुछ पूछना हो तो मैं जवाब देने के लिए तैयार हूं, परन्तु किसी के रोकने से मैं यहां रुक नहीं सकता और न बिदाई या भोजन के तौर पर कुछ ले ही सकता हूं क्योंकि ऐसा करने के लिये लालसिंह ने कसम दिला दी है बल्कि यहां तक कसम देकर कह दिया है कि जब तक तुम वहां रहना तब तक अन्न-जल तक न छूना। इसलिए मैं कहता हूं कि मुझे यहां से जल्द छुट्टी दिलाइये क्योंकि इस इलाके से बाहर हो जाने बाद ही मैं अपने खाने-पीने का बन्दोबस्त कर सकूंगा। मुझे इस काम की पूरी मजदूरी लालसिंह दे गये हैं, अस्तु अब मैं उनकी कसम को टाल कर अपना धर्म न बिगाड़ूंगा।

लोकनाथ की बातें सुन कर पारसनाथ को ताज्जुब मालूम हुआ मगर वास्तव में ये सब बातें उसकी दिली खुशी को बढ़ाती जाती थीं। वह हाथ में चिट्ठी लिए वहां से उठा और सीधे अपनी चाची के पास चला गया। जो कुछ देखा-सुना था बयान करने के बाद उसने लालसिंह की चिट्ठी पढ़ कर सुनाई। सब कुछ सुन कर जवाब में उसकी चाची ने कहा, "हां, यह तो होना ही था, वे पहिले से ही कहते थे कि अब हम संन्यास ले लेंगे। उन्होंने तो जो कुछ सोचा सो किया, मगर अब दुर्दशा हम लोगों की है।।"

इतना कह कर लालसिंह की स्त्री आंखों से आंसू गिराने लगी। पारसनाथ ने उसे बहुत-कुछ समझा-बुझा कर शान्त किया और फिर लोकनाथ के बारे में पूछा कि वह जाने को तैयार है जब तक यहां रहेगा पानी भी न पीयेगा, उसे क्या कहा जाय?

लालसिंह की स्त्री ने जवाब दिया, मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास है और यह चिट्ठी भी ठीक उनके हाथ की लिखी हुई मौजूद है, फिर मैं उस आदमी से क्या पूछूंगी और उसे किस लिए अटकाऊंगी? तुम जाओ और उसे बिदा करके मेरे पास आओ।

पारसनाथ खुशी-खुशी बाहर गया जहां उसने दो चार बातें करके लोकनाथ को बिदा कर दिया। इसके बाद खुशी-खुशी एक चिट्ठी लिख कर अपने खास नौकर के हाथ किसी दोस्त के पास भेज कर पुनः महल के अन्दर

चला गया।

आज हम फिर हरनन्दन और उनके दोस्त रामसिंह का एक साथ हाथ मे हाथ दिए उसी बाग के अन्दर सैर करते देखते है जिसमे एक दफे पहिले देख चुके हैं। यो तो उन दोनों मे बहुत देर से बातें हो रही है, मगर हमे इस समय की थोडी-सी बातो का लिखना जरूरी जान पडता है।

राम० ईश्वर न करे कोई इन कम्बख्त रडियो के फेर मे पडे ! इनकी चालबाजियो को समझना बडा ही कठिन है। रास्ते मे चलने वाले बडे-बडे धूर्तो और चालाको को मुह के बल गिरते मैं अपनी आखो से देख चुका हू।

हरनन्दन ठीक है, मेरा भी यही कौल है मगर मेरे बारे मे तुम इस तरह बदगुमानियो को दिल म जगह न दो। कोई बुद्धिमान और पढा-लिखा आदमी इन लोगो के हथकडे मे पड कर बरबाद नही हो सकता, चाहे वह अपनी खुशदिली के सबब इन लोगो की सोहबत का शौकीन ही क्यो न हो !

राम० कभी नही, मेरा दिल इस बात को नही मान सकता, यद्यपि यह हो सकता है कि तुम उसकी मुट्ठी म न आओ, क्योकि सोहबत थोडे दिन की और दूसरे ख्याल से है तिस पर मैं डडा लिए हरदम तुम्हारे सर पर मुस्तैद रहता हू, मगर जो आदमी अपना दिल खुश करने की नीयत से इनकी सोहबत मे बैठेगा वह बिना नुकसान उठाये बेदाग नही बच सकता चाहे वह कैसा ही चालाक क्यो न हो। और जिस पर रडी आशिक हो गइ, समझ लो कि वह तो जड-मूल से नाश हो गया। जो रडियो की बातो पर विश्वास करता है उस पर ईश्वर भी विश्वास नही करता। क्या तुम्हे याद नही है कि पहिले पहिल जब हम-तुम दोनो अपने दोस्त नारायण के जिद्द करने पर गौहर के मकान पर गए थे तो दर्वाजे के अन्दर घुसते समय पैर कांपते थे मगर जब ऊपर जाकर उनके सामने दो घण्टे बैठ चुके तब वह बात जाती रही और यह सोचने लगे कि यहा की किस बात को लोग बुरा कहते है ?

हरनन्दन ठीक है और इसम भी कोई सन्देह नहीं कि इस दुनिया मे जितनी बातें ऐब की गिनी जाती है उन सभो मे निपुणता भी इन्हीं की

कृपा का फल होता है झूठ बोलना, बहाना करना, बात बनाना, बेईमानी या दगाबाजी करना, इत्यादि तो इनकी सोहबत का साधारण और मामूली पाठ है मगर साथ ही इसके पुराने विद्वानों का यह भी कौल है कि इनकी सोहबत के बिना आदमी चतुर नहीं हो सकता। यह बात मैं इस ख्याल से नहीं कहता कि इनकी सोहबत मुझे पसन्द है बल्कि एक मामूली तौर पर कहता हूं।

राम० (मुस्करा कर) काजर की कोठरी में कैसहू सयानो जाय, काजर की रेख एक लागि है पै लागि है! और कुछ नहीं तो इन दो ही दिनों की सोहबत का इतना असर तो तुम पर हो ही गया कि इनकी सोहबत कुछ आवश्यक समझने लगे।

हरनन्दन नहीं नहीं, मेरे कहने का यह मतलब नहीं था तुम तो खामखाह की बदगुमानी करते हो।

राम० अच्छा अच्छा दूसरा ही मतलब सही मगर यह तो बताओ कि क्या जिमींदार लोग कम धूर्त और चालाक तथा फरेबी होते हैं?

हरनन्दन (हंस कर) बहुत खासे! अब आप दूसरे रास्ते पर चले, तो क्या आप जिमींदारों की पंक्ति से बाहर हैं?

राम० (हंस कर) खैर इन पचड़ों को जाने दो ऐसी दिल्लगी तो हमारे-तुम्हारे बीच बहुत दिनों तक होती रहेगी, हां यह बताओ कि अब तुम बांदी के यहां कब जाओगे?

हरनन्दन आज तो नहीं मगर कल जरूर जाऊंगा तब तक यकीन है कि सब काम ठीक हुआ रहेगा।

राम० अब केवल दिन और समय ठीक करना ही बाकी है।

हरनन्दन उसका निश्चय तो तुम ही करोगे।

राम० अगर बांदी से सरला का पता लग गया होता तो ज्यादे तकलीफ करने की जरूरत न पड़ती और सहज ही में सब काम हो जाता।

हरनन्दन मैंने बहुत चाहा था कि वह किसी तरह सरला का पता बता दे मगर कम्बख्त ने बताया नहीं और कहने लगी कि मुझे मालूम ही नहीं, मैंने भी ज्यादे जोर देना उचित न जाना।

राम खैर कोई हर्ज नहीं, हमारा यह हाथ भी भरपूर बैठेगा मगर

पारसनाथ को देख कर सब उठ खड़े हुए और हरिहरसिंह ने बड़ी खातिर से पास बैठा कर बातचीत करना शुरू किया।

हरिहर० कहो दोस्त, क्या रंग-ढंग है ?

पारस० बहुत अच्छा है। आनन्द ही आनन्द दिखता है। हमारे मामले का पुराना कोढ़ भी निकल गया और अब हम लोग हर तरह से बे-फिक्र हो कर अपना काम करने लायक हो गए।

हरिहर० (चौंक कर) कहो कहो, जल्दी कहो क्या हुआ ! वह कोढ़ कौन-सा था और कैसे निकल गया ?

दूसरा हां यार, सुनाओ तो सही, यह तो तुम बड़ी खुशखबरी लाए !

पारस० बेशक खुशखबरी की बात है, बल्कि यों कहना चाहिए कि हम लोगों के लिए इससे बढ़ कर खुशखबरी हो ही नहीं सकती।

हरिहर० भला कुछ कहो भी कि यों ही जी ललचाया करोगे !

पारस० सच यों है कि दम लगा लेंगे तभी कुछ कहेंगे।

दूसरा (तैयार चिलम पारसनाथ की तरफ बढ़ा कर) लीजिए दम भी तैयार है, मलते-मलते मोम कर डाला है।

पारस० (दम लगा कर) हम लोगों को अपने कम्बख्त चचा लालसिंह का बड़ा ही डर लगा हुआ था। यह सोचते थे कि कहीं ऐसा न हो कि कम्बख्त दूसरा ही वसीयतनामा लिख कर हमारी सब मेहनत की मिट्टी कर दे, ऐसी हालत में सरला की शादी दूसरे के साथ हो जाने पर भी इच्छानुसार लाभ न होता और इसी सबब से हम लोग उसे मार डालने का विचार भी कर रहे थे।

तीसरा हां हां, तो क्या हुआ, वह मर गया ?

पारस० मरा तो नहीं पर मरे के बराबर हो गया।

हरिहर० सो कैसे ? तुमने तो कहा था कि वह कहीं चला गया।

पारस० हां ठीक है, ऐसा ही हुआ था, मगर आज उसके हाथ की लिखी हुई एक चिट्ठी मुझे मिली जिसे एक आदमी लेकर मेरे पास आया था।

हरिहर० उसमें क्या लिखा था ?

पारस० (जेब से चिट्ठी निकाल कर और हरिहरसिंह को दिखाकर)

तो जो कुछ है पढ़ लो और हमारे इन दोस्तों को भी सुना दो।

हरिहर० (चिट्ठी पढ़ कर) बस बस बस, अब हमारा काम हो गया। जब उसने संन्यास ही ले लिया तब उसे अपनी जायदाद पर किसी तरह का अधिकार न रहा और न वह किसी तरह का वसीयतनामा ही लिख सकता है, ऐसी अवस्था में केवल सरला की शादी ही किसी दूसरे के साथ हो जाने से काम चल जायेगा और किसी को किसी तरह का उज्र न रहेगा। मगर एक बात की कसर जरूर रह जायगी।

पारस० वह क्या?

हरिहर० यही कि शादी हो जाने के बाद सरला अपने मुंह से किसी बड़े बुजुर्ग या प्रतिष्ठित आदमी के सामने कह दे कि 'यह शादी मेरी प्रसन्नता से हुई है।'

पारस० हां यह बात बहुत जरूरी है मगर मैं इसका भी पूरा-पूरा बन्दोबस्त कर चुका हूं।

हरिहर० वह क्या?

पारस० बांदी ने इस काम के लिए एक बुड्ढी खन्नास को ठीक कर दिया है। वह सरला को दूसरे के साथ शादी करने पर राजी कर लेगी।

हरिहर० मगर मुझे विश्वास नहीं होता कि सरला इस बात को मंजूर कर लेगी या किसी के कहने-सुनने में आ जायगी। उस रोज खुद तुम्हीं ने सरला से बातें करके देख लिया है।

पारस० ठीक है, मगर उसके लिए बांदी की मां ने जो चालाकी खेली है वह भी साधारण नहीं है।

हरिहर० सो क्या?

पारस० उसने हरनन्दन से एक चिट्ठी लिखवा ली है कि 'मुझे सरला के साथ शादी करना स्वीकार नहीं है। जो नौजवान और कुंवारी लड़की घर से निकल कर कई दिन तक गायब रहे, उसके साथ शादी करना धर्म-शास्त्र के विरुद्ध है, इत्यादि।' इसके अतिरिक्त हरनन्दन ने उस चिट्ठी में और भी ऐसी कई गन्दी बातें लिखी हैं जिन्हें पढ़ते ही सरला आग हो जायगी और हरनन्दन का मुंह देखना भी पसन्द न करेगी।

हरिहर० अगर हरनन्दन ने ऐसा लिख दिया है तो कहना चाहिए

कि अब हमारे काम मे किसी तरह की अण्डस बाकी न रही।

पारस० ठीक है, मगर दो बातें बादी ने हमारी इच्छा के विरुद्ध की हैं।

हरिहर० वह क्या ?

पारस० एक तो उसन सरला के गहने मुझसे ले लिए और काम हो जाने पर दस हजार रुपये नकद देने का भी एकरारनामा लिखा लिया है।

हरिहर० खैर इसके लिए कोई चिन्ता की बात नही है, जब इतनी दौलत मिलेगी ता दस हजार रुपया कोई बडी बात नही है।

पारस० यही तो मैंने भी सोचा।

हरिहर० और दूसरी बात कौन-सी है ?

पारस० दूसरी बात उसने हरनन्दन की इच्छानुसार की है, क्योकि अगर वह उस बात को कबूल न करती तो हरनन्दन उसको इच्छानुसार चिट्ठी न लिख देता। इसके अतिरिक्त वह हरनन्दन से भी कुछ रुपया ऐंठना चाहती थी। अस्तु लाचार होकर मुझे वह भी कबूल करना ही पडा।

हरिहर० खैर वह बात क्या है सो तो कहो ?

पारस० हरनन्दन ने बादी से कहा था कि मैं सरला से शादी न करूगा, मगर ऐसा जरूर होना चाहिये कि उसकी शादी मेरे दोस्त के साथ हो जिसमे मैं कभी-कभी सरला को देख सकू। अगर ऐसा तुम्हारे किये हो सके तो मैं चिट्ठी लिख देने के लिए तैयार हू और चिट्ठी के अतिरिक्त काम हो जाने पर बहुत-सा रुपया भी दूगा। इसी से बादी को हरनन्दन की बात कबूल करनी पडी। बादी को क्या उस बुढिया खन्नास को रुपये की लालच ने घेर लिया और वह इस बात पर तैयार हो गई कि जिस आदमी के साथ शादी करने के लिए हरनन्दन कहेगे उसी आदमी के साथ शादी करने पर सरला का राजी करूगी।

हरिहर० (रञ्ज से कुछ मुह बना कर) खैर जो चाहो सो करो मगर मैं तो समझता हू कि अगर तुम कुछ और रुपया देने का एकरार बादी से करते तो शायद यह पचडा ही बीच मे न आन पडता।

पारस० नही नही, मेरे दोस्त ! यह काम मेरे अख्तियार के बाहर था, रुपये की लालच से नहीं निकल सकता था। मैंने बहुत कुछ बादी से

कहा और चाहा, मगर उस ने कबूल नहीं किया। सबसे भारी जवाब तो उसका यह था कि 'अगर मैं हरनन्दन की बात कबूल नहीं करती और उस की इच्छानुसार काम कर देने की कसम नहीं खाती तो वह सरला के नाम की चिट्ठी कदापि नहीं लिखेगा और जब तक हरनन्दन की लिखी हुई चिट्ठी सरला को दिखाई न जायगी तब तक सरला भी बातों के फेर में न आवेगी और उसका कहना भी वाजिब ही था इसी से लाचार होकर मुझे भी स्वीकार करना ही पड़ा।

हरिहर० (लम्बी सांस लेकर) खैर किसी तरह तुम्हारा काम हो जाय वही बड़ी बात है। मेरे साथ सरला की शादी हुई तो क्या और न भी हुई तो क्या!

पारस० (हरिहर का पंजा पकड़ कर) नहीं नहीं, मेरे दोस्त तुम्हें इस बात से रञ्ज न होना चाहिये, मैं तुम्हारे फायदे का भी बन्दोबस्त कर चुका हूं। सरला के साथ शादी होने पर जो कुछ तुम्हें फायदा होता सो अब भी हुए बिना न रहेगा।

हरिहर० (कुछ चिढ कर) सो कैसे हो सकता है?

पारस० ऐसे हो सकता है—जिस आदमी के साथ सरला की शादी होगी वह रुपये के बारे में तुम्हारे नाम एक वसीयतनामा लिख देगा।[1]

हरिहर० यह बात तो जरा मुश्किल है। मगर मुझे उन रुपयों की कुछ ऐसी परवाह भी नहीं है। मैं तो इतना ही चाहता हूं कि किसी तरह तुम्हारा यह काम हो जाय।

पारस० मुझे विश्वास है कि ऐसा हो जायगा और अगर न भी हुआ तो मैं इकरार करता हूं कि मुझे जो कुछ मिलेगा उसमें आधा तुम्हारा होगा।

हरिहर० (कुछ खुश होकर) खैर जो होगा देखा जायगा। अब यह बताओ कि बुढ़िया यहां कब आवेगी और सरला के पास कब जायगी?

पारस० वह आती ही होगी।

ये बातें हो ही रही थी कि बाहर से किसी ने दर्वाजा खटखटाया।

1 यह बात पारसनाथ ने अपनी तरफ से झूठ कही।

मामूली परिचय देने के बाद दर्वाजा खोला गया तो हरान्दन के एक दोस्त के साथ सुलतानी दर्वाजे के अन्दर पैर रखती हुई दिखाई पडी।

यह सुलतानी वही औरत है जिसे हम बादी के मकान मे दिखला आये है और लिख आये हैं कि इसने हाल ही मे बादी के यहा नौकरी की है। बादी की तरफ से इसी ने सरला को समझाने का ठीका लिया है और यही इस काम का बीडा उठा कर आई है कि सरला को दूसरे के साथ शादी करने पर राजी कर लूगी। जिस समय वह उन लोगो के सामने पहुची, पारसनाथ बोल उठा, "लीजिए वह आ गई। अब इसे सरला के पास पहुचाना चाहिए।"

सरला कही दूर न थी, इसी मकान की एक अधेरी मगर हवादार कोठडी मे अपनी बदकिस्मती के दिनो को नाजुक उगलियो के पोरो पर गिनती और बडी-बडी उम्मीदो को ठडी सासो के झोको से उडाती हुई जमाना बिता रही थी। साधारण परिचय देने और लेने के बाद सुलतानी उस कोठडी मे पहुचाई गई जिसमे केवल एक चिराग सरला की अवस्था को दिखलाने के लिये जल रहा था।

जब से सरला को यह कोठडी नसीब हुई तब से आज तक उसने किसी औरत की सूरत नही देखी थी। इस समय यकायक सुलतानी पर निगाह पडते ही वह चौंकी और ताज्जुब से उसका मुह देखने लगी। सुलतानी ने सरला के पास पहुच कर धीरे से कहा, "मुझे देख कर यह न समझना कि तुम्हारे लिए कोई दुखदाई खबर या सामान अपने साथ लाई हू, बल्कि मेरा आना तुम्हें दुख के अथाह समुद्र से निकालने के लिए हुआ है। अपने चित्त को शान्त करो और जो कुछ मैं कहती हू उसे ध्यान देकर सुनो।"

पाठक! इस जगह हम यह न लिखेंगे कि सुलतानी ने सरला से क्या-क्या कहा और सरला ने उसकी चलती-फिरती बातो का क्या और किस तौर पर जवाब दिया अथवा उन दोनो में कितनी देर तक हुज्जत होती रही। हा, इतना जरूर कहेगे कि सुलतानी के आने का नतीजा इस समय पारसनाथ वगैरह को खुश करने के लिए अच्छा ही हुआ अर्थात् घण्टे भर के बाद जब सुलतानी मुस्कराती हुई उस कोठडी के बाहर निकली और कोठडी का

दरवाजा पुनः बन्द कर दिया गया तब उसने (सुलतानी ने) पारसनाथ से कहा, ' लीजिए बाबू साहब, मैं आपका काम कर आई। हरनन्दन की लिखी हुई चिट्ठी का नतीजा तो अच्छा होना ही था, मगर मेरी अनूठी बातों ने सरला का दिल मोम कर दिया और जब उसने मेरी जुबानी यह सुना, बाप लालसिंह उसी के गम में सन्यासी हो गया तब तो और भी उसका दिल पिघल कर बह गया और जो कुछ मैंने उसे समझाया और कहा उसे उसने खुशी से कबूल कर लिया। उसने इस बात का भी मुझसे वादा किया है कि ब्याह हो जाने पर मैं अपने हाथ अपने बाप को इस मजमून की चिट्ठी लिख दूंगी कि मैंने अपनी खुशी और रजामन्दी से शिवनन्दन के साथ शादी कर ली। मगर मुझसे उसने इस बात की शर्त करा ली है कि शादी होने के समय मैं उसके साथ रहूंगी।"

सुलतानी की बातें सुनकर ये लोग बहुत प्रसन्न हुए और पारसनाथ ने खुशी के मारे उछलते हुए अपने कलेजे को रोक कर सुलतानी से कहा, "क्या हर्ज है अगर एक रोज दो घण्टे के लिए तुम और भी तकलीफ करोगी। तुम्हारे रहने से सरला को ढाढस बनी रहेगी और वह अपने कौल से फिरने न पावेगी। तुम यह न समझो मैं तुम्हें यो ही परेशान करना चाहता हू, बल्कि विश्वास रखो कि शादी हो जाने पर मैं तुम्हें अच्छी तरह खुश करके विदा करूगा।'

सुलतानी ने खुश होकर सलाम किया और जिसके साथ आई थी उसी के साथ मकान के बाहर होकर अपने घर का रास्ता लिया।

हमारे पाठक यह जानना चाहते होंगे कि यह शिवनन्दन कौन है जिस के साथ शादी करने के लिए सरला तैयार हो गई। इसके जवाब मे हम इस समय इतना ही कहना काफी समझते हैं कि बांदी ने शिवनन्दन के बारे मे पारसनाथ से इतना ही कहा था कि शिवनन्दन एक साधारण और बिना बाप-मा का गरीब लड़का है। उसकी और हरनन्दन की उम्र एक ही है, बातचीत और चाल-ढाल में भी विशेष फर्क नही है। हरनन्दन और शिव-नन्दन एक साथ ही पाठशाला मे पढते थे, उसी समय से हरनन्दन के दिल मे उसका कुछ खयाल है और उसी के साथ सरला की शादी हरनन्दन पसंद करता है।

शिवनन्दन को पारसनाथ भी बहुत दिनो स जानता था और उस विश्वास था कि यह बिलकुल साधारण और सीधे मिजाज का लडका है। मुलतानी को बिदा करन के बाद पारसनाथ और हरिहरसिंह शिवनन्दन के मकान पर गये और उसकी शादी के बार मे बहुत देर तक चलती फिरती बात करते रह। हरिहरसिंह वहा अपनी चालाकी से बाज न आया, शिवनन्दन को शादी के बन्दोबस्त से खुश देख कर उसने उससे इस बात का इकरार लिखा लिया कि शादी होने के बाद सरला की जो जायदाद उसे मिलेगी उसम से आधा हरिहरसिंह को वह बिला उज्र दे देगा।

शादी की बातचीत खतम हुई। दिन और समय ठीक हो गया। शादी कराने वाले पण्डित जी भी स्थिर कर लिए गये और यह भी तै पा गया कि बिना धूमधाम के मामूली रस्म और रिवाज के साथ रात्रि के समय शादी हो जायगी। इन बाता मे शिवनन्दन ने अपने खानदान की रस्मो मे से दो बाता का होना बहुत जरूरी बयान किया और उसकी वे दोनो बातें भी खुशी से मजूर कर ली गई। एक तो चेहरे पर रोली का जमाना और दूसरे बादले का बन्ददार सेहरा बाध कर घर से बाहर निकलना। साथ ही इसक यह बात भी तै पा गई कि शादी के समय पर केवल एक आदमी को साथ लिए हुए शिवनन्दन उस मकान में पहुचाए जाएगे जिसमे सरला है अथवा जिसमे शादी का बन्दोबस्त होगा।

बातचीत खतम होने पर पारसनाथ और हरिहरसिंह घर चल गए और उसके दो घण्टे बाद शिवनन्दन न भी रामसिंह के घर की तरफ प्रस्थान किया।

अब हम सरला और शिवनन्दन क शादी वाल दिन का हाल बयान करत हैं। वह दिन पारसनाथ और हरिहरसिंह के लिए बडी खुशी का दिन था। हरनन्दन की इच्छानुसार बादी ने पूरा पूरा बन्दोबस्त कर दिया था और इसी बीच मे हरनन्दन और पारसनाथ को कई दफे बादी के यहा जाना पडा और इसका नतीजा जाहिर मे दानो ही के लिए अच्छा निकला। जिस दिन शादी होने वाली थी उस दिन पारसनाथ ने शादी का कुल सामान उसी मकान म ठीक किया जिसमे सरला कैद थी। आदमियो म से केवल

पारसनाथ, हरिहरसिंह, सुलतानी, सरला और शिवनन्दन के पुरोहित उस मकान में दिखाई दे रहे थे, इनके अतिरिक्त पारसनाथ का भाई धरणीधर भी इस काम में शरीक था जो आधीरात के समय शिवनन्दन को लाने के लिए उसके मकान पर गया हुआ था।

रात आधी से ज्यादा जा चुकी थी, मकान के अन्दर चौक में शादी का सब सामान ठीक हो चुका था, कसर इतनी ही थी कि शिवनन्दन आवें और दो-चार रस्म पूरी करके शादी कर दी जाय। थोड़ी ही देर में वह कसर भी जाती रही अर्थात् दरवाजे का कुण्डा खटखटाया गया और जब मामूली परिचय लेने के बाद पारसनाथ ने उसे खोला तो शिवनन्दनसिंह को साथ लिए हुए धरणीधर ने उस मकान के अन्दर पैर रक्खा। इस समय शिवनन्दन के साथ केवल एक आदमी था जिसे पारसनाथ वगैरह पहिचानते न थे। शिवनन्दन पूरे तौर से दूल्हा बने हुए थे। वह मकान के अन्दर जिस समय दाखिल हुए उस समय मोटे और स्याह कपड़े से अपने तमाम बदन को छिपाए हुए थे पर जिस समय वह स्याह कपड़ा उतार कर उन्होंने दूर रख दिया उस समय लोगों ने देखा कि उनके ठाठ में किसी तरह की कमी नहीं है, जबा कबा और जामा जोड़ा से पूरी तरह लैस हैं। सिर पर बहुत बड़ी मन्दील और बादले का बना सेहरा और उसके ऊपर खुशबूदार फूलों के सेहरे ने उनके चेहरे को पूरी तरह से ढक रक्खा था।

खैर शिवनन्दनसिंह नाम मात्र के मड़वे में बठाये गए और पुरोहितजी पूजा की कारवाई शुरू की। यद्यपि पारसनाथ वगैरह को जल्दी थी और चाहते थे कि दो पल ही में शादी हो इया के छुट्टी हो जाये, मगर पुरोहितजी को यह बात मंजूर न थी। वे चाहते थे कि पद्धति और विधि में किसी प्रकार की कमी न होने पावे, अस्तु लाचार होकर पारसनाथ वगैरह को भी उनकी इच्छानुसार चलना पड़ा।

पारसनाथ ने कन्यादान किया और गन्ध तौर पर यह शादी राजी खुशी के साथ तै पा गई। इसी समय में पारसनाथ ने कलम दवात और कागज सरला के सामने रख दिया और कहा "अब वादे के मुताबिक तू लिख दे कि मैंने अपनी प्रसन्नता से शिवनन्दन के साथ अपना विवाह कर लिया इसमें न तो किसी का दोष है और न किसी ने मुझ पर किसी तरह का

दबाव डाला है।'

सरला ने इस बात को मंजूर किया और पुर्जा लिख कर पारसनाथ के हाथ में दे दिया। जब पारसनाथ ने उसे पढ़ा तो उसमें यह लिखा हुआ पाया—

मुझे अपने पिता की आज्ञानुसार हरनन्दनसिंह के अतिरिक्त किसी दूसरे के साथ विवाह करना स्वीकार न था। यद्यपि मेरे भाइयों ने इसके विपरीत काम करने की इच्छा से मुझे कई प्रकार के दुःख दिए और बड़े-बड़े खेल खेले, मगर परमात्मा ने मेरी इज्जत बचा ली और अन्त में मेरी शादी हरनन्दनसिंह ही के साथ हो गई।''

पुर्जा पढ़ कर पारसनाथ को ताज्जुब मालूम हुआ और वह नाथ भरी आंखों से सरला की तरफ देखने लगा, पर उसी समय यकायक दर्वाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज आई। जब धरणीधर ने जाकर पूछा कि 'कौन है?', तो जवाब में बाहर से किसी ने वही पुराना परिचय अर्थात् 'गूलर का फूल' कहा। दर्वाजा खोल दिया गया और धड़धड़ाते हुए कई आदमी मकान के अन्दर दाखिल हो गए।

जो लोग इस तरह मकान के अन्दर आए वे गिनती में चालीस से कम न होंगे। उनके साथ बहुत सी मशालें थीं और कई आदमी हाथ में नंगी तलवारें लिए हुए मारने काटने के लिए भी तैयार दिखाई दे रहे थे। उन लोगों ने आते ही पारसनाथ, धरणीधर और हरिहरसिंह की मुश्कें बाँध लीं और एक आदमी ने आगे बढ़कर पारसनाथ से कहा, "कहो मेरे चिरञ्जीव मिजाज कैसा है! क्या तुम इस समय भी अपने चाचा को संन्यासी के भेष में देख रहे हो!'

मशालों की रोशनी से इस समय दिन के समान उजाला हो रहा था। पारसनाथ ने अपने चाचा लालसिंह को सामने खड़ा देख भय और लज्जा से मुंह फेर लिया और उसी समय उसकी निगाह शिवनन्दन रामसिंह, कर्नलसिंह और कल्याणसिंह पर पड़ी जिन्हें देखते ही वह एकदम घबड़ा गया।

अब हम थोड़ी सी रहस्य की बातों का लिखना उचित समझते हैं। गुल नाम असल में बांदी की लौंडी न थी। उसे रामसिंह ने बांदी के यहां रह कर

भेदा का पता लगाने के लिए मुकरर किया था और रामसिह की इच्छानुसार सुलतानी ने बडी खूबी के साथ अपना काम पूरा किया। वह हरनन्दन के हाथ की लिखी हुई केवल उसी चिट्ठी को लेकर सरला के पास नही गई थी जो बादी ने लिखवाई थी बल्कि और भी एक चिट्ठी लालसिंह के हाथ की लेकर गई थी जिसमे लालसिह न सच्चा सच्चा हाल लिख कर सरला को ढाढस दी थी और यह भी लिखा था कि तुम्हारा बाप वास्तव म सन्यासी नही हुआ बल्कि समयानुसार काम करने के लिए छिपा हुआ है, अस्तु इस समय जो कुछ सुलतानी कहे उसके अनुसार काम करना तुम्हारे लिए अच्छा होगा।

यही सबब था कि सरला न सुलतानी की बात स्वीकार कर ली और जो कुछ उसने मन्त्र पढाया उसी के अनुसार काम किया। शिवनन्दनसिंह रामसिह के आधीन था और जो कुछ उसन किया वह सब रामसिह की इच्छानुसार था। दूल्हा बन कर दुष्टो के घर जाने के समय शिवनन्दन अलग हो गया और दूलहा का काम हरनन्दन ने पूरा किया। सेहरा इत्यादि बधे रहने के सबब किसी तरह का गुमान न हुआ और तब तक राजा साहब की भी मदद आन पहुची जिसका बन्दोबस्त पहिले ही से सूरजसिह ने कर रक्खा था। यद्यपि यह सब बात उपन्यास मे गुप्त थी परन्तु ध्यान देकर पढ़ने वालो को ऊपर के बयानो से अवश्य झलक गया होगा तथापि जिन्होने न समझा हो उनके लिए सक्षेप मे लिख देना हमने उचित जाना।

पारसनाथ, धरणीधर और हरिहरसिंह इत्यादि जेल मे पहुचाए गए और हरनन्दनसिंह, सरला तथा अपने मित्रो को लिए लालसिह अपन घर पहुचे। उस समय उनके घर म जिस तरह की खुशी हुई उसका बयान करना व्यर्थ कागज रगना है मगर बाजार म हर एक की जुबान से यही निकलता था कि अपनी रण्डी बांदी की बदौलत हरनन्दनसिह ने सरला का पता लगा लिया।

)